आजादी और खुद्दारी के दीवाने सरहदी पठानों के
कबायली जीवन की एक ऐतिहासिक गाथा

मेजर बाला दुबे का नया उपन्यास :

आवारा सूरज

आवारा सूरज

बाला दुबे



आवारा सूरज

सन् अठारह सौ सत्तानवे !

उत्तर-पश्चिम सरहद पर जज्बातों की एक भयानक आँधी उठी। पठानों के दिल दूने हो गए थे। जिधर देखो उधर ही बन्दूक की नलियाँ दिखाई देती। सबके दिल में एक ही तूफान उठा था। इन दगाबाज फिरंगियों को पथरीली ज़मीन में दफन कर दो। वज़ीरस्तान, स्वात, तीराह और काले पहाड़ के कबीलों के सब सरदार दरगई और 'समाना सुख' की ऊँची दरारों को पार करके चगरु कोतल के पास वाले गाँव में इकट्ठे हुए थे। महमंद कबीले के सरदार हिलाल खाँ ने मेहँदी से रँगी दाढ़ी पर हाथ फेर कर कहा, 'वतन की पुकार आप सबने सुनी होगी। वतन कुरबानी माँग रहा है, बिरादरो! कबीलों के आपसी इत्तफाक दफन करो। पठान एक हैं, बस यह ही दिल में बसा लो। इन फिरंगी फरेबियों का गुर्राना अब और नहीं सहा जाता।'

सभी कबीलों के सरदार मौजूद थे। युसुफज़ई, उतमानज़ई, रज्ज़ार, हसनज़ई, मीरानज़ई, कोहाट दर्रे के अफ्रीदी, आका खेल के अफ्रीदी, जका खेल के अफ्रीदी, महमंद, शीरानी, महमूद, रबिया खेल के उरकज़ई, बिज़ोटी उरकज़ई, काबुल खेल के वज़ीर, दरवेश खेल के वज़ीर, मित्तानी, दुर्रानी और किदरज़ई कज़लबाश। काले पहाड़ के छोटे-मोटे कबीले भी एक झंडे के नीचे आए थे।

विद्रोह का तूफान धीरे-धीरे रंग बदल रहा था। पीले रंग का आसमान काला और खूनी होने लगा था। विद्रोह अब जिहाद की शक्ल अख्तियार

करने लगा था। सब सरदारों ने अपनी-अपनी बन्दूकों पर हाथ रखकर क़सम खाई थी। मुल्ला सैयद अकबर ने आवाज उठाकर कहा, 'हम अपने बुजुर्गवार जन्नतनशीन अब्दुर्रहमान क़ैस की औलाद हैं। हम उनके तीनों बेटे सरबान, गुरगुस्त और बातान के गजरे की पत्तियां हैं। सब सरदार मिलकर क़सम खाओ कि घरेलू झगड़ों को भूलकर हम अब फिरंगियों को नहीं छोड़ेंगे।'

और वह भी एक खौफ़नाक समां था जब सब सरदारों की आंखों में लाल ख़ून उतर आया था। उन्होंने सामूहिक क़सम खाई थी।

महमंद के बड़े सरदार नजमुद्दीन, जिन्हें लोग आधा मुल्ला कहते थे, बोले, 'जून के बाद हमले शुरू होंगे। बोलो, मंजूर है?'

सब एक साथ बोले 'मंजूर है'। रुख़सत के वक्त सबको शरबत पिलाया गया था। अपने-अपने दिलों में भयानक तूफ़ान कैद किए सब चल दिए।

पठान तंग आ चुके थे। हाल ही में सर मोर्टिमर ड्यूरैंड (जो कि अंग्रेजी सरकार के विदेश सचिव थे) ने बाउंडरी खींची—ड्यूरैंड लाइन। समाना की पहाड़ियां, दीर और बाना पर अंग्रेजी सेना ने कब्जा कर लिया और अपनी चौकियां बना डाली थीं। अब उन्होंने घाव और भी गहरा कर डाला। कोहाट के नमक पर टैक्स लगा दिया था। पठान तिलमिला उठे। हरेक के दिल में गूंजने लगा 'सौ बार गुलामी से बग़ावत बेहतर'।

चार जून को मैजर गांव में पठानों ने एक हिन्दू को सरेआम क़त्ल कर दिया था। जब इसकी रिपोर्ट पोलिटिकल अफसर को मिली तो वह अंग्रेजी दस्ते लेकर मैजर आया था। पर जून में सब पठान एक हो चुके थे। उन्होंने अंग्रेजी दस्ते पर हमला बोल दिया। पोलिटिकल अफसर अपने कुछ सिपाहियों के साथ भाग कर दत्ता खेल आ गया पर अंग्रेजी दस्ते का खात्मा हो चुका था।

इसके बाद चारों ओर जिहाद की बिस्मिल्लाह हो गई। स्वात में सैदुल्ला खां ने लंदाकई गांव से कुछ नौजवानों को साथ लिया। सैदुल्ला खां को सब मुल्ला मस्तान कहते थे। देखते-ही-देखते, मुल्ला मस्तान के नेतृत्व में बारह हजार पठानों ने मलाकंद और आठ हजार पठानों ने चकदर्रे पर हमला बोल दिया। लेकिन अंग्रेज गाफ़िल नहीं थे। ऊंचाई पर क़िलेबन्दी

किए बैठे थे। मुल्ला मस्तान के तीन हज़ार पठान मारे गए पर उनकी आँधी ने अंग्रेजों को हिलाकर रख दिया था।

उधर नज्मुद्दीन खाँ आद्धा मुल्ला ने महमंद कबीले के पाँच हज़ार छँटे हुए जवानों को लेकर पेशावर की घाटी में हमला बोल दिया। हिन्दुओं के गाँव शकरगढ और शबकादर की चौकी पर कब्जा कर लिया। पेशावर से एक भारी अंग्रेजी सेना तुरन्त आई जिसने बड़ी मुश्किल से महमंदों को वहाँ से हटाया।

सबसे जबरदस्त जिहाद मुल्ला सैयद अकबर के नेतृत्व में हुआ। मुल्ला थाक्रा खेल के अफ्रीदी थे। सब अफ्रीदी कबीले और उरकजई कबीले तीराह में घुसे। करीब पंद्रह हज़ार पठान थे। अंग्रेजों की 'खैबर राइफल्स' पल्टन खैबर दर्रे की चौकियाँ सँभाले हुई थी।

अफ्रीदियों और उरकजई कबीलों ने समाना पर धावा बोला। उन्होंने खैबर की सब चौकियाँ छीन लीं। शिनवारी पुलिस चौकी जो मीरनजई के इलाके में थी, हथिया ली और हंगू की तरफ दबाव बढ़ाने लगे। फोर्ट लोकहार्ट और फोर्ट कवागनरी भी हिला दिए।

पठानों की भयकर आँधी ने अंग्रेजों को हिला तो डाला पर उखाड़ नहीं पाई। अंग्रेजों का बहुत नुकसान हुआ, बेइज्ज़ती भी हुई पर वे तुरत ही सँभल गए। पठानों के इस जबरदस्त हमले का जवाब शुरू हुआ। सात हज़ार के दो ब्रिगेड दत्ता खेल पहुँच गए। मद्दा खेल के पठानों को घेर लिया। उनके सतरह 'रिंग लीडर' गिरफ्तार किए, जुर्माना किया और मैंग्रर गाँव पर भी भारी जुर्माना किया।

स्वात में अंग्रेजी फौज बाजौर, चामला और उतमान खेल के इलाकों में घुस पड़ी। भारी जुर्माने लिए। बनेर में घुसकर खुद्दू खेल और गदूर के युसुफजई कबीलों से जुर्माने वसूल किए। मुल्ला मस्तान को देश निकाला दिया और दीर और स्वात से भगा दिया। और यह काम 'मलाकंद फ़ील्ड फोर्स' ने किया जिसमें तीन ब्रिगेड और डिवीजन का अंश मिला था और दस हज़ार गोरे चढ़ आए थे।

महमंद कबीले पर दो ब्रिगेड का हमला हुआ। इनायत किला साफ़ कर दिया गया और आद्धा मुल्ला अफगानिस्तान भाग गया। चुराए हुए

हथियार और जुर्माना वसूल किया गया। सबसे बड़ा अंग्रेजी हमला तीराह पर हुआ। मीरानज़ई के रास्ते शिनवारी के ऊपर होते हुए जनरल लॉकहार्ट दो डिवीजन लेकर गया। दरगई पर जबरदस्त लड़ाई हुई। फ़ौजें मैदान और बाड़ा में घुस गईं। पठान बहादुरी से लड़े। उरकज़ई ने हथियार डाल दिए पर अफ़्रीदी सीना ताने खड़े रहे। दिसम्बर सन् अठारह सौ निन्यानवे में ही अंग्रेज फिर से ख़ैबर की चौकियाँ ले पाए। इस मुहासरे में जनरल लॉकहार्ट तीस हज़ार आदमी लेकर चढ़े थे। फिर वह उदास माहौल का दिन भी आया जब मलिकदीन खेल, अक़्क़ा खेल, कमराई खेल और कई सरदार, सर विलियम लॉकहार्ट और सर रिचर्ड उडनी के आगे सर झुकाए आए। उन्होंने अंग्रेजों के आगे आठ सौ लूटी हुई राइफल, पचास हज़ार रुपये और चोरी किए सामान का ढेर लगा दिया।

वज़ीरस्तान में महसूदों ने सर उठाया पर उन्हें दबा दिया गया।

जिस वेग से पठानों के जज्बात की आँधी उठी थी उससे लोगों को उम्मीद होने लगी थी कि हाथ की हथकड़ी टूट जाएगी। पर अफ़सोस, पठान बहादुर देशभक्त तो थे पर युद्ध-कुशल योद्धा नहीं थे। तूफान के बाद एक अजीब शान्ति सरहद पर छा गई। मौत से भी ज्यादा ख़ामोश माहौल हो गया था। दिलों में आग अब केवल दबी हुई चिनगारी मात्र रह गई थी। पठान हार गए थे पर मन से हार नहीं गए थे। विद्रोह की भावना नाउम्मीदी की राख से दब गई थी पर गर्मी अभी तक थी।

इसके बाद सब कबीले अपने-अपने इलाकों में चल दिए। ठंडी साँस लेकर वे अपनी पुरानी बन्दूकों को देखते और कभी-कभार एक-दो आँसू भी टपक जाते। उन्हें अहसास हो गया था कि छुपपुट की लड़ाई ही उनका शेवा है। जमकर मोर्चाबन्दी और मुहासरे उनके बस की बात नहीं है। वे लड़ाई की आंख मिचौली भली-भाँति खेल सकते थे, लड़ाई के मैदान में जम कर शतरंज खेलना नहीं जानते थे।

अब? अब क्या चुप्पी साध लें? नहीं! अगर चुप्पी साध लेंगे तो अंग्रेज समझेंगे कि पठान क़ौम का पानी उतर गया और फिर वे उनके गाँवों-क़स्बों में घुसपैठ करेंगे। इसलिए फुटकर लूटमार करना ज़रूरी है। अंग्रेजों को चैन नहीं लेने देना है वर्ना उनके कबीलों का चैन सदैव के लिए छिन जाएगा।

संघर्ष जारी रहेगा। सब कबीलों ने यही फैसला किया था। हाँ, यह बात दीगर थी कि कबीलों की पुरानी दुश्मनी अपनी जगह पर कायम थी। दुश्मनी पठान के लिए अपने बुजुर्गों की याद, एक मुकद्दस अमानत है। वह भला कैसे भूली जा सकती है।

हाल ही की इस आंधी के बाद नई दुश्मनी भी पनपी। दरगई की लड़ाई के बाद उरकज़ई कबीलों ने हथियार डाल दिए थे पर यूसुफज़ई हिम्मत बांधे अंग्रेजों के छक्के छुड़ाते रहे। उरकज़ई के इलाके की तरफ युसुफज़ई के सरदार ने थूक कर कहा 'जनाने कहीं के!'

उरकज़ई का सरदार तिलमिला उठा। उसने चीखकर कहा, 'बहादुर और अक्लमन्दी जुदा-जुदा चीज है, गुलाब खां। तुम ऊँचाई पर बैठे थे। हम नीचे दर्रे के पास थे। और फिर कहां दो हज़ार उरकज़ई और वहाँ तीस हज़ार अंग्रेज। अगर हथियार नहीं डालते तो कबीले में सिवाय बेवाओं के कोई नहीं बचता।' पर युसुफज़ई के सरदार गुलाब खां ने फिर से ज़मीन पर थूका।

इस बार सरदार तुर्रे खां ने सरदार गुलाब खां के पाँव के पास गोली दाग दी। ठीक उस जगह जहाँ थूका गया था। उरकज़ई और युसुफज़ई कबीलों में दुश्मनी का अंकुर उसी दिन फूट पडा। और अब वे दो दुश्मनों को मानते हैं। युसुफज़ई कबीलों के दुश्मन अंग्रेज और उरकज़ई हैं। उरकज़ई के दुश्मन अंग्रेज और युसुफज़ई हैं।

काबुल नदी का पानी कितना ठंडा था। किसी हसीना की कमर की तरह ख़म खाकर नदी जगह-जगह पर मोड़ खा रही थी। करीब ही लोई डक्का का कस्बा था। खान गुलाब खां अपने यूसुफज़ई कबीले के साथ यहीं रहता था। गुलाब खाँ पत्थर दिल सरदार था। उसके चेहरे पर मुस्कराहट बहुत कम लोगों ने देखी थी। पर संगदिल गुलाब खां भी अपनी बेटी महजबी के

रुवरू मोम का वन जाता था। महज़वीं कुदरत की इनायत थी। दूधिया रंग और तराशा हुआ वदन। उसके चेहरे पर शरारत विखरी हुई थी। गज़ाल जैसी आँखें और वेरावहार याकूत जैसे लाल ओंठ। आसपास के कवीलों में जवान लड़के अक्सर आह भरके कहते 'लोई डक्का में दो चाँद उगते हैं, एक ऊपर आस्मान में और दूसरा सरदार गुलाव ख़ाँ के आँगन में।'

महमंद कवीले के सरदार हिलाल खाँ तोर खामा में रहते थे जो खैवर दर्रे के इस तरफ़ था। हिलाल खाँ के वेटे नूर खाँ ने सवाह की हाट में महजवीं को देखा था। और उसी दिन से वह महज़वीं के ख्वाव देखने लगा। नूर खाँ लंवा तड़ंगा मर्द था पर चेहरे पर एक अज़ीव वहशियाना साया छाया हुआ था। छुटपुट लूटमार और खून-ख़रावा करने लगा था। अव वह अक्सर लोई डक्का की तरफ़ भी घोड़ा मोड़ देता था। महजवीं की सूरत देखने को वेचैन रहने लगा था।

सवाह के पास वाले गाँव वैतुल में उरकज़ई के कवीले के सरदार तुर्रे खाँ रहते थे। उनका वड़ा वेटा हवीव खाँ जाँवाज़ वाँका जवान था। उसके शरीर में अपार वल था। कसरत, घुड़सवारी और हथियार—वस ये ही उसके शौक़ थे। चेहरे पर मासूमियत और हँसती आँखें उसके हुस्न को दोवाला कर देती थीं। तुर्रे खाँ ने वेटे को वड़े जतन से पाला था। जव भी वह दस्तरख्वान पर साथ वैठते तो कहते, 'वेटे, वहादुर को सव कुछ जायज़ है वशर्ते कि वह इजारवन्द का सच्चा हो। किरदार ही इन्सान का पानी है। वग़ैर किरदार के आदमी वग़ैर दमक के हीरे के वरावर है। वादा करो, औरत की इज्ज़त करोगे। भले ही वह दुश्मन के यहाँ की औरत ही क्यों न हो।'

हवीव खाँ की ज़िन्दगी की नींव उसके वाप तुर्रे खाँ ने डाली थी। हवीव खाँ को प्यार से सव हवीवा ही पुकारते। हवीवा कवीले की जान था।

उस दिन अपनी तलवार लिए वह घोड़ा मोड़कर कावुल नदी की ओर जाने लगा था। तुर्रे खाँ ने उसे रोककर कहा, 'वेटे, लोई डक्का में सरदार गुलाव खाँ अपने कवीले में रहता है। हमसे उसकी चश्मक है। उससे होशियार रहना।' हवीव खाँ ने सर झुका कर सुना और फिर घोड़ा हवा से वातें करने लगा।

सब्राह के पास वह हवा की गुनकी का मज़ा लेता जा रहा था कि सहसा उसे किसी लड़की की चीख़ सुनाई दी। हबीब ठिठका और घोड़ा मोड़कर उसी तरफ़ चल दिया। अनार के पेड़ों के झुरमुट में उसने एक जवान को घायल होकर ज़मीन पर लोटता पाया। उसके पेट से ख़ून बह रहा था। फिर हबीबा की नज़र एक बेरहम चेहरे पर पड़ी जो किसी फूल जैसी लड़की को ज़बरन घोड़े पर बैठाने की कोशिश कर रहा था।

हबीबा ने घोड़े को एड़ दी और पास आकर ललकारा, 'ठहरो!'

बेरहम चेहरे वाला जवान पठान लोहे के आदमी जैसा लगता था। हाँ, वह नूर ख़ाँ ही तो था। महमद कबीले के सरदार हिलाल ख़ाँ का बेटा। उसने हबीबा की ओर ख़ूनी आँखों से देखा और बोला, 'मेरे रास्ते से हट जा वर्ना तेरी माँ कि गोद सूनी हो जाएगी।'

हबीब ने हँसकर कहा, 'ये तुम्हारा मुग़ालता है ख़ान। और तुम पठान होकर एक लड़की पर अपनी ताक़त आज़मा रहे हो। किस ख़ुशनसीब कबीले के गरूर हो, ख़ान?' नूर ख़ाँ तिलमिला उठा। वह झटके से उतरा और तलवार म्यान से खींचता हुआ बोला, 'अपने कबीले का नाम मैं अपनी तलवार की नोक से तेरे सीने पर लिखूँगा।'

नूर ख़ाँ चीते जैसी फुर्ती से हबीबा पर टूट पड़ा। महजबी की कुरती फट गई थी। वह डर की वजह से हाँफ रही थी। उसने नूर ख़ाँ की तलवार का जौहर अभी-अभी अपने भाई गुलफ़ाम पर देखा था। गुलफ़ाम को दो मिनट में नूर ख़ाँ ने नाकाम कर दिया था। भाई को लाचार करके ही नूर ख़ाँ महजबी को उठाए ले जा रहा था।

हबीबा ने नूर ख़ाँ के वार को नाकारा कर दिया। बिजली की तरह वे एक दूसरे पर टूटते रहे। सबसे पहले नूर ख़ाँ की तलवार ने ही हबीब की बाईं बाँह पर ख़ून निकाला था। ख़ून को देखकर हबीबा विकराल भैरव जैसा बन गया। जैसे माँस पर चील झपटती है वैसे ही वह नूर ख़ाँ पर टूट पड़ा।

पहले हाथ में नूर ख़ाँ का कंधा ख़ून से तर हो गया। वह उस पर हावी होने लगा और दूसरे हाथ से उसने नूर ख़ाँ का कुल्ला और पगड़ी काट गिराई। एक भरपूर हाथ उसने नूर ख़ाँ के हाथ में पकड़ी तलवार पर मारा

था। नूर खाँ के हाथ से तलवार झनझना कर दस गज़ दूर गिर पड़ी। निहत्था नूर खाँ भय से हाँफने लगा।

'मैं निहत्थे पर वार नहीं करता, ख़ान !' हवीवा वोला, 'इस लड़की के आगे घुटने टेक कर माफ़ी माँगो। यक़ीन रखो, मैं अपने कवीले का नाम तुम्हारी छाती पर अपनी तलवार की नोंक से नहीं लिखूँगा।'

नूर खाँ भयभीत उसे देखता रहा।

हवीवा हँसा और फिर अपनी तलवार ज़मीन पर फेंकता हुआ वोला, 'लो, अव तो ख़ुश हो। इस लड़की से माफ़ी माँगो।'

तलवार गिरते ही नूर खाँ हवीवा के ऊपर झपटा। पर हवीवा भी लोहे का वना आदमी था। उसने नूर खाँ को लपेट कर कलाजंग दाँव मारा। नूर खाँ वोरी की तरह लद्द से जा गिरा। उसे आधा मिनट तो उठने में लगा।

'वक्त खराव मत करो, ख़ान,' हवीवा वोला, 'वर्ना मुझे तैश आ जाएगा।'

नूर खाँ आँखें फाड़कर हवावा को देखता रहा। फिर वह भीगी विल्ली जैसा आया और महजवीं के आगे घुटने टेककर माफ़ी माँगी।

'हाँ अव ठीक है,' हवीवा वोला, 'जाओ अव दफ़ा हो जाओ।'

नूर खाँ आँखों से ख़ून वरसाता हुआ घोड़े पर वैठा और चल पड़ा।

महजवी को हवीवा जिब्रील फरिश्ता जैसा लगा। उसकी आवरु की ढाल वन वैठा था हवीवा।

'एक जवान इधर घायल पड़ा है,' हवीवा वोला।

'वह मेरे भाई हैं,' महजवीं वोली।

'चलो देर मत करो,' हवीवा वोला और महजवीं को घोड़े पर वैठा कर उधर चल पड़ा जहाँ महजवीं का भाई गुलफ़ाम घायल पड़ा था। महजवीं भाई की हालत देखकर रो पड़ी।

हवीवा ने उतर कर उसकी नव्ज़ देखी और फिर वोला, 'घवराने की कोई ज़रूरत नहीं है। चलो, इसे लेकर चल दिया जाए। तुम घोड़ा चला लेती हो?'

महजवीं ने वड़ी-वड़ी वादामी आँखों को झपक कर कहा, 'हाँ।'

'तो तुम अपने भाई के घोड़े पर चलो। मैं तुम्हारे भाई को अपने घोड़े पर सँभाल कर चलता हूँ।'

उसने गुलफाम को अपनी बोतल से पानी पिलाया और फिर खून से लथपथ गुलफ़ाम को सावधानी से अपने घोड़े पर बिठाया।

आगे-आगे महजबी का घोड़ा चल रहा था। जब लोई डक्का की सरहद आई तब हबीबा ने पूछा—

'तुम्हारा कबीला किधर है बानो?'

'इधर है लोई डक्का में,' महजबी बोली।

हबीबा ठिठका। लोई डक्का में तो उसके दुश्मन रहते हैं, यही तो अब्बा ने कहा था। पर न जाने क्या सोच कर वह पीछे-पीछे चलता रहा।

लोई डक्का में घुसने ही सबने महजबी और पीछे के घोड़े पर घायल गुलफाम को देखा। कानाफूसी होने लगी।

जब महजबी घर पर पहुँची उस वक्त उसके अब्बा गुलाम खाँ तीन-चार लोगों के पास बैठे हुक्का पी रहे थे। बेटी और घायल बेटे को देखकर सन्नाटे में आ गए। इससे पहले कि वह मुँह खोलें, महजबी बोली—

'ये अपने मेहमान हैं, अब्बा। इन्होंने मुझे एक दरिन्दे से बचाया और गुलफाम भाई को भी बचाकर हमारी देहलीज पर आए हैं।'

गुलाब खाँ और उसके साथियों ने गुलफाम को उतारा। सब उसके बदन से तर कपड़े उतारने लगे। आनन-फ़ानन ही हकीम सैयद आले इमाम भी आ गए। घाव गहरा नहीं था फिर भी घाव तो घाव ही होता है।

गुलाब खाँ ने हबीबा को गले लगाया और कहा, 'मैं तुम्हारा अहसानमद हूँ बेटे। क्या नाम है तुम्हारा?'

हबीबा हँस कर बोला, 'पठान का लड़का हूँ, आक़ा। आप अहसान की बजाय मुझे दुआ दीजिए।'

गुलाब खाँ जवाब सुनकर खुश हुआ।

महजबी अदर से अनार के शरबत का गिलास लेकर आई थी। उसने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से हबीबा को अब देखा। देखकर न जाने कौन से तार उसके दिल में झनझना उठे। उसे नूर खाँ को हराने वाला मंज़र याद हो आया। हबीबा ने भी महजबी की एक झलक अब ठीक तरह से देखी।

था। नूर खाँ के हाथ से तलवार झनझना कर दस गज़ दूर गिर पड़ी। निहत्था नूर खाँ भय से हाँफने लगा।

'मैं निहत्थे पर वार नहीं करता, ख़ान!' हबीबा बोला, 'इस लड़की के आगे घुटने टेक कर माफ़ी माँगो। यक़ीन रखो, मैं अपने कबीले का नाम तुम्हारी छाती पर अपनी तलवार की नोंक से नहीं लिखूंगा।'

नूर खाँ भयभीत उसे देखता रहा।

हबीबा हँसा और फिर अपनी तलवार ज़मीन पर फेंकता हुआ बोला, 'लो, अब तो ख़ुश हो। इस लड़की से माफ़ी माँगो।'

तलवार गिरते ही नूर खाँ हबीबा के ऊपर झपटा। पर हबीबा भी लोहे का बना आदमी था। उसने नूर खाँ को लपेट कर कलाजंग दाँव मारा। नूर खाँ बोरी की तरह लद्द से जा गिरा। उसे आधा मिनट तो उठने में लगा।

'वक्त ख़राब मत करो, ख़ान,' हबीबा बोला, 'वर्ना मुझे तैश आ जाएगा।'

नूर खाँ आँखें फाड़कर हबीबा को देखता रहा। फिर वह भीगी बिल्ली जैसा आया और महजबीं के आगे घुटने टेककर माफ़ी माँगी।

'हाँ अब ठीक है,' हबीबा बोला, 'जाओ अब दफ़ा हो जाओ।'

नूर खाँ आँखों से ख़ून बरसाता हुआ घोड़े पर बैठा और चल पड़ा।

महजबीं को हबीबा जिब्रील फरिश्ता जैसा लगा। उसकी आबरु की ढाल बन बैठा था हबीबा।

'एक जवान इधर घायल पड़ा है,' हबीबा बोला।

'वह मेरे भाई हैं,' महजबीं बोली।

'चलो देर मत करो,' हबीबा बोला और महजबीं को घोड़े पर बैठा कर उधर चल पड़ा जहाँ महजबीं का भाई गुलफ़ाम घायल पड़ा था। महजबीं भाई की हालत देखकर रो पड़ी।

हबीबा ने उतर कर उसकी नब्ज़ देखी और फिर बोला, 'घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। चलो, इसे लेकर चल दिया जाए। तुम घोड़ा चला लेती हो?'

महजबीं ने बड़ी-बड़ी बादामी आँखों को झपक कर कहा, 'हाँ।'

'तो तुम अपने भाई के घोड़े पर चलो। मैं तुम्हारे भाई को अपने घोड़े पर सँभाल कर चलता हूँ।'

उसने गुलफाम को अपनी बोतल से पानी पिलाया और फिर खून में लथपथ गुलफाम को सावधानी से अपने घोड़े पर बिठाया।

आगे-आगे महजबीं का घोड़ा चल रहा था। जब लोई इक्का की सरहद आई तब हबीबा ने पूछा—

'तुम्हारा कबीला किधर है बानो?'

'इधर है लोई इक्का में,' महजबीं बोली।

हबीबा ठिठका। लोई इक्का में तो उसके दुश्मन रहते हैं, यही तो अब्बा ने कहा था। पर न जाने क्या सोच कर वह पीछे-पीछे चलता रहा।

लोई इक्का में घुसते ही सबने महजबीं और पीछे के घोड़े पर घायल गुलफाम को देखा। कानाफूसी होने लगी।

जब महजबीं घर पर पहुँची उस वक्त उसके अब्बा गुलाम खाँ तीन-चार लोगों के पास बैठे हुक्का पी रहे थे। बेटी और घायल बेटे को देखकर सन्नाटे में आ गए। इससे पहले कि वह मुंह खोलें, महजबीं बोली—

'ये अपने मेहमान हैं, अब्बा। इन्होंने मुझे एक दरिन्दे से बचाया और गुलफ़ाम भाई को भी बचाकर हमारी दहलीज पर आए हैं।'

गुलाब खाँ और उसके साथियों ने गुलफ़ाम को उतारा। सब उसके बदन से तर कपड़े उतारने लगे। आनन-फानन ही हकीम सैयद आले इमाम भी आ गए। घाव गहरा नहीं था फिर भी घाव तो घाव ही होता है।

गुलाब खाँ ने हबीबा को गले लगाया और कहा, 'मैं तुम्हारा अहसानमंद हूँ बेटे। क्या नाम है तुम्हारा?'

हबीबा हँस कर बोला, 'पठान का लड़का हूँ, आक़ा। आप अहसान की बजाय मुझे दुआ दीजिए।'

गुलाब खाँ जवाब सुनकर खुश हुआ।

महजबीं अंदर से अनार के शरबत का गिलास लेकर आई थी। उसने अपनी बड़ी-बड़ी आँखों से हबीबा को अब देखा। देखकर न जाने कौन से तार उसके दिल में झनझना उठे। उसे नूर खाँ को हराने वाला मंजर याद हो आया। हबीबा ने भी महजबीं की एक झलक अब ठीक तरह से देखी।

महजबीं के हुस्न की परछाईं हबीबा की आँखों में उतरती गई। शरबत पीकर हबीबा जाने लगा।

'अपना नाम नहीं बतलाकर जाओगे बेटे,' सरदार गुलाब खाँ ने कहा।

हबीबा घोड़े पर बैठे-बैठे बोला, 'मुझे हबीबा कहते हैं आक़ा'। और फिर हबीबा ने जैसे अपनी आँखों से महजबीं को आदाब अर्ज किया हो। उसके एक पल को उसे देखा। महजबीं के संगमरमर जैसे गालों पर गुलाब की पंखुड़ी बिखर गई हों जैसे। उनकी हया ने शायद हबीबा के आदाब को तस्लीम कर लिया था।

गुलफ़ाम खतरे के बाहर था। कबीले के काफ़ी लोग इकट्ठा हो गए थे।

'शेर का बच्चा था, खान' किसी ने हबीबा की तारीफ़ की। फिर महजबीं ने नूरखाँ की गुलफ़ाम के साथ लड़ाई बयान की, और फिर हबीबा के जौहर भी बयान किए। हबीबा कबीले की हमदर्दी लूट ले गया था। महजबीं का क़रार भी लूटा था उसने। पर हबीबा ख़ुद भी तो लुट कर निकला था कोई उनका से। गुलाब खाँ भी बड़े प्रभावित हुए थे।

'कितना शर्मीला लड़का था। नाम भी बड़ी मुश्किल से बताकर गया है।'

तभी काले खाँ आगे बढ़कर बोला, 'मैं बताता हूँ सरदार वह कौन था। हबीबा उरकजई के सरदार तुर्रे खाँ का बेटा है।'

गुलाब खाँ के चेहरे पर एक काला साया उतर गया। वह एक लम्बी साँस भरकर मन ही मन बोला, 'सुना गुलाब खाँ! तुम्हारे दुश्मन तुर्रे खाँ का शेर जैसा लड़का था हबीबा। तुम्हारी बेटी की इज्जत बचाने वाला, तुम्हारे बेटे गुलफ़ाम की जान बचाने वाला। तुम्हारे दुश्मन का होनहार बेटा।'

पेशावर की छावनी के एक छोर पर चीफ कमिश्नर लेफ्टिनेंट कर्नल सर एच० ए० डीन का दफ्तर है। सुबह से काफी हलचल थी। अंग्रेज अफसर आज चमकीली वर्दियाँ पहन कर आए थे। साथ ही में रिसाल्दार दारा खाँ भी लाल-नीली वर्दी में आए थे। रिसाल्दार दारा खाँ की चीफ कमिश्नर साहब के यहाँ पेशी थी। दारा खाँ बरामदे के छोर पर खड़े थे। चीफ कमिश्नर साहब के दफ्तर में मेजर स्लेटर रिसाल्दार साहब के कागज़-पत्तर समझा रहे थे। मेजर स्लेटर स्वयं रज़मक से आए थे। दारा खाँ के चेहरे पर एक मुस्कान थी पर उन मुस्कान के पीछे जिन्दगी के दर्द छुपे थे।

दारा खाँ खैरख्वाह पठान थे। उनके वालिद मूसा खाँ भी नेक और सीधे-सादे पठान थे। बहुत अर्सा हुआ जब कि गाइड रिसाले ने मेजर रिचर्ड के नेतृत्व में मरधा कबीले पर हमला किया था। मेजर रिचर्ड बहादुर था। शायद वह पहला अंग्रेज था जिसने रज़मक में कबीले के दायरे में घुस कर वार किया था। बड़ा भयंकर युद्ध हुआ था। अपनी देहरी पर पठान अक्सर *मेहमाननवाज़ी करते हैं पर उस दिन उन्होंने अपने मेहमानों की तलवार से* खातिरदारी की थी। बराबर की चोट हुई। कबीले का सरदार मारा गया पर मेजर रिचर्ड भी बुरी तरह से घायल हो गया था। उसके घुड़सवार भी ज्यादातर मारे ही गए। रिचर्ड घोड़े पर औंधा पड़ा मरादिन की छावनी की ओर जा रहा था। मरादिन से एक मील पहले ही वह गिर पड़ा था। *एक चट्टान के पास वह पेट से निकलते हुए खून के झरने को दबा रहा था।* उसका हलक सूख गया था। जबान चमड़े के टुकड़े की तरह हो गई थी। बार-बार वह किसी अनजाने मददगार से 'पानी-पानी' माँग रहा था। मूसा खाँ उसी समय उधर से अपनी पानी की मश्क लेकर गुज़रा। कराहने की आवाज़ सुनकर वह चौंका। चट्टान की ओट में खून से सनी वर्दी में अंग्रेज अफसर को देखकर एक बार तो वह घबरा गया। पर फिर न जाने कहाँ से उसे हिम्मत आ गई। उसने मेजर रिचर्ड को मश्क से ठंडा पानी पिलाया। रिचर्ड को लगा जैसे वह अमृत पी रहा हो। टूटी आस फिर से लड़खड़ा कर उठने लगी।

'आप घबराइये नहीं साहब,' मूसा खाँ बोला, 'हम आपको छावनी लिए चलते हैं। इन्शाअल्लाह आप बिलकुल ठीक हो जाएंगे।'

रिचर्ड धीरे से हँसा, 'तुम मुझे दिलासा देकर हसीन धोखा दे सकते हो दोस्त। पर मौत किसी के चकमे में नहीं आती। ले चलो मुझे छावनी। पर उठाने से पहले देखो मेरी जेब में काग़ज और क़लम है क्या ?'

मूसा खाँ ने उसकी जेब टटोली। एक काग़ज निकला। शायद सरकारी चिट्ठी थी कोई। क़लम की स्याही सूख चुकी थी। रिचर्ड बोला, 'कोई बात नहीं। मैं अपने खून में डुबो-डुबो कर लिख लूंगा।'

रिचर्ड ने काग़ज पर अपने ख़ून से लिखा था : 'इस पठान ने मुझे मरते दम पानी पिलाया और दो शब्द प्यार से बोला। मरते वक्त मीठे बोल मुझे ऐसे लगे जैसे ईसा मसीह मुझे दुलार रहे हों। जो भी इस ख़त को पाए मेरे लिए इस पठान पर अहसान करे। मेजर पीटर रिचर्ड, फ्रन्टियर लान्सर्स।'

रिचर्ड ने काग़ज मूसा खाँ को दिया और बोला, 'मुझे अब छावनी ले चलो। काश मैं वहाँ तक पहुँच सकूं।' मूसा खाँ मश्क छोड़कर रिचर्ड को उठाकर चल दिया। मरादिन की छावनी नजर आने लगी थी।

मूसा खाँ हर्ष से चिल्लाया, 'छावनी आ गई साहब। घबराना मत।'

रिचर्ड उस वक्त आख़िरी प्रार्थना पढ़ रहा था। उसे सलीब में लटके ईसा मसीह मुस्करा कर अपनी फ़ैली बांहों में ले रहे थे।

मूसा खाँ ने जब रिचर्ड को दफ्तर में उतारा, तो वह रिचर्ड नहीं बल्कि उसकी लाश थी। मूसा खाँ की आँखों से आंसू निकल पड़े, 'अल् हम्दो लिल्लाह, बहादुर मैदान में गिरकर अल्लाह को प्यारे होते हैं।'

रिचर्ड की चिट्ठी ने मूसा खाँ की क़िस्मत के दरवाज़े खोल डाले। मूसा खाँ को दस बीघे मौरूसी जमीन और मैस में भिश्ती की नौकरी दी गई। फिर मूसा खाँ के बेटे दारा को अंग्रेजों ने स्कूल भिजवाया और जब दारा खाँ की रगों में ख़ून उबलने लगा, तब उसे रिसाले में सवार बनाया गया।

दारा खाँ का परिवार मरघा में ही रहा। उसका बेटा क़ासिम शुरू से ही शैतान था। उसने हरचन्द कोशिश की, अपनी बीबी सकीना को मरादिन ले आए पर उसका ससुर तुर्की खाँ पक्का सरहदी पठान था। कासिम अपने नाना के पास ही पला और जैसा कि दारा खाँ को डर था, वह सरहदी लुटेरा बन गया। बाप अंग्रेजों का ख़ैरख्वाह वफ़ादार था और बेटा अंग्रजों का दुश्मन। नसीबा भी कैसे अजीब-अजीब खेल दिखाता है। कई

यार दारा खाँ ने क़ासिम को समझाया भी, पर कासिम कब सुनने वाला था।

उस दिन जब क़ासिम खाँ के गिरोह ने रज़मक की एक छोटी सी चौकी पर हमला बोलकर तीन राइफलें उठाई थी तब रज़मक की रिसाला पल्टन में जोश फैल गया। शिव संकल्प मन में किए कैप्टिन हैरल्ड और रिसाल्दार दारा सिंह अपने सवार लिए चले थे। वज़ीरस्तान के इलाके को पार करके वे चले जा रहे थे। सरहद के पास उन्हें हमला करना था। बुन्दू खाँ मुख़बिर ने ख़बर दी थी कि दरवेश खेल के लुटेरों ने बन्दूकें लूटी हैं। कैप्टिन हैरल्ड ने अपने सवारों को दो दल में बाँटा। पहले दल को वह स्वयं लेकर हमला करेगा। दूसरा दल रिसाल्दार दारा खाँ के साथ 'रिज़र्व' रहेगा।

बड़ी सख्त लड़ाई हुई थी। लुटेरों के पाँव घंटे भर के बाद उखड़े थे। सभी क़ासिम खाँ अपने दोस्त को लेकर कैप्टिन हैरल्ड के पीछे से हमला करने आ पहुँचा। रिसाल्दार दारा खाँ ने धूल उड़ती देखकर अंदाज लगा लिया था कि बाहर से किसी की मदद आ पहुँची है। रिसाल्दार दारा खाँ अपने सवारों को लेकर आड़ा चला और बीच में उन्हें ललकारा। लुटेरों की टुकड़ी का सरदार उसका बेटा कासिम खाँ था। रिसाल्दार दारा खाँ हतप्रभ रह गया।

घोड़े की रास थामे वह चिल्लाया, 'कासिम, वापस लौट जाओ। मैं तुम्हें पन्द्रह मिनट का वक्त देता हूँ।'

कासिम भी जाँबाज़ लड़ाका था। उसे अपने दोस्त अकरम खाँ को मदद पहुँचाना जरूरी था। अकरम के सवार घिर चुके थे और उनके पैर उखड़ने लगे थे। कासिम यारों का यार था। अकरम उसका जिगरी यार था।

अपने घोड़े पर बंदूक हिलाता हुआ चिल्लाया, 'अब्बा, मेरे बीच में मत पड़ो। तुम इन फिरंगियों के साथ हमारे इलाके में घुस आए हो, यह मत भूलो।'

दारा खाँ बड़ी पशोपश मे पड़ गया था। उसके मातहत सवार सब कुछ सुन रहे थे, देख रहे थे।।

दारा खाँ ने आजिजी से कहा, 'कासिम, मेरा कहना मानो। वापस चले जाओ। मुझे अपना नमक हलाल करने दो। तुम मेरा ख़ून हो बेटे। मेरा कहना मान लो।'

क़ासिम हँसकर बोला, 'अब्बा, आज यही देखना है कि पठान ख़ून को नमक पर तरजीह देता है या नहीं। हट जाओ अब्बा मेरे रास्ते से।'

दारा ख़ाँ की आँखों में आँसू भर आए। आसमान की तरफ़ देखकर वह बोला, 'या अल्लाह, तू मेरा इम्तहान ले रहा है शायद। नमकहराम से बेहतर होगा कि अपने जिगर का ख़ून ख़ुद पी डालूँ।' रिसाल्दरार दारा ख़ाँ ने तलवार निकाल कर कहा, 'चार्ज !' रिसाला क़ासिम पर टूट पड़ा। लड़ाई घमासान हुई। रिसाल्दार दारा ख़ाँ लड़ते वक्त ख़ूँख्वार और निर्मोही हो हो गया। सहसा उसकी 'मार्टीनी हैनरी' राइफ़ल उठी और कासिम के सीने का निशाना लेकर आग उगल पड़ी। उसकी आँखों के सामने क़ासिम तड़प कर गिर पड़ा। क़ासिम के गिरते ही लुटेरे दरहम-बरहम होने लगे। रिसाल्दार दारा ख़ाँ क़ासिम के पास गया और मरते हुए क़ासिम की पेशानी चूमी। क़ासिम बोला, 'अब्बा, मुझे तस्कीन है कि मैं एक नमकहराम बाप का बेटा नहीं हूँ। तूने अपने नमक की लाज रखी। मैं ग़रूर से मर रहा हूँ अब्बा। ख़ून के तकाज़ों ने तुझे बुज़दिल नहीं बनाया; अच्छा, ख़ुदा हाफ़िज़' क़ासिम सदा के लिए मौन हो गया। रिसाल्दार दारा ख़ाँ ने अपनी जेब से मशहदी रूमाल निकाला और क़ासिम के मुँह पर ढँक दिया।

'इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन,' दारा ख़ाँ बोला और फिर झटके से उठा और अपने दस्ते को लेकर कैप्टिन हैरल्ड से जा मिला।

कैप्टिन को यह वाक़या दफ़ादार मुहम्मद ख़ाँ ने बतलाया था। कैप्टिन हैरल्ड सुनकर आवक् रह गया। वह स्वयं रिसाल्दार दारा ख़ाँ के पास आया था इस बात की तजदीक करने।

रिसाल्दार ने ठंडी साँस लेकर कहा, 'हाँ साहब, क़ासिम मेरा बेटा था। पर मैदान में सिर्फ दो ही रिश्ते होते हैं — दोस्त या दुश्मन। उसकी तरफ़ मैंने दोस्ती का हाथ बढ़ाया पर आख़िर वह भी पठान का बेटा था। उसे भी मुझ में दुश्मन ही नज़र आया।'

पूरे रजमक में यह बात आग की तरह फैल गई।

फिर कर्नल पेन ने एक चिट्ठी चीफ़ कमिश्नर को लिखी और आज रिसाल्दार दारा ख़ाँ पेशी के लिए बरामदे में 'सेरीमोनियल ड्रेस' में खड़ा इन्तज़ार कर रहा है।

कोई दस मिनट बाद उसे चीफ कमिश्नर के ~~स्वेस्ट पेश~~ किया गया। चीफ कमिश्नर अपनी कुर्सी छोड़कर उसके पास आया और हाथ मिलाकर बोला, 'वैल रिसाल्दार साहिब, हमने सुना ही सुना था कि पठान बहादुर कौम है। तुम्हारी बहादुरी आला दर्जे की है साहिब। जज़्बात के ऊपर ग़ालिब होना बहुत बड़ी बात है साहिब, बहुत बड़ी बात है।'

रिसाल्दार साहब ने अपने आंसुओं को आंखो में क़ैद कर रखा था। मुंह पर तसल्ली थी और ओठों पर मायूस मुस्कान।

चीफ़ कमिश्नर ने उनकी पीठ थपथपाई।

'आज से आप ख़ानबहादुर रिसाल्दार मेजर दारा खाँ साहब है। मैंने ओ० बी० आई० के खिताब और मैडिल के लिए कमांडर-इन-चीफ को लिखा है। इसके अलावा आपको दस एकड़ ज़मीन पेशावर के ज़िले मे दी जाती है।' रिसाल्दार साहब को सुनकर न ख़ुशी हुई न रंज। सब बात होने पर चीफ़ कमिश्नर बोले, 'आपकी और कोई ख्वाहिश है, साहिब ?'

रिसाल्दार दारा खां सर उठाकर बोले, 'जी हुज़ूर! मैं अब आपको आपकी दी हुई तलवार वापस करना चाहता हूं। इसके बाद अब मुझसे तलवार उठ नही सकेगी, हुज़ूर।'

चीफ़ कमिश्नर सुनकर जड़वत् रह गया। एक लमहे बाद बोला, 'ठीक है साहिब। हम आपका नाम पेंशनयाफ़्ता बहादरों मे लिखवाए देते हैं। अपनी दी हुई तलवार हम सिर्फ़ गद्दारों से कबूल करते हैं। आप तो हमारी सल्तनत और निज़ाम के एक सतून हैं। आप इस तलवार को हमारी तरफ से बतौर एक यादगार के कबूल फर्माइए।'

चीफ कमिश्नर ने रिसाल्दार साहब से गर्मजोशी से हाथ मिलाया। दारा खां सलाम करके बाहर आ गए।

हबीबा लोई डक्का से वापस तो आ गया पर अपना दिल शायद सरदार गुलाब खाँ की देहरी पर ही छोड़ आया था। रास्ते भर उसे महजबीं की बादामी आँखें नज़र आती रहीं। हबीबा मुस्कराया, 'क्या किस्मत पाई है तूने हबीबा। आँखों में कोई बसा भी तो वह भी दुश्मन की लड़की।'

बैतुल आकर हबीबा की ख़ून से रंगी बाँह सबसे पहले उसकी माँ ने देखी। 'ये ख़ून कैसे बहा बेटे!' माँ ने कहा।

'कुछ नहीं माँ, हबीबा बोला, 'मामूली-सी एक झड़प हो गई थी। गहरी खरोंच है और कुछ नहीं।'

माँ ने ज्यादा पूछताछ नहीं की। वह गर्म पानी करके लाई और घाव को धोकर मलहम लगा दिया।

शाम को दस्तरख़्वान पर सरदार तुर्रे खाँ जब बैठे तो हबीबा ने सर झुकाकर कहा, 'अब्बा जान, आज मैं युसुफजई के सरदार गुलाब खाँ के दर तक गया था।'

तुर्रे खाँ ने कहा, 'मुझे मालूम है बेटे। मुझे सब ख़बर मिल चुकी है। मैं खुश हूँ कि तूने एक सवाब किया। गुलाब खाँ की बच्ची की आबरू बचाई ये अच्छा किया।'

हबीबा चुपचाप खाता रहा।

तुर्रे खाँ बोले, 'जिस ज़लील नौजवान को तूने शिकस्त दी उससे होशियार रहना। वह महमंद कबीले के हिलाल खाँ का बेटा नूर खाँ है।। मुझे यकीन है कि तेरे सीने पर तो वह ज़ख्म भी नहीं कर सकता पर पीठ का बचाव रखना। बहादुर सीना बचाता है और टुच्चा पीठ पर ही वार करता है।'

हबीबा चुपचाप खाता रहा।

खाने के बाद चौपाल पर हुक्का ताजा किया गया। सरदार तुर्रे खाँ और अन्य मिलने वाले वहाँ बैठे।

'सरदार, अब्दुल पेशावर से ख़बर लाया है,' एक पठान बोला।

'कैसी ख़बर है?' तुर्रे खाँ बोला।

'रिसालदार दारा खाँ ने मोर्चा लेते वक्त अपने बेटे को मार डाला,' वही पठान बोला।

सन्नाटा छा गया।

'रिसालदार दारा खाँ फिरंगियों की नौकरी करता है, सरदार,' पठान बोला, 'बेटा, आज़ाद शेर था।'

सरदार तुर्रे खाँ हुक्के का कश लेकर बोला, 'दोनों ने ही फर्ज अदा किया, खान ! बाप ने नमक की लाज रखी तो बेटे ने तलवार की । हम इसे बहादुरी और जाँनिसारी की एक मिसाल तस्लीम करते हैं।'

गला खँखार कर मुख़बिर बोला, 'सरदार, रिसाल्दार दारा खाँ को दस एकड़ ज़मीन, खान बहादुर का ख़िताब, ओ० बी० आई० का तमगा और पेन्शन भी दी गई।'

'ठीक है', सरदार बोले, 'नमक की कीमत आका को देनी ही चाहिए। अब क्या दारा खाँ पेशावर में ही रहने लगा ?'

तभी कोने में बैठा बिल्ले खाँ बोला, 'जी नहीं सरदार। आगे की ख़बर मैं सुनाता हूँ। जिस जगह दारा खाँ का बेटा कासिम गिरा था, वहाँ एक मज़ार दारा खाँ ने बनवाया है। मज़ार पर अपने मैडिल और तलवार रख कर दारा खाँ ने अंग्रेज़ों की दी हुई ज़मीन यतीमख़ाने को बख्श दी और वह ख़ुद फ़क़ीर का बाना पहनने लगा है।'

सरदार तुर्रे खाँ ने दोनों हाथ ऊपर उठाते हुए कहा, 'मुहम्मद रसूल इल्लाह सालहो आलहे वसल्लम ! जब तक हमारे वतन में इस तरह सोहराबो-रुस्तम पैदा होते रहेंगे हमारी गर्दन कभी भी नहीं झुक सकेगी।'

बड़ा सञ्जीदा माहौल हो गया था। चौपाल पर आए हुए पठानों ने बात का रुख बदला। 'सरदार, फिरंगियों की नई राइफल हल्की होने के अलावा मार अच्छा करती है। गर्म भी देर में होती है।'

सरदार तुर्रे खाँ ने हुक्के की नली से मुँह उठाकर कहा, 'जंगल में मोर नाचा किसने देखा ! कोई रैफल लाकर बताए तो मश्विरा भी दिया जाए।'

इशारा समझ गए सब लोग। अब सवाल उठा कि बिल्ली के गले में घंटी कौन-सा माई का लाल बाँधेगा। एक चुप्पी-सी साध ली सब ने।

तभी हबीबा सहमे हुए स्वर में बोला, 'अगर इजाज़त हो अब्बा तो मैं कोशिश करूँ।'

यह सुनकर तुर्रे खाँ खुश हुआ। अपनी खुशी दबाते हुए बोला, 'हबीबा

बेटे, तुम्हारी कुश्ती मैंने देखी है, तलवार के हाथ भी देखे हैं। घुड़सवारी भी ठीक है। पर रैफ़ल का निशाना अभी नहीं देखा है। सरहद पर लूट-खसोट करना और बात है और, फिरंगियों के बरख़िलाफ बन्दूक चलाना और बात है।'

हबीबा को जैसे सौ बिच्छुओं ने एक साथ डंक मारे हों। वह आवाज़ को काबू में रखते हुए बोला, 'अगर अब्बा मुनासिब समझें तो मेरा ये इम्तहान भी कल ले लें।' एक ख़ुशी की लहर फैल गई।

'अच्छा हबीबा', तुर्रे खाँ बोले, 'कल तुम्हारा इम्तहान होगा।'

दूसरे दिन कबीले के सब जवान लड़के और पुराने निशानेबाज़ गाँव के बाहर इकट्ठे हो गए। छोटा-मोटा मेला-सा लग गया। सबके पास अपनी-अपनी राइफ़ल और बन्दूकें थीं। कबीले के सबसे अच्छे निशानची फ़न्ने खाँ को सरदार तुर्रे खाँ ने अपने साथ बिठा रखा था।

पहले दो सौ गज की दूरी पर मिट्टी के आठ घड़े रखे गए जिनके ऊपर एक-एक मिट्टी का कुल्हड़ रखा था। फन्ने खाँ ने सरदार से इजाज़त लेकर चाँदमारी शुरू कराई।

'ख़ोचे, सिर्फ़ घड़े के ऊपर रखा कुल्हड़ उड़े, घड़ा नहीं, वह बोला, 'देखो ऐसे।'

और फ़न्ने खाँ ने देखते ही देखते आठों घड़ों के ऊपर रखे कुल्हड़ों को उड़ा दिया। चारों तरफ़ 'वाह वाह', 'शाबाश' का शोर हुआ।

कुछ जवान लड़के भाग कर गए और फिर घड़े पर कुल्हड़ रख आए।

सरदार तुर्रे खाँ ज़ोर से बोले, 'हबीबा, आओ और इम्तहान दो। इसके अलावा और लड़के भी आएँ और अपना निशाना दिखलाएँ।'

हबीबा सहमता हुआ आया और निशाना बाँधा।

धांय!

पहला घड़ा फूटा गया। उसने दूसरे पर निशाना लगाया तो फिर दूसरा घड़ा फूट गया।

हबीबा ने परेशानी से इधर-उधर देखा फिर फ़न्ने खाँ के पास आकर बोला, 'चचा, आपसे दरख़्वास्त है कि ज़रा आप मुझे अपनी रैफ़ल दे दें।'

यह सुनकर कुछ लोग हँसे भी। तुर्रे खाँ ओठ चिपकाए देखते रहे।

फन्ने खाँ ने अपनी राइफल देते हुए कहा, 'लो बेटे, मैं देखता हूँ कि तुम एक अच्छे निशानेबाज के साथ-साथ भेजे में अकल भी रखते हो। अल्लाह, तुम्हारी मदद करे।'

हबीबा ने फन्ने खाँ की राइफल से निशाना साधा और देखते ही देखते घड़ों के ऊपर रखे कुल्हड़ों को उड़ा दिया। फन्ने खाँ ने बढ़कर हबीबा को गले से लगा लिया। सब तरफ तारीफ और हैरत की लहर फैल गई। इसके बाद फन्ने खाँ ने दो घोड़ों की पीठ पर दो भूस के बोरे बँधवाए और उन्हें छोड़ दिया। भागते घोड़ों पर बँधे बोरों पर फ़न्ने खाँ ने पाँच-पाँच फायर बड़ी तेज़ी से किए। घोड़ों को वापस लाने पर सबने देखा कि बोरों में पाँच-पाँच छेद हो रहे थे।

हबीबा ने अपने सूखे ओठों पर जीभ फेरी और फन्ने खाँ से राइफल फिर माँगी। फन्ने खाँ ने हँसते हुए राइफल दे दी।

हबीबा ने भी भागते हुए घोड़ों पर बँधे बोरों में निशाना बाँधा। दस में से सात छेद हो पाए पर एक घोड़े की टाँग भी टूट गई।

फन्ने खाँ ने कहा, 'शाबास बेटे। कोई परवाह नहीं। तुमको शागिर्द बना कर मैं गरूर से अपना सर उठा सकूँगा।'

फन्ने खाँ हबीबा का हाथ पकड़े सरदार तुर्रे खाँ के पास आया और बोला, 'सरदार, अगर आप इजाजत दें तो मैं कबीले के आइन्दा होने वाले सरदार को, जो कुछ भी हुनर मुझे आता है, सिखला दूँ।'

तुर्रे खाँ का चेहरा खुशी से लाल हो रहा था।

उन्होंने उठकर हबीबा का हाथ पकड़ा और फिर फन्ने खाँ को पकड़ा दिया।

'फन्ने खाँ', सरदार बोले 'पगड़ी कल चौपाल पर बाँधी जाएगी। हबीबा आज से तुम्हारा शागिर्द और बेटा है।' फन्ने खाँ की बाँछें खिल गईं।

'सरदार, लड़के का ज़ेहन अच्छा है,' फन्ने खाँ बोला।

'इसने इस बात को भाँपा कि मेरी राइफल का निशाना अच्छा है। ये एक अहम बात थी। राइफल का निशाना तभी अच्छा होता है जब राइफिल की 'ज़ीरोइंग' ठीक से की जाए। इतनी छोटी उम्र में ये इम्तयाज़

करना होनहारी की निशानी है। ख़ुदा ने चाहा तो हबीबा जैसा निशाने-बाज आस-पास कहीं भी नहीं मिलेगा।'

'आमीन,' सरदार तुर्रे ख़ाँ ने कहा।

तमाशा ख़त्म हुआ। सब तरफ़ फ़त्ते ख़ाँ उस्ताद और हबीबा शागिर्द के ही चर्चे होते रहे।

महजबीं अपने भाई के जख़्म को गर्म पानी से सेंक रही थी।

'फिर क्या हुआ महजबीं ?' गुलफ़ाम ने लेटे-लेटे पूछा।

महजबीं ने सब कुछ बतलाया। जब भी वह हबीबा का नाम लेती, उसके ओठ लरज उठते। उसके सामने हबीबा की सूरत आ जाती। गुलफ़ाम थोड़ा उठकर बैठा।

'अगर हबीबा नहीं आता तो ग़ज़ब हो जाता,' गुलफ़ाम ने कहा।

महजबीं भी काँप गई। उसके हाथ से पानी में डूबी रुई हिल गई।

'और शायद मेरा भी इतना ख़ून निकल जाता कि मेरा बचना नामुमकिन हो जाता,' गुलफ़ाम सोचता रहा।

महजबीं उदास स्वर में बोली, 'मैंने अब्बा के मुंह से सुना था भाई जान। वे कह रहे थे कि हबीबा हमारे दुश्मन कबीले का बेटा है।'

गुलफ़ाम हँसा।

'अब्बा की बातें भी अजीब होती हैं। बेटी की इज्जत बचाने वाला, बेटे की जान बचाने वाला और दुश्मन ! ख़ैर। मैं कब तक उठ-बैठने के क़ाबिल हो सकूँगा महजबीं ? क्या हकीम साहिब ने कुछ बतलाया है ? '

महजबीं धीरे से बोली, 'दस दिन बाद तुम्हें चंगा हो जाना चाहिए भाई जान।'

गुलफ़ाम बोला, 'दस दिन के बाद मुझे हबीबा के पास शुक्रिया अदा करने जाना है।' महजबीं आँखें फाड़कर सुनती रही।

'अगर अब्बा को पता लग गया तो ?' वह सहमी हुई बोली।

गुलफ़ाम हँसकर बोला, 'दुश्मन का बेटा हमारे कबीले में घुस कर अहसान कर गया तो क्या मैं उसके कबीले में अहसान का शुक्रिया अदा करने नहीं जा सकता।'

महजबी लाजवाब हो गई।

'तुम मर्द हो भाई जान,' वह बोली, 'तुम्हारा जाना बाइसे फ़ख़् होगा। बेहतर तो होगा कि तुम उसे दावत पर मदऊ कर आओ। उसे हमारे यहाँ नमक खाना गवारा होगा या नहीं, यह उसकी नीयत का फ़ैसला होगा।'

गुलफ़ाम ने मुस्करा कर सर हिला दिया।

'तुम्हारी तजवीज़ मुझे पसन्द आई। पर इसके लिए अब्बा से इजाज़त लेना जरूरी है।'

उस दिन से महजबी गुलफ़ाम के घाव को तीन-तीन बार सेंकने लगी थी। वह शायद यह चाहती थी कि गुलफ़ाम जल्द से जल्द जाने के क़ाबिल हो जाए।

बारहवाँ दिन था शायद। गुलफ़ाम अपने चार साथियों के साथ बैतुल की तरफ चल दिया। बैतुल की सरहद पर उसने अपने साथी छोड़ दिए।

'तुम यहीं मेरा इन्तज़ार करना।'

फिर अकेला घोड़े पर बैठा गुलफ़ाम कबीले में घुस पड़ा था। रास्ते में उसने पूछा, 'ख़ान, मुझे अपने दोस्त हबीबा के घर जाना है।'

लोगों ने उसे देखा और सरदार तुर्रे ख़ाँ का घर बतला दिया। उस वक्त हबीबा अपने अब्बा के पास बैठा राइफल साफ कर रहा था।

गुलफ़ाम उसके दरवाज़े पर घोड़े से उतरा और सरदार से बोला, 'सलाम वालेकुम किबला। मुझे अपने दोस्त हबीबा से मिलना है।'

हबीबा गुलफ़ाम को देखकर पहचान गया पर गुलफ़ाम हबीबा को नहीं पहचानता था। जो कुछ ब्यौरा महजबी ने दिया था वह सब हबीबा पर लागू होता था।

सरदार तुर्रे ख़ाँ बोले, 'कमाल है बेटे ! हबीबा को अपना दोस्त भी कह रहे हो पर उसे पहचान भी नहीं रहे हो ?'

गुलफ़ाम बोला, 'जी हाँ क़िबला। मैं उस वक्त बेहोश था इसलिए उसे पहचान नहीं सकता।'

हबीबा बन्दूक रख कर उठा और शेर जैसी चाल से बढ़ा, 'तुम शायद गुलफ़ाम ही हो ना? सरदार गुलाब खाँ के बेटे।'

'हाँ।'

हबीबा ने हाथ बढ़ाया, 'मैं ही हबीबा हूँ। ये मेरे अब्बा हैं सरदार तुर्रे खाँ।'

गुलफ़ाम ने हाथ मिलाया।

'मैं उस दिन का शुक्रिया अदा करने आया हूँ। महजबीं की तरफ़ से भी शुक्रिया कर रहा हूँ।'

सरदार तुर्रे खाँ ने घूर कर उसे देखा, 'ग़ालिबन तुम युसुफज़ई सरदार गुलाब खाँ के ख़ानज़ादे हो?'

'जी हाँ। आपने बजा फर्माया।' गुलफ़ाम बोला।

'हमारे दर पर आने से पहले तुमने अपने अब्बा को अपना मंशा बतलाया था?' तुर्रे खाँ बोले।

'जी नहीं।'

'क्यों?'

'मैं हबीब खाँ से मिलने आया हूँ। अब्बा के दुश्मन सरदार तुर्रे खाँ से मिलने नहीं। हबीबा को मैं दोस्त कबूल करता हूँ।'

'और मुझे क्या कबूल करते हो ख़ानज़ादे?'

'आप मेरे मेहरबान दोस्त के वालिद हैं। आप मेरे भी उतने ही बुजुर्ग हैं जितने शेर दिल हबीबा के।'

तुर्रे खाँ जवाब सुनकर उठ खड़ा हुआ।

'तो आओ बेटे। मैं तुम्हारा इस्तक़बाल करता हूँ।' तुर्के खाँ बोले।

कुछ लोग भी आ गए थे। अंदर से तब तक अंगूर का रस आ गया था। गुलफ़ाम ने गिलास एक ही सांस में खाली कर दिया। थोड़ी देर तक इधर-उधर की बातें होती रहीं। फिर गुलफ़ाम ने हबीबा से कहा, 'मैं तुम्हें कल दावत के लिए मदऊ करने आया हूँ दो—'

तुर्रे खाँ के ओठों पर हल्की-सी

को छोड़कर अंदर चले गए।

हबीबा ने गुलफाम की ओर देखा।

'आपके वालिद को कोई ऐतराज तो नही होगा?' गुलफ़ाम हँस कर बोला।

'क़तई नही,' हबीबा ने हाथ बढ़ाकर कहा, 'मैं जरूर आऊँगा।'

'शाम को पाँच बजे मेरे साथी और मैं आपको आपकी सरहद से ले जाएंगे। आप हमारे खास मेहमान होंगे।'

हबीबा मुस्कराया। उसे अहसास हुआ कि शायद उसे महजबी का दीदार भी हो जाए।

गुलफाम वहाँ से सलाम करके चल दिया। कबीले में घूमते हुए उसने छोटे से बाजार में प्रवेश किया। एक परचूनी की दुकान पर वह घोड़े से उतरा और बोला, 'खान, मुझे एक सेर नमक चाहिए।'

परचूनी के दुकानदार ने नमक तोल कर दे दिया। पैसे देकर गुलफाम बोला, 'एक परचे पर लिख दो खान, कि एक सेर नमक तुम्हारी दुकान में खरीदा गया।'

परचूनी वाला ताज्जुब से देखने लगा पर जब गुलफाम ने उसे एक रुपया 'बख्शीश' कहकर बढ़ाया तो उसने लिख दिया 'एक सेर नमक फरोख्त किया खान गुलफाम को। दस्तखत, दाऊद खाँ, कबीला उरबजई, बैतुल।'

गुलफाम मुस्कराता हुआ नमक खरीद कर चल दिया।

युसुफज़ई कबीले में कल की दावत की तैयारी होने लगी थी। सरदार गुलाब खाँ के घर के आगे मैदान में लकड़ियों का ढेर बना दिया गया था। दो बड़े अंगीठे पास रखे थे। फर्श और मेहमान के लिए कालीन बिछा दिए गए थे। कुल मिलाकर तीस लोगों की दावत खानी थी।

लोहे की मोटी सलाखें लकड़ी के ऊपर जमा दी गई थीं। दो बड़े बकरे आग पर सेंके जाने थे।

दूसरे दिन हबीबा को लेकर गुलफाम और उसके साथी शाम को आए। हबीबा ने बड़ी इज्जत से सरदार गुलाब खाँ को सलाम किया।

'क्यों बेटे, आज भी अपना नाम अपने मुँह से नहीं बतल

सरदार गुलाब खाँ हँसकर बोले। हबीबा का चेहरा शर्म से लाल हो गया। वह और भी खूबसूरत लगने लगा था। खिड़की से महजबीं उसके चेहरे को ग़ुरुर से देख रही थी। वह टकटकी बाँधकर दूर से हबीबा को देख रही थी मानो उसकी तस्वीर को आँखों से खींचकर दिल में उतार रही हो।

हबीबा बोला, 'मैं आपसे मुआफ़ी का तलबगार हूँ क़िबला। मैंने नाम इसलिए नहीं बतलाया था कि कहीं आपको नागवार नहीं गुजरे।'

'मुझे बहादुर हर हाल में पसन्द हैं बेटे,' सरदार गुलाब खाँ बोले, 'फिर ये मत भूलो कि मेरी इज्ज़त पर तुम ढाल बनकर ही नहीं आए बल्कि मेरे खानदान के तरफ़दार बनकर तुमने अपनी तलवार भी खींची।'

'वह मेरा फर्ज़ था क़िबला,' हबीबा बोला, 'फर्ज़ कभी अहसान का दावा नहीं करता है।'

'आफ़रीं, मैं बहुत खुश हूँ,' सरदार बोले, 'काश मुझे तुम्हारे अब्बा कहलाने का फ़ख्र हासिल होता।'

हबीबा मुस्करा कर बोला, 'अब्बा जान, मेरा नाम हबीबा खाँ है।'

सरदार गुलाब खाँ की बाँछें खिल गईं और उसने हबीबा को अपनी बाँहों में भर लिया।

महजबीं ने जब यह देखा तो उसने आँखें बन्द करके धीरे से कहा, 'आमीन।'

कालीन पर हबीबा की बग़ल में सरदार गुलाब खाँ और गुलफ़ाम बैठे थे। थोड़ी ही देर में लकड़ियों और कोयलों की आग में साबुत बकरे घुमाए जाने लगे।

शरबत के दौर चलने लगे और कुछ गाने वाले डफ़, चंग और सरुद पर गाने लगे।

समाँ बँधने लगा। दावत के लिए दस्तरख्वान बिछा दिया गया और फिर चार पठान अंदर से धधकता हुआ लोहे का तिजाल लाए। तिजाल के ढक्कन को खोला तो उसमें एक साबुत बकरा सिक कर सुर्ख़ हो गया था। सावधानी से बकरे को सलाख से उतारा और एक बड़े चाँदी के तश्त पर हबीबा के आगे रखा गया। रखते ही एक पठान ने खंज़र से ज़रा सा इशारा बकरे के सिले हुए पेट पर ताँत के धागे पर किया। पेट खुल गया और उसमें से ढेर

मारा गर्म चावल निकल आया। चावल में बादाम, पिस्ते, खुमानी, जाफ़रान, जावित्री और तरह-तरह के मसाले मिले हुए थे। चावल फैलते ही खुशबू से मुँह में बरबस पानी आने लगा। गुलफ़ाम ने हबीबा से कहा, 'मैं तुम्हें अपना खास दोस्त मानता हूँ हबीबा भाई और मेरे अब्बा तुम्हें सानिये गुलफ़ाम मानते हैं। फिर भी अहतयात बरतना हमारा फ़र्ज है। गोश्त और मसाले के चावलों में नमक पड़ना लाज़िमी है। तुम्हें हमारे कबीले का नमक खाना खुशगवार लगे या नहीं, इसी डर से इस बकरे में जो नमक पड़ा है वह तुम्हारे कबीले के परचून दाऊद खाँ की दुकान से उस रोज़ ले आया था। मेरे पास दाऊद खाँ की रसीद भी है।' यह कहकर गुलफ़ाम ने हबीबा के आगे रसीद रख दी।

हबीबा सुनकर तिलमिला गया और बोला, 'गोया आपने मेरी नीयत पर शक किया गुलफ़ाम भाई जान।' फिर सरदार गुलाब खाँ की ओर मुड़कर वह बोला, 'अब्बा जान, अगर आपको नागवार नहीं गुज़रे तो मैं कुछ अर्ज करना चाहता हूँ।'

सरदार गुलाब खाँ टकटकी बाँधते हुए बोले, 'बोलो बेटे, बिल खतरा बोलो।'

हबीबा बोला, 'मैं आज आपका मेहमान हूँ। मेहमान की ख्वाइश पूरी करना आपका फ़र्ज है। मेरा मन्शा है कि मैं लकड़ियों पर सेका हुआ बकरा खाऊँ जिसमें आपके कबीले का नमक पड़ा हुआ है और आप सब बुजुर्ग मेरे कबीले के नमक पड़े इस तिजास के बकरे को कबूल फर्माएँ, सरदार। गुलाब खाँ और उनके साथियों के चेहरे खिल गए।

'आमीन,' सरदार गुलाब खाँ खड़े होकर बोले, 'मुझे अपने दूसरे बेटे मेहमान का हुक्म मंजूर है।'

अदावत की पर्तें जमीनों में धुल गई। बरसों से चली आई यसुफ़ज़ई और उतमज़ई के बीच खड़ी इत्तफ़ाक की दीवार अर्रा कर गिर पड़ी।

बड़ी देर तक जश्न मनता रहा। रात के करीब एक बजे हबीबा ने सामने गोठ की तरफ़ देखा। शायद महज़बी का चाँद जैसा मुखड़ा उसे दिखलाई पड़ा। हबीबा ने महसूस किया कि उस पर उसके चाँद की झीनी-झीनी चाँदनी बरस रही है।

यकायक हबीबा उठा और गाने वाले के हाथ से चंग लेकर मस्ती से गाने लगा।

उसकी आवज़ में सोज़ और कशिश दोनों थी। उसका गाना ऐसा लगा मानो दर्द में डूबा हुआ मजनू क़यस लैला से शिकवे भरी फ़रियाद कर रहा हो। युसुफ़जई कबीले को हबीबा ने बेहाल कर दिया और महज़बी भी बुरी तरह से घायल हो चुकी थी। उसने अपने दिल से धीरे से कहा, 'मेरा हबीबा।' रात को हबीबा सरदार गुलाब खाँ के यहाँ सोया। सुबह तीन बजे खटपट सुनकर हबीबा ने आँखें खोलीं। कोई लरज़ती हुई शामा लेकर उसके चेहरे को देख रहा था। हबीबा झटके से उठा।

सहमती हुई महजबीं हिरनी की तरह अंदर भाग गई। हबीबा मुस्करा कर देखता रह गया। फिर सहसा उसने अपने सिरहाने रखी तलवार पर एक लाल रंग का रेशमी रूमाल बँधा देखा। हबीबा ने उठकर रूमाल को खोला। केवड़े से मुअत्तर हो रहा था वह रूमाल। कोने पर सफेद डोरे से कढ़ा हुआ था 'महजबीं।'

हबीबा ने रूमाल को बार-बार सूंघा। उसे अहसास हुआ मानो वह महज़बीं को अपनी बलिष्ठ बाँहों में भरे उसके केवड़े में बसे बदन को सूंघ रहा हो। हबीबा फिर उस रात सो नहीं सका। घंटों करवट बदलता रहा। घंटों रूमाल से ख़ामोश गुफ्तगू करता रहा। उसे लगा जैसे महजबीं ने अपनी रूह लपेट कर रूमाल में बन्द कर दी हो।

सुबह नाश्ते के बाद जब हबीबा सबसे मिलकर चलने लगा तो वह इधर-उधर महजबीं को देखने को तड़पता रहा। बाहर आकर उसने ऊपर की खिड़की की ओर देखा। खिड़की के एक बन्द पल्लू के साथ ही महजबीं उसे उदास आँखों से देख रही थी। फिर सहसा महजबीं का मुंह-बँधे कमल जैसा हाथ उठा और उसने हबीबा को सलाम किया। हबीबा ने आँखों से उस हसीन सलाम को तस्लीम किया और फिर वह चल दिया। उसके दिल में खट् जैसी एक आवाज़ हुई। वह मुस्करा कर अपने दिल से बोला, 'शायद मुहब्बत के नींव के पत्थर की ये आवाज़ थी, ए दिल।'

हबीबा अलविदा करके चल पड़ा।

नूर खाँ कुएं के पास वाली बगीची में लेटा हुआ साँप जैसी गर्म और जहर-आलूदा साँसें ले रहा था। उसे अपने बल पर बड़ा घमंड था। हबीबा के दमख़म ने उसके मुगालते को झकझोर डाला था। उसने अपने मुख़बिर ईदू खाँ को हबीबा का नाम-धाम पता लगाने भेजा था। ईदू खाँ दूसरे दिन ही ख़बर ले आया था।

'ख़ान, उस ख़ानज़ादे का नाम हबीबा है। उरकज़ई कबीले के सरदार तुर्रे खाँ का लड़का है। कुश्ती, घुड़सवारी और हथियार चलाने का शौक है। ला-मिसाल निशानची भी है।'

'ख़ामोश', नूरा खिसिया कर बोला, 'ज्यादा चापलूसी मत कर। इतना काफी है कि वह उरकज़ई है।' नूरा छुटपुट राहज़नी और लूट-खसोट करता था। उसके वालिद सरदार हिलाल खाँ को इस बात की ख़बर नहीं थी।

नूरा अपने साथ पाँच बन्दे रखता था जो कि रहज़न थे। छोटी-मोटी लूट में ही वे ख़ुश रहते थे। नूरा के दल ने कभी सरकारी घुड़सवारों से लोहा नहीं लिया था और न ही कभी किसी अंग्रेजी चौकी पर हमला बोला था। शेर और भेड़िये के वार में फर्क होता है।

दोपहर को नूरा अपने उचक्के साथियों के साथ ख़ैबर दर्रे के आसपास मँडरा रहा था। सहसा उसे एक बग्घी दिखाई दी जिसके पीछे दो सवार भी चल रहे थे।

'ख़ान, देखो! अंग्रेजों की बग्घी लगती है,' बर्री खाँ उत्तेजित होकर बोला।

'क्या हो सकता है,' नूरा बोला, 'ख़जाना होता तो ज्यादा सवार होते। देखा जाए।'

नूरा ने राइफ़िल उठाकर एक सवार पर निशान मारा। वह ! मार कर गिर पड़ा और फिर उठकर आड़ ढूँढने लगा। तब तक दूसरे

ने दूसरे सवार पर निशाना साधा। सवार का घोड़ा गिर पड़ा। गोली की आवाज़ से बग्घी के घोड़े चमके और बग्घी इधर-उधर भागने लगी। बग्घी से किसी लड़की के रोने की आवाज़ आई।

नूरा के दो साथियों ने गिरे हुए सरकारी सवारों को उलझाए रखा। बाक़ी साथियों के संग नूरा गिद्ध की तरह टूटा।

बग्घी पर काबू कर लिया गया। जब बग्घी रोकी तो नूरा ने अंदर झाँका। एक मोटी आया किसी अंग्रेज साहब की पाँच साल की लड़की को अपनी बाँहों में भरे रो रही थी। नूरा सब कुछ समझ गया। उसने झपटकर लड़की को आया से छीन लिया।

'नहीं नहीं ख़ान,' आया गिड़गिड़ा कर बोली, 'मिसी बाबा अभी-अभी बीमारी से उठी हैं। इसकी मम्मी रो-रोकर मर जाएगी।'

'इसकी माँ को हम मरने नहीं देंगे मुटल्ली,' नूरा राक्षस जैसी हँसी से बोला, 'इसके फिरंगी बाप को बतला देना कि कल यहीं दो हज़ार रुपये लेकर अकेला आ जाए। बच्ची वापस कर दी जाएँगी।' फिर साँप जैसी आँखें चमका कर नूरा हँसा और बोला, 'बता देना हबीबा ने लड़की को उठा लिया है। रुपये इस हाथ और लड़की उस हाथ। कल शाम को चार बजे तक नहीं आया तो लड़की की लाश उस नाले में मिलेगी।'

आया सुनकर काँप गई। रोती हुई डैफ़नी जेम्स को नूरा ने अपने घोड़े पर बिठाया और चल पड़ा। जाते वक्त ज़ोर से बोला, 'याद रखना, मेरा नाम हबीबा है।' उसके साथी दूर निकल जाने पर उससे बोले, 'नूर खाँ, तुमने अपना नाम हबीबा क्यों बतलया?'

नूरा पिशाच जैसी हँसी से ठहाका मार कर बोला, 'फिरंगी हबीबा के पीछे पड़ जाएँगे, बेवकूफ़ो, इसलिए। साथियों ने नूरा की अकल की दाद दी।

बग्घी लंडीकोतल की तरफ़ भागी जा रही थी। जब बग्घी डैफ़नी के बग़ैर पहुँची तो छावनी में कोलाहल हो गया। डैफ़नी की माँ बेहोश हो गई। स्वयं कैप्टिन जेम्स घबरा गया था। वह दाँत पीसकर बोला, 'हबीबा, हबीबा। मैं इसे कभी नहीं छोड़ूँगा।'

'सुनो ऐलबर्ट,' कैप्टिन होम्स ने कहा, 'इस वक्त सवाल डैफ़नी को बचाने

का है। मेरी राय है कि तुम दो हजार रुपये लेकर सबसे पहले डैफनी को रिहा कराकर ले आओ। उस वक्त कोई चालाकी मत करना। पठान बड़े संगदिल होते हैं।'

सबने होम्स की राय को सराहा। जेम्स ने भी इसमें अपनी बेटी की भलाई समझी। सब जगह नन्ही डैफनी की जान की खैर मांगी जा रही थी।

अफसर मैस में उस शाम हबीबा का ही जिक्र हो रहा था। मेजर पैट्रिक ह्विस्की का गिलास घुमाता हुआ बोला, 'इस हबीबा से बाद मे निपटेंगे। मैं इस हबीबा को ठीक करूंगा। मैंने ऐसे बहुत से हबीबा को जमीन की धूल चटाई है। शराब के जाम की क़सम दोस्तो, मैं इस हबीबा को छोड़ूंगा नही।'

मेजर पैट्रिक ने एक ही सांस मे गिलास खत्म कर दिया और फिर दूसरा पेग लेता हुआ बोला, 'मुझे नही पता था कि पठान अब इतने गिर गए हैं कि छोटी बीमार बच्ची पर अपने जौहर दिखाने लगे हैं। ये हबीबा एक टुच्चा बुज़दिल है। मर्द मर्द से टक्कर लेता है। अबोध बच्चों से नही।' 'बार' पर शराब देने वाला पठान रहमान खां सुन रहा था। उसने आबदार जबर खां की ओर देखा। जबर खां की निगाह झुक गई।

मैस बन्द हो चुका था।

'सुना जबरे,' रहमान बोला, 'मैं तो शर्म से गड गया। वाह भई हबीबा वाह। किस कबीले ने इस बहादुर को पैदा किया है जबरे?'

जबर खां उरकज़ई पठान था। इस तंज को सुनकर तिलमिला गया।

'कुछ समझ मे नही आता उस्ताद' जबर खां सोच मे डूबा हुआ बोला, 'हबीबा एक बहादुर जवान है। औरत पर कभी निगाह तक नही डालता जिसमें तो मिसी बाबा पांच साल का कुदरत का तोहफा है। कुछ समझ में नही आता।'

जबर खां सर झुकाए हबीबा को कोसने लगा। आधी रात बीते हुए उसने रहमान खां को झकझोर कर उठाया।

'उस्ताद, मुझे कबीले की बेइज्जती पच नही रही है' जबर खां मुट्ठी बन्द करके बोला, 'मैं अभी इसी वक्त हबीबा को पशेमां करने जा रहा हूं। कल दोपहर तक आ जाऊंगा।'

रहमान झुंझला कर बोला, 'पर जाओगे क्या मेरे सर पर बैठकर ? और वह भी इस रात में ?'

'उस्ताद, मैंने घोड़ों का इन्तज़ाम कर लिया है, जबर खाँ बोला, 'और मैस का 'पास' मय फोटो के मेरे पास है। संतरी जब रोकेगा तो कहूँगा कि मेरी माँ सख़्त बीमार है। छुट्टी पर जा रहा हूँ।'

'पर छुट्टी तो सिकटरी साहब देता है रहमान नहीं,' रहमान बोला।

'तुम्हें मेरी मदद करनी पड़ेगी उस्ताद,' जबर खाँ गिड़गिड़ाकर बोला, 'सवाल पूरे कबीले की इज्ज़त का है।'

रहमान ने जबरे की ओर घूर कर देखा, 'अच्छा तो जाओ पर 'लँच' के वक्त तक आ जाना।'

'ज़रूर आ जाऊँगा उस्ताद, ज़रूर आ जाऊँगा।' जबर बोला, और गुस्से और क्षोभ से पीड़ित जबर खाँ घोड़े पर चल दिया। मैस का पास अभय कवच की भाँति साबित हुआ। कोई चार बजे सुबह वह सरदार तुर्रे खाँ के मकान पर पहुँचा। दरवाज़े की कुंडी पीट-पीटकर उसने सारा मुहल्ला ही जगा दिया।

आँखें मलता हबीबा आया।

'कौन है खोचे, जो दरवाज़ा ढोल की तरह पीटे डाल रहा है !' हबीबा बोला।

जबर खाँ व्यंग्य की अदा में बोला, 'वाह, बहादुर हबीब खाँ ! सरदार तुर्रे खाँ के जिगरमन्द ! क्या कहने तुम्हारी बहादुरी के !'

हबीबा सबेरे-सबेरे यह सुनकर बौखला गया, 'क्या बकता है खोचे,' उसने जबर खाँ की गर्दन पकड़ कर कहा।

'लो, देख लो सरदार,' जबर खाँ चिल्लाया, 'अंग्रेज साहब की पाँच साल की मासूम और बीमार बेटी को उठा लाया है और मेरा ग़रेबान भी पकड़ रखा है। सब अंग्रेज मैस में उरकज़ई कबीले पर थूक रहे थे। मैं भी उरकज़ई हूँ। नहीं खान, मासूम बच्चों की तरफ़ उरकज़ई कभी हाथ नहीं बढ़ाता, कभी नहीं हाथ बढ़ाता।'

सरदार तुर्रे खाँ तब तक आ पहुँचे थे।

'इसे छोड़ दो हबीबा,' वह भारी आवाज़ में बोले।

हबीबा भौंचक होकर सुनता रहा और अब्बा का आदेश सुनकर उसने जबर खाँ का गला छोड़ दिया।

'अब बतलाओ जबर खाँ, क्या झमेला है?' तुर्रे खाँ बोले।

जबर खाँ ने सारा वाकया सुना दिया। सुनकर तुर्रे खाँ बोले, 'हबीबा क्या यह सच है?'

'जी नहीं अब्बा,' हबीबा किंकर्त्तव्यविमूढ़ होकर बोला। 'क़सम कुरआन शरीफ़ की अब्बा, मुझे इसके बारे में कुछ नहीं मालूम।'

सरदार तुर्रे खाँ ने सोचा और फिर बोले, 'हूँ, तो कोई तुम्हारा नाम बदनाम करना चाहता है। कुछ कबीले के लोग बच्चे और औरत मर्दों को उठा कर फिरौती वसूल करते भी हैं पर हमारा कबीला औरत और बच्चे पर हाथ नहीं बढ़ाता। कौन हो सकता है जो तुम्हें बदनाम करना चाहता है?' तुर्रे खाँ ने हबीबा की ओर मुड़कर कहा।

हबीबा का ख़याल फ़ौरन महमंद कबीले के नूर खाँ पर जा टिका। महज़बी वाला वाकया ताज़ा होकर उसके ज़हन में घूमने लगा।

'मेरे ख़याल से ये काम सरदार हिलाल खाँ के लड़के नूर खाँ का है।' हबीबा बोला।

'हूँ' सरदार तुर्रे खाँ ने सोचा। फिर जबर खाँ से बोले, 'कितनी फिरौती माँगी है बच्ची के लिए, जबर खाँ?'

'शायद दो हज़ार रुपये माँगे हैं, जबर खाँ बोला। 'ऐसा ही ज़िक्र हो रहा था। कल शाम चार बजे तक फिरौती देनी है।'

हबीबा बोला, 'मैं भी चार बजे वहाँ पहुँचूँगा अब्बा।'

'ठीक है पहुँच जाना,' तुर्रे खाँ बोला, 'पर दो हज़ार रुपये मुझसे ले जाना और महमदों के सरदार या खानज़ादे को दे आना। उनके कबीले में फिरौती जायज़ है।'

हबीबा अवाक् सुनता रहा। 'पर अब्बा,' वह कह ही रहा था कि तुर्रे खाँ ने बात काटते हुए कहा, 'ज़्यादा बात बढ़ाने की ज़रूरत नहीं है, हबीबा। महमदों से हमारी कोई खशमक नहीं। हाँ, तुम्हारी और नूर खाँ की निजी काट-छाँट हो सकती है। इसलिए मेरा मशिवरा है कि उनके दो हज़ार उन्हें मिल जाएँ और फिरंगियों को उनकी बेटी मिल जाए।'

जब्बर खाँ की आँखें भर आईं। आगे बढ़कर उसने सरदार तुर्रे खाँ के हाथ पकड़ कर चूम लिए और हबीबा के आगे उसने दामन पकड़ कर कहा,

'मुझे मुआफ़ करना छोटे सरदार,' रोता हुआ जबर खाँ बोला, 'मैंने उरकज़ई पर शक किया, मैं कितना कमीना हूँ। मुझे मुआफ़ करना छोटे सरदार।' हबीबा ने उसे गले से लगाया।

'नहीं चचा, आपका अहसान मैं कभी नहीं भूलूँगा। आपने मेरे नाम की आबरू रखी। पूरे कबीले की इज्जत रखी है।'

जबर खाँ आँखें मलता चल दिया।

दूसरे दिन हबीबा दस साथियों को लेकर चल पड़ा। घोड़े पर दो हज़ार चाँदी के रुपयों की थैली भी बँधी थी। नूर खाँ और उसके पाँच साथी हँसी-मजाक करते हुए कच्चे रास्ते निकले। डैफ़नी उसकी कमर से बँधी थी। डर और कमजोरी से वह मुरझा गई थी।

हबीबा ने उसे मैदान में निकलते ही घर लिया। दस राइफ़ल की नलियाँ नूर खाँ और उसके साथियों को साधे हुई थीं।

'कहाँ जा रहे हैं ख़ानजादे 'हबीबा खाँ', हबीबा हँसकर बोला।

नूर खाँ सुनकर सक्ते में आ गया। अपने सूखे ओंठों पर जीभ फेरता हुआ बोला, 'तुम ?'

'जी हाँ। ख़ानजादे, मैं।' हबीबा बोला 'मुझे ख़बर मिली कि तुमको मेरा नाम बहुत पसन्द आया है ख़ैर हम कोई और नाम रख लेंगे अपना। और ये नन्हा-सा फूल कहाँ ले जा रहे हो ख़ान बहादुर ?'

नूर खाँ गुस्से में काँपने लगा पर उसकी हिम्मत चूँ-चाँ करने की भी नहीं हो रही थी।

हबीबा ने कड़क कर अपने साथी से कहा, 'इनकी बंदूकें कब्ज़े में कर लो वहीदा।'

वहीद खाँ ने आगे आकर सबकी बंदूकें छीन लीं। बाक़ी नौ बंदूकों की नलियाँ नूर खाँ और उनके साथियों को फिर भी साधे रहीं।

'नूर खाँ, इस बच्ची को उस फिरंगी को देना है। मैं पीछे-पीछे चलूंगा', हबीबा बोला।

नूरा सिटपिटा गया था।

ठीक चार बजे कैप्टिन जेम्स दूर से नजर आया। वह सफेद झंडा पकड़े हुए बढ़ रहा था। उसके साथी शायद इधर-उधर छुपे हों। उस वक्त वह अकेला आ रहा था। घोड़े की दाईं तरफ एक थैली भी बँधी थी।

हबीबा नूर खाँ से कोई बीस कदम दूर था।

'फिरंगी साहब, हम कोई धोखा नहीं करेंगे। आप इस चट्टान की आड़ में अपनी बेटी ले लीजिए।'

हबीबा ज़ोर से चिल्लाया था।

कैप्टिन जेम्स ने आदेश के मुताबिक घोड़ा चट्टान की तरफ मोड़ दिया। आड़ में नूरा ने सहमते हुए डैफनी को कैप्टिन जेम्स को सौंपा। डैफनी यकायक 'पापा' करके उससे लिपट गई।

कैप्टिन जेम्स ने थैली खोलकर सामने कर दी।

'ठहरो,' हबीबा बोला, और नूरा को सामने करते हुआ बोला, 'साहब बहादुर, थैली इधर लाइये।'

कैप्टिन जेम्स ने थैली हबीबा को थमा दी। हबीबा थैली लेकर मुस्कराया और बोला, 'मैं ये थैली तुम्हारी बच्ची को भेंट करता हूँ साहब। मुझे खूब देखकर पहचान लो, मैं हबीबा हूँ। और जिसने तुम्हारी बच्ची को उठा कर मेरे नाम को बदनाम करना चाहा वह खानजादा ये है। पर मैं इसका नाम नहीं बतलाऊँगा। अगर इसका नाम बतला दिया तो इसके वालिद का सर शर्म से झुक जाएगा। और इसके वालिद मेरे वालिद के दोस्त हैं।'

कैप्टिन जेम्स का मुँह खुला का खुला रह गया।

उसने हबीबा से कहा, 'क्या मैं तुमसे हाथ मिला सकता हूँ हबीबा बहादुर?'

'ज़रूर,' हबीबा मुस्कराकर बोला। उसने गर्मजोशी से हाथ मिलाया और बोला, 'कभी आपसे मैदान में फिर मुलाकात होगी साहब।'

कैप्टिन जेम्स मुस्कराती हुई बेटी को लेकर वापस चला गया।

'चलिए खानजादे वापिस चलें।' हबीबा राइफल की नली नूर खाँ की ओर करके बोला।

'नजफ़ ख़ान,' हबीबा बोला, 'महमद कबीले की तरफ चलो।'

नजफ़ ख़ान महमदों के कबीले की तरफ चल दिया। जब कबीले की

सरहद नज़र आने लगी तो हबीबा बोला, 'तुम लोग ख़ानज़ादे और इनके जिगरी दोस्तों पर यहीं नज़र रखना। मैं अभी आया।'

और हबीबा यह कहता हुआ दुलकी चाल से घोड़े को भगाकर कबीले की तरफ़ चल पड़ा।

कबीले में घुसकर उसने सरदार हिलाल खाँ का घर पूछा और उनकी देहरी पर आकर उतर पड़ा।

किवाड़ की कुंडी खटखटाने पर सरदार भारी आवाज़ में 'कौन है' कहते हुए आए।

हबीबा ने उन्हें झुककर सलाम किया और बोला, 'क़िबला, मैं सरदार तुर्रे खाँ उरकज़ई का बेटा हबीबा हूँ। कुछ अर्सा हुआ मैंने नूर खाँ से दो हज़ार रुपये उधार लिए थे। उन्हें वापस करने आया हूँ।'

सरदार ने तुर्रे खाँ का नाम सुनते ही हबीबा को बाँहों में भर लिया।

'अरे बेटे, तुम इतने बड़े हो गए,' हिलाल खाँ बोला, 'और सरदार तो ख़ैरियत से हैं।'

'आपकी इनायत है,' हबीबा बोला।

हबीबा ने रुपयों की थैली पकड़ा कर कहा, 'मैं जल्दी में हूँ क़िबला। आप नूर खाँ को ये रुपये दे दीजिएगा। हाँ, मैंने ब्याज नहीं दिया है क्योंकि दोस्त-दोस्त से ब्याज नहीं लेता।'

'अरे बेटे इतनी जल्दी भी क्या है,' हिलाल खाँ बोला, 'बग़ैर शरबत पिए नहीं जाने दूंगा।'

अन्दर से शरबत मँगवाया गया और फिर सलाम करके हबीबा वापस चल दिया।

नूरा अपने साथियों के साथ हरी-हरी घास पर बैठा था। हबीबा के साथी ऊपर चट्टान पर चौकन्ना बैठे थे। हबीबा ने वापस आते ही कहा, 'इनके कारतूस रख लो और बन्दूकें वापस कर दो।'

इसके बाद हबीबा और उसके साथी मुड़कर चल दिए।

'इस खन्ज़ीर के बच्चे हबीबा से बदला नहीं लिया तो मेरा नाम नूर खाँ नहीं,' नूरा ने ख़ूनी आखें तरेर कर कहा।

'कुछ भी हो ख़ान,' उसका साथी बोला, 'उरकज़ई का लड़का है

बहादुर।'

'खामोश !' नूर खाँ पलट कर बोला।

सब मुँह लटकाए हुए वापस कबीले के अन्दर दाखिल हुए।

घर पहुँचते ही नूर खाँ के अब्बा सरदार हिलाल खाँ ने हँसकर कहा, 'कहाँ गया था नूरा ? ये तेरा दोस्त हबीबा आया था और तुझसे जो दो हज़ार उसने उधार लिए थे ना, वह वापस दे गया है। ये ले सँभाल अपनी रकम।'

नूर खाँ आँखें फाड़े सुनता रहा। उसे ऐसा महसूस हुआ कि हबीबा ने पानी में भीगा हुआ कोड़ा उसकी नंगी पीठ पर मारा हो। और उस ख़याली कोड़े की नीली धारी नूरा के दिल पर निशान छोड़ गई। कभी मिटने न वाला निशान।

फत्ते खाँ निशानची की सिफारिश सुनकर ही सरदार तुर्रे खाँ ने सारे कबीले के सामने हबीबा के सर पर कुल्ला और पगड़ी बाँधी थी। कबीले के बुज़ुर्ग पुराने लड़ाकू बहादुरों को सूखे मेवे बाँटे गए।

'बेटे हबीबा,' सरदार बोले, 'हमारा कबीला कभी औरत और मासूम बच्चे पर हाथ नहीं डालता। दूसरी बात हमारे कबीले का बहादुर जब खुदा को प्यारा होता है तो उसके सीने में छेद पाया जाता है पीठ पर नहीं। मैं उरकज़ई कबीले की इज्जत तुम्हारे हाथों दे रहा हूँ।' हबीबे ने सबके सामने सिर झुकाकर शर्तें कबूल की। सरदार तुर्रे खाँ ने उसे एक लाल रेशम के धागे का उकदा दिया और कहा, 'एक बात रह गई। हम बहादुर की इज्जत करते हैं। दुश्मन हो या दोस्त पर हो बहादुर। जब बहादुर दुश्मन हमारे हाथों मारा जाता है तो हम ये लाल धागा उसकी कलाई पर बाँध देते हैं।

हबीबा ने लाल धागे की लच्छी ले ली।

हबीबा उस दिन से अपने जगम का शेर बन चुका था। उसके साथ

कोई चालीस लोगों का दल था। उसके दो खास दोस्त थे। एक तो फ़रीदा दूसरा असलम। असलम जीता जागता जिन्द था। उसका सीना पत्थर की पटिया जैसा कठोर और चौड़ा था। कुश्ती और पंजा लड़ाने में उसका कोई आसपास साथी नहीं था। इधर फ़रीदा घुड़सवारी में लामिसाल था। हवीवा पहलवान भी था और घुड़सवार भी। पर वह तक अपने इन दोनों हाथों पर नाज करता था।

दूसरे दिन से ही हवीवा अंग्रेजी चौकियों पर चील की तरह झपटने लगा। पन्द्रह दिन के अंदर ही उसने दस राइफ़ल और जमरूद से आता हुआ खज़ाना लूटा। सरकारी खज़ाने के लोहे के वक्स में वीस हज़ार रुपया मिला। हवीवा के चार साथी काम आए थे। हवीवा अपने दोस्तों की लाश छोड़कर नहीं आता था। भारी गोलावारी के वावजूद उसके साथी चारों लाशों को घोड़ों पर लादकर वापस आ गए थे। हवीवा की वहादुरी और दिलेरी देखकर अंग्रेज भी अश-अश कर उठे थे।

जमरूद में हो रही कॉन्फ्रेंस में स्टेशन कमांडर मेजर विटवर्थ ने निष्पक्ष भाव से हवीवा की दिलेरी को सराहा था। वह वोला था, 'सरहद की चोटियों की धुंधली रेखा के पार प्रकृति का सूरज सुवह धीरे-धीरे अपना सर उठाकर उभरता है और फिर शाम को जैसे स्वयं अपनी क़व्र में अपने पावों से ही उतर जाता है। पर एक और भी आवारा सूरज जव चाहे तव सरहद की धुंधली रेखाओं को पार करके निकलता और छुपता रहता है। यह निर्भय और उद्दण्ड आवारा सूरज है हवीवा। उसके साथी सूर्य किरणों की भाँति उसके चारों ओर चकाचौंध करने वाली गति से मँडराते रहते हैं। काश, हम इस आवारे सूरज के प्रकाश को वाँध सकें।'

निःसंदेह हवीवा एक आवारा सूरज ही था। जव उसका मन चाहता वह सरहद पार उदय होता, जव उसका मन चाहता सरहद के पीछे अस्त हो जाता। उसे निगलने के लिए अंग्रेज कोई भी वायुपुत्र हनुमान पैदा न कर सके।

लेफ्टिनेंट कर्नल सर हैरल्ड डीन ने एक वड़ी कान्फ्रेंस पेशावर में की थी। हवीवा की सरगर्मी ने उन्हें वेचैन कर दिया था। उनका मशवरा था कि जमरूद के किले से 'गार्डन हाइलैंडर्स' की एक कम्पनी बुलवा ली

जाए। पर मेजर पैट्रिक ने बहस की कि अमरूद के किले की जिम्मेदारी डावांडोल हो जाएगी। बेहतर होगा कि हिन्दुस्तान में किसी रिसाले का स्क्वाड्रन मंगवाया जाए जिसके सवार छँटे हुए बहादुर हों। कर्नल डीन ने पैट्रिक की दलील को माना और कहा, 'तुम्हारा मश्वरा मेरे मशवरे से ज्यादा ठीक है, माइकिल। मैं कल ही सी-इन-सी को लिखूंगा।'

'सिन्ध हार्स' उस समय लाहौर की छावनी में पड़ा था। मेजर काक्रन का स्क्वाड्रन उस समय 'हैवक डेविल्स' के नाम से प्रसिद्ध थे। जिस दिन 'सिन्ध हार्स' का 'रेजीमेंटल डे' मना था उस रोज काक्रन के स्क्वाड्रन के करतब देखकर पूरा लाहौर दाँतों तले उँगली दबा गया था। काक्रन स्वयं सधा हुआ घुड़सवार था जो जमीन में गज भर गड़ी मेख को नेजे और तलवार से उखाड़ता हुआ आँधी की तरह निकल जाता था। उसके रिसाले के छँटे हुए नग थे सब सवार। वह हरेक सवार पर नाज करता था। जब कर्नल डीन की चिट्ठी आई तो मेजर काक्रन का स्क्वाड्रन ही सरहद के लिए चुना गया। उस रात मेजर काक्रन ने डटकर शराब पी थी। सारा स्क्वाड्रन लंगर में शराब और गोश्त पर टूटा पड़ रहा था। बाकी के स्क्वाड्रन झेंपे हुए से देख रहे थे। कितना खुशनसीब था मेजर काक्रन : सभी आफीसर्स मैस में यह दबी जबान से कह रहे थे।

हफ्ते भर के अंदर ही मेजर काक्रन अपने बहादुर सवारों को लेकर आ गया था। सारा स्क्वाड्रन बाँट दिया गया था। छः पोस्टों पर आधा-आधा ट्रूप तैनात कर दिया गया। नम्बर पाँच पोस्ट के नजदीक हबीबा के तीन-चार हमले हो चुके थे। इस पोस्ट के पास से ही दर्रे के अंदर डाक-गाड़ी की बग्घी निकलती थी। फौज की तनख्वाह का खजाना भी खच्चरों की पीठ पर लादकर आसपास की पोस्ट पर जाता था। नम्बर पाँच पोस्ट एक महत्वपूर्ण पोस्ट थी। करीब चार सौ गज दूर जकाखेल कबीले का गाँव था। कबीले के सरदार बहराम खाँ को अंग्रेज प्रशासन हर साल छः हजार रुपये देता था। सिलेदारी की रस्म से फायदा यह था कि ये पठान भी अंग्रेजों की तरफ से छुट-पुट हमलों में मदद करते थे।

मेजर काक्रन ने नम्बर पाँच पोस्ट पर अपना सबसे बहादुर और बेहतरीन दफादार दुर्गासिंह भेजा। दुर्गासिंह घोड़े की पीठ पर बैठते ही बाज़ की

वन जाता था। मेजर काक्रन उसे अपने से बेहतर सवार मानता था। दुर्गासिंह का सुता हुआ बदन और चीते जैसी कमर पर सबकी नज़र एक बार ठहर जाती थी। दुर्गासिंह के करतब पूरी पलटन में मशहूर थे। 'सिन्ध हार्स' की नाक का बाल था दफ़ादार दुर्गासिंह।

नम्बर पाँच पोस्ट की गश्त और चौकन्ना दबिश से हवीवा की आजादी में भी फ़र्क आया। उस दिन हवीवा नहीं निकला बल्कि फ़रीद खाँ टुकड़ी को लेकर दर्रे के पास राशन और शराब की पेटियों से लदे खच्चरों की क़तार पर नजर लगाए बैठा था। जिस वक्त फ़रीदा अपने साथियों को लेकर टूटा उसी वक्त दुर्गासिंह के दस सवारों ने भागते हुए घोड़ों पर बैठे-बैठे इतने सही निशाने लगाए कि फ़रीदा अपने दो साथी खोकर भाग गया। दोनों लाशों को छोड़कर आना फ़रीदा को अखर रहा था। हमला विफल हो चुकने पर फ़रीदा सफेद झंडा लहराता अकेला दफ़ादार दुर्गासिंह के सवारों की ओर आया। दुर्गासिंह ने उसे आने दिया।

'हमारी अर्ज़ है कि हमें अपने बहादुरों की लाश उठाने दी जाए,' फ़रीदा दूर से चिल्लाया।

दुर्गासिंह भी वीर था। भदौरिया राजपूत का खून उसकी नसों में भरा था।

'ठीक है,' दुर्गासिंह बोला, 'हथियार हमारे और लाशें तुम्हारी। तुम लाश ले जा सकते हो।'

फ़रीदा फिर दो साथियों को लेकर आया और अपने गिरे हुए साथियों की लाश घोड़ों की पीठ पर लाद कर ले चला। चलते वक्त फ़रीदा ने दुर्गासिंह को भरपूर नजर से देखा। घूरते हुए उसने कहा, 'मैं तुम्हें शुक्रिया अदा करता हूँ सरदार।'

दुर्गासिंह उत्तर में केवल मुस्करा दिया था। फ़रीदा की कहानी सुनकर हवीवा तिलमिला गया। उसके साथियों का हमला विफल ही नहीं हुआ बल्कि दो साथी भी खेत रहे। और फिर जब फ़रीदा ने उस काफिर हिन्दू दफ़ादार की दरियादिली बयान की तो हवीवा दुर्गासिंह को देखने के लिए बेचैन हो गया। शायद हवीवा की लगन सच्ची थी। दस दिन बाद ही 'सिन्ध हार्स' का 'फंक्शन' था। वार्षिक दिन मनाया जाना था। तब तक

चका खेल के कई लोगों ने दुर्गासिंह की घुड़सवारी के किस्से फैला दिए थे। हबीबा और भी बेचैन हो गया।

वार्षिक दिन पर रिसाला पल्टन में बड़ी सरगर्मी थी। मैदान साफ कराया गया था और चूने से पट्टियाँ खिचवाई गई थीं। एक ओर रंग बिरंगे शामियाने लगे थे। कुर्सियों पर अफसरान और उनके परिवार बैठने थे। शहर के तमाशबीनों के लिए सामने वाली जमीन खाली थी। खेल शुरू होते ही पहले मेजर काब्रन ने आकर कर्नल हाइडफोस्ट को अभिवादन किया और आरम्भ करने की अनुमति माँगी। इसके बाद उमंग सवार भड़कीली वर्दियों में मैदान में उतरे। गड़ी मेखों को नेजे से उखाड़ उखाड़कर वे घोड़ों पर आँधी की भाँति भागने लगे। मेजर काब्रन जब घोड़े पर चला तो उसने दो मेखें उखाड़ीं। एक नेजे से और फिर फुर्ती से म्यान से तलवार खींचकर दूसरी। चारों ओर तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी।

दर्शकों की भीड़ में चादर लपेटे हबीबा और असलम भी खड़े देख रहे थे। फरीदा इधर-उधर दुर्गासिंह को खोज रहा था।

मेजर काब्रन के बाद रिसाले के लेफ्टिनेन्ट मेयर्स ने भागते हुए घोड़े पर बैठे-बैठे हवा में फेंकी हुई काँच की बोतलों को पिस्तौल से उड़ा दिया। हबीबा ने भी सर हिलाकर दाद दी। आखिर में दुर्गासिंह का करतब रखा गया था। दूर से दुर्गासिंह घोड़े पर मूर्ति जैसा लग रहा था।

फरीदा हबीबा के कान में फुसफुसाकर बोला, 'ये ही हैं दफादार दुर्गासिंह। कहते हैं आसपास ऐसा घुड़सवार नजर नहीं आता जो इसका मुकाबिला कर सके।' हबीबा ने साँस रोककर दुर्गासिंह की तरफ देखा।

जमीन की पट्टी पर एक पीतल का कटोरा रख दिया गया और थोड़ी दूर पर ताश का पत्ता जमीन पर रख दिया गया। दुर्गासिंह 'जयभवानी' चिल्लाता हुआ काल की तरह झपटा। पलक झपकते ही उसने घोड़े की पीठ पर बैठे-बैठे फुर्ती से तलवार को म्यान से खींचा और झुकते हुए एक वार में कटोरे के दो टुकड़े कर दिए। आगे बढ़ते ही उसने भागते हुए घोड़े की पीठ से बहुत नीचे झुकते हुए तलवार की नोक से ताश का पत्ता बींध डाला और सामने से गुजर गया।

'आफरीं,' हबीबा बोला, 'क्या शेर का बच्चा है।' बरबस हबीबा का

वन जाता था। मेजर काक्रन उसे अपने से वेहतर सवार मानता था। दुर्गासिह का सुता हुआ वदन और चीते जैसी कमर पर सवकी नज़र एक वार ठहर जाती थी। दुर्गासिह के करतव पूरी पलटन में मशहूर थे। 'सिन्ध हार्स' की नाक का वाल था दफ़ादार दुर्गासिह।

नम्वर पाँच पोस्ट की गश्त और चौकन्ना दविश से हवीवा की आज़ादी में भी फ़र्क आया। उस दिन हवीवा नहीं निकला वल्कि फ़रीद खाँ टुकड़ी को लेकर दर्रे के पास राशन और शराव की पेटियों से लदे खच्चरों की क़तार पर नज़र लगाए वैठा था। जिस वक्त फ़रीदा अपने साथियों को लेकर टूटा उसी वक्त दुर्गासिह के दस सवारों ने भागते हुए घोड़ों पर वैठे-वैठे इतने सही निशाने लगाए कि फ़रीदा अपने दो साथी खोकर भाग गया। दोनों लाशों को छोड़कर आना फ़रीदा को अखर रहा था। हमला विफल हो चुकने पर फ़रीदा सफेद झंडा लहराता अकेला दफ़ादार दुर्गासिह के सवारों की ओर आया। दुर्गासिह ने उसे आने दिया।

'हमारी अर्ज़ है कि हमें अपने वहादुरों की लाश उठाने दी जाए,' फ़रीदा दूर से चिल्लाया।

दुर्गासिह भी वीर था। भदौरिया राजपूत का खून उसकी नसों में भरा था।

'ठीक है,' दुर्गासिह वोला, 'हथियार हमारे और लाशें तुम्हारी। तुम लाश ले जा सकते हो।'

फ़रीदा फिर दो साथियों को लेकर आया और अपने गिरे हुए साथियों की लाश घोड़ों की पीठ पर लाद कर ले चला। चलते वक्त फ़रीदा ने दुर्गासिह को भरपूर नज़र से देखा। घूरते हुए उसने कहा, 'मैं तुम्हें शुक्रिया अदा करता हूँ सरदार।'

दुर्गासिह उत्तर में केवल मुस्करा दिया था। फ़रीदा की कहानी सुनकर हवीवा तिलमिला गया। उसके साथियों का हमला विफल ही नहीं हुआ वल्कि दो साथी भी खेत रहे। और फिर जव फ़रीदा ने उस काफिर हिन्दू दफ़ादार की दरियादिली वयान की तो हवीवा दुर्गासिह को देखने के लिए वेचैन हो गया। शायद हवीवा की लगन सच्ची थी। दस दिन वाद ही 'सिन्ध हार्स' का 'फंक्शन' था। वार्षिक दिन मनाया जाना था। तव तक

छका खेन के कई लोगों ने दुर्गासिंह की घुड़सवारी के क़िस्से फैला दिए थे। हवीवा और भी बेचैन हो गया।

वार्षिक दिन पर रिसाला पल्टन में बड़ी सरगर्मी थी। मैदान साफ़ कराया गया था और चूने से पट्टियाँ खिचवाई गई थीं। एक ओर रंग बिरंगे शामियाने लगे थे। कुर्सियों पर अफ़सरान और उनके परिवार बैठने थे। शहर के तमाशबीनों के लिए सामने वाली जमीन खाली थी। खेल शुरू होने से पहले मेजर काक्रन ने आफ़र कर्नल हाइडफ़ोस्ट को अभिवादन किया और आरंभ करने की अनुमति माँगी। इसके बाद उनके सवार भड़कीली वर्दियों में मैदान में उतरे। गड़ी मेखों को नेज़े से उखाड़ उखाड़कर वे घोड़ों पर आँधी की भाँति भागने लगे। मेजर काक्रन जब घोड़े पर चला तो उसने दो मेखें उखाड़ीं। एक नेज़े से और फिर फुर्ती से म्यान से तलवार खींचकर दूसरी। चारों ओर तालियों की गड़गड़ाहट गूँज उठी।

दर्शकों की भीड़ में चादर लपेटे हवीवा और असलम भी खड़े देख रहे थे। फ़रीदा इधर-उधर दुर्गासिंह को खोज रहा था।

मेजर काक्रन के बाद रिसाले के लेफ़्टिनेंट मेयर्स ने भागते हुए घोड़े पर बैठे-बैठे हवा में फेंकी हुई काँच की बोतलों को पिस्तौल से उड़ा दिया। हवीवा ने भी सर हिलाकर दाद दी। आखिर में दुर्गासिंह का करतब रखा गया था। दूर से दुर्गासिंह घोड़े पर मूर्ति जैसा लग रहा था।

फ़रीदा हवीवा के कान में फुसफुसाकर बोला, 'ये ही है दफ़ादार दुर्गासिंह। कहते हैं आसपास ऐसा घुड़सवार नज़र नहीं आता जो इसका मुक़ाबिला कर सके।' हवीवा ने साँस रोककर दुर्गासिंह की तरफ़ देखा।

जमीन की पट्टी पर एक पीतल का कटोरा रख दिया गया और थोड़ी दूर पर ताश का पत्ता जमीन पर रख दिया गया। दुर्गासिंह 'जयभवानी' चिल्लाता हुआ काल की तरह झपटा। पलक झपकते ही उसने घोड़े की पीठ पर बैठे-बैठे फुर्ती से तलवार को म्यान से खींचा और झुकते हुए एक वार में कटोरे के दो टुकड़े कर दिए। आगे बढ़ते ही उसने भागते हुए घोड़े की पीठ से बहुत नीचे झुकते हुए तलवार की नोक से ताश का पत्ता बींध डाला और सामने से गुज़र गया।

'आफ़रीं,' हवीवा बोला, 'क्या शेर का बच्चा है।' बरबस हवीवा का

हाथ उठा और उसने दुर्गासिंह की ओर सलाम किया। दुर्गासिंह लौटकर फिर लाइन पर आ गया। अब की बार वह राइफल लेकर घोड़े पर आया। भागते वक्त उसके आगे एक बोतल फेंकी गई और एक पीछे। दुर्गासिंह ने राइफ़ल से आगे वाली बोतल और पीछे मुड़कर पीछे फेंकी बोतल को गोली से उड़ा दिया। ताली की गड़गड़ाहट से आसमान गूँज गया।

हबीबा मुस्कराता हुआ दुर्गासिंह को घूरता रहा।

खेल ख़त्म होने पर हबीबा के मुंह पर दुर्गासिंह का नाम मचल-मचल उठता।

'फ़रीदा, काश मुझे भी दुर्गासिंह का फ़न हासिल होता,' हबीबा सर हिला-हिलाकर कहता रहा।

कोई दस दिन बाद सिद्दी गाँव में मेला और हाट लगी थी। नम्बर पाँच पोस्ट से क़रीब ही था सिद्दी गाँव। दुर्गासिंह अपने घोड़े पर अपने सवार भैरोंसिंह के साथ मेला देखने आया था। चारों ओर खुशी और रंगीला वातावरण था। तभी हबीबा अपने सात-आठ साथियों को लेकर उधर से गुजरा। असलम ने हबीबा को कुहनी मारते हुए कहा, 'सरदार देखो वही काफ़िर दफ़ादार।'

हबीबा ने पलट कर देखा। आज उसने दुर्गासिंह को पास से देखा। तपे तांबे के रंग का दुर्गासिंह हबीबा का मन मोहे ले रहा था। चौड़ा सीना और कसा शरीर। एक अजीब सा खिचाव था दुर्गासिंह में। तभी चट्टान जैसा असलम बोला, 'सरदार, दो-दो हाथ उड़ जाएँ इस शह सवार से।'

हबीबा मुस्करा कर बोला, 'जाओ। बात छेड़ो।'

असलम बनमानुस की तरह झूमता हुआ चल दिया। असलम की बाँहें बटे हुए रस्से जैसी थीं। अभी पिछले महीने उसने अपने घोड़े के लिए रातब को एक लावारिस गधे को खाता देख लिया था। असलम ने क्रुद्ध होकर एक भरपूर लात मारी थी गधे की पसलियों पर। गधा जमीन पर तपड़ने लगा था। भीम जैसा बल था असलम के शरीर में। उसने दुर्गासिंह के घोड़े के आगे आकर कहा, 'अस्सलाम वालेकुम सवार। तुम्हरा बदन देखकर लगता है कि हिन्दुस्तान में भी जवान रहते हैं। हमसे जोर आजमाइश करेगा।'

दुर्गासिंह ने मुस्कराकर कहा, 'हिन्दुस्तान में तुमसे भी सवा गुने वजन

के जवान रहते हैं दोस्त। मैं सवार हूँ, पहलवान नहीं। हाँ अलबत्ता घोड़े की पीठ पर बैठे हुए मैं तुमसे जैसे चाहो लड़ सकता हूँ।'

असलम असमंजस में पड़ गया। उसी वक्त हबीबा आगे बढ़कर बोला, 'दफादार साहिब, हमारा असलम घोड़े की पीठ पर बैठे हुए ही आपसे पंजा लड़ाएगा।'

'मुझे मजूर है,' दुर्गासिंह बोला।

असलम अपने पहाड़ जैसे घोड़े पर बैठकर दुर्गासिंह के सम्मुख आया।

दुर्गासिंह की कलाई और पजा पीतल के कटोरे को बजनी तलवार से काटने के आदी हो गए थे। उसकी कलाई में बिजली भरी हुई थी जबकि असलम की कलाई उसके चट्टान जैसे शरीर का एक अग था। दुर्गासिंह की ताकत का फुर्ती से सम्बन्ध था। देर तक जूझा-जाक्षी का मौका रफ्तार से भागते हुए घोड़े पर कहाँ मिलता था इसलिए उसको समूची एकत्रित की हुई ताकत को कलाई में लाना था और पलक झपकते हुए फुर्ती से काम कर जाना था। असलम इस धोखे में था कि पंजा पहले अगुलियों में फँसेगा और फिर ताकत का प्रदर्शन होगा। दोनों घोड़े बराबर आए और जैसे ही असलम ने अपना फौलादी पंजा दाँत पीसते हुए दुर्गासिंह की तरफ बढ़ाया कि दुर्गासिंह ने बड़ी फुर्ती से उसको आनन-फानन इतनी जोर से मरोड़ा कि असलम पीड़ा को सहन नहीं कर पाया और घोड़े के नीचे आ गिरा। फरीदा यह देखकर सकपका गया। उसने आगे बढ़कर असलम को उठाया तो देखा कि असलम की दो अँगुलियाँ उतर गई हैं और वह दर्द से कराह रहा है। यह देखकर हबीबा के साथियों ने दुर्गासिंह को घेर लिया। पर हबीबा ने डपट कर कहा 'खबरदार, कोई भी इस हिन्दू दफादार पर हाथ नहीं उठाएगा। ईमान की लड़ाई थी और ईमान से ही यह जीता है।' फिर दुर्गासिंह की तरफ प्रशंसा से देखते हुए कहा, 'दोस्त, हम उरकजई कबीले के लोग बहादुर की कद्र जानते हैं। इन्शाअल्लाह, जल्दी ही मैदान में मिलेंगे। अगर मैदान में भी तुमने बहादुरी दिखाई तो तुम्हें मुँह माँगा इनाम भी देने का हम हौसला रखते हैं।'

और फिर देखते ही देखते हबीबा का दल कराहते असलम समेत भीड़ में गायब हो गया।

थोड़े ही दिनवीते होंगे कि नम्वर पाँच पोस्ट पर दुर्गासिंह को मुख़विर ने ख़वर दी कि हवीवा दर्रे के पास दस ख़च्चरों पर लदा ख़ज़ाना और वन्दूक के कारतूस की पेटियाँ छीन ले गया है। सवारों को मार-काट डाला है और कुछ भाग आए हैं।

हवीवा के दल के करीव पैंतीस लुटेरे दर्रे से दूर निकल चुके थे। दुर्गासिंह के पास उस वक्त सिर्फ़ सात सवार थे। वह फौरन ही सातों सवारों को लेकर मुख़विर के साथ चल पड़ा। क़रीव पन्द्रह मील की पथरीली चढ़ाई उतराई को पार करना सहज नहीं था। उसके दो साथियों के घोड़ों ने जवाव दे दिया।

दुर्गासिंह वाकी के पाँचों सवार लेकर ही चल दिया। थोड़ी देर में उसे हवीवा का दल खच्चरों के साथ जाते हुए दिखाई पड़ने लगा। उस समय हवीवा के साथ पैंतीस सवार थे। मुख़विर यह देख कर वोला, 'दफ़ादार साहिव, आपके पाँच जवानों को हवीवा के लुटेरे मूली-गाजर की तरह काट डालेंगे। आज आपके पास वन्दूकें भी नहीं हैं। तलवार और नेज़े की लड़ाई भी आप इतनी नफ़री से नहीं लड़ सकेंगे। मेरा कहा मानो और वापस लौट चलो। ये वहादुरी नहीं है। खुदकुशी है जो आप करने जा रहे हो।'

दुर्गासिंह क्रोध से वोला, 'नसीम मियाँ, हमने राजपूतनियों का दूध पिया है। तुम्हें अगर जान इतनी ही प्यारी है तो यही से राजपूतों की तलवार की खनखनाहट सुनना। तुम्हारा काम मुख़वरी है, हमारा काम जूझना है।'

दुर्गासिंह के पाँचों घुड़सवारों की टाप की आवाज सुनकर पहले तो हवीवा चौंका कि कहीं वड़े रिसाले का हमला तो नहीं हो रहा है। परन्तु जव उसने दुर्गासिंह और उसके साथ पाँच सवार देखे तो वह हँसकर वोला, 'चे खुश, ये तो हमारा वाँका दफ़ादार है और वह भी सिर्फ़ पाँच सवार के साथ।'

दुर्गासिंह ने पास आकर ललकारा, 'हवीव खाँ, मैं सरकार की तरफ़ से तुमसे क़हता हूँ कि दसों सरकारी खच्चर वापस कर दो वरना अंजाम वुरा होगा।'

'वुरा अंजाम!' और हवीवा इतनी जोर से हँसा कि उसकी आँखों से

आँसू निकल पड़े। दुर्गासिंह ने आँखें तरेर कर कहा, 'अच्छा, तो फिर देखो अंजाम।'

वह पाँचों सवार सहित तेज वापस मुड़ गया।

'भाग गया। अंजाम दिखा रहा था,' हँसकर फरीदा बोला।

कोई दो सौ गज की दूरी से दुर्गासिंह ने घोड़ों को वापस मोड़ा और रिसाले के हमले की तरतीब से घोड़े खड़े कर दिए। फिर 'चार्ज' चीखता हुआ दुर्गासिंह अपने पाँचों सवार सहित हबीबा के दल पर टूट पड़ा। पास आकर दुर्गासिंह 'जय भवानी' चिल्लाया और वह साक्षात दुर्गा का रूप बन गया। पहले वार में उसने फरीदा का दाहिना कंधा बर्छे से बेकार कर दिया और बर्छा छोड़कर फिर तलवार सूत ली। असलम की तलवार का हाथ वज्र की तरह गिरा था। दुर्गासिंह ने उसे अपनी तलवार पर रोका और फिर बिजली की भाँति उसकी तलवार असलम के पेट के आर-पार हो गई।

असलम को घोड़े से गिरता देखकर हबीबा दुर्गासिंह पर झपटा। तलवारों की खनखनाहट से मृत्यु का निनाद सुनाई पड़ने लगा। दुर्गासिंह ने बड़ी फुर्ती से हबीबा के बाएँ कंधे पर वार किया। खून का एक फव्वारा-सा छूट पड़ा था। उसी दम वहीदा ने नाक कर बर्छा दुर्गासिंह के ऊपर दाहिनी ओर से फेंका जो दुर्गासिंह के सीने में धँस गया।

कोई पन्द्रह मिनट की लड़ाई से हबीबा के सात साथी मारे गए और कोई दस नाकारा हो गए। हबीबा स्वयं बायाँ कंधा लटकाए अचरज से सब कुछ देखता रहा।

दुर्गासिंह सब पाँचों साथियों के खून से लथपथ जमीन पर अन्तिम साँसें गिन रहा था।

हबीबा कंधा दबाए दुर्गासिंह के पास आया और बोला, 'शाबाश बहादुर, तुम्हारी जिन्दादिली हमारे कबीले को याद रहेगी।'

फिर हबीबा अपने साथी से बोला, 'आरिफ, लाल धागे की लच्छी लाना। इस बहादुर की कलाई पर लाल धागा बाँधा जाएगा। आज इस धागे को बाँधने के काबिल दुश्मन मिला है।'

हबीबा ने मरते हुए दुर्गासिंह की कलाई पर लाल धागा बाँध दिया और

कहा, 'वहादुर दफ़ादार हम सिर्फ वहादुर की कलाई पर लाल धागा वाँधते हैं। तुम्हारी लाश वाइज्जत तुम्हारी चौकी पर भेज दी जाएगी।'

दुर्गासिंह ने धीमे स्वर में कहा, 'सरदार हवीवा खाँ, आपको याद है आपने सिद्दी के मेले में कहा था कि आप लोग वहादुर दुश्मन को इनाम भी देते हो। मैं तुमसे आज इनाम माँगना चाहता हूँ, सरदार। वोलो, दोगे मुझे इनाम ? मेरे पास वक्त वहुत कम है।'

हवीवा ने डवडवाई आँखों से देखा और कहा, 'हाँ, मैंने ये कहा था। वोलो क्या इनाम चाहते हो ?'

दुर्गासिंह वोला, 'ये दसों खच्चर मेरी चौकी पर लौटा देना।' और यह कहकर दुर्गासिंह का सर एक तरफ़ ढुलक गया।

हवीवा ने दुर्गासिंह के सर के कुछ वाल तेज़ धार वाले ख़ंजर से काटे और अपनी जेव में रख लिए।

'तुम्हारी यादगार मेरे पास हमेशा रहेगी, वहादुर।' हवीवा वुदवुदाया।

दूसरे दिन नम्वर पाँच पोस्ट पर दसों खच्चर वापस पहुँच गए थे। दसवें खच्चर पर दुर्गासिंह की लाश रखी थी जो एक सफेद चादर से ढकी हुई थी। मेजर काक्रन ने कफ़न हटाया तो देखा कि मृत दुर्गासिंह की दाहिनी कलाई पर लाल धागा वँधा हुआ था।

मेजर काक्रन ने अपना टोप उतार लिया। उसकी आँखों से आँसू दुर्गासिंह के मृत शरीर पर टपक पड़े।

हवीवा का वायाँ कंधा काफी घायल हो गया था। उसके दल का इतना वड़ा नुकसान कभी नहीं हुआ था। असलम मर चुका था। छः और पुराने तजुर्वेकार लुटेरे खेत रहे। हवीवा ने वहीद खाँ के कंधे पर हाथ रख कर कहा, 'वहीदा, तुम अगर दफ़ादार पर वर्छी नहीं फेंकते तो यकीनन वह मुझ पर

शामिल हो जाता। तुम्हारा शुक्रिया कैसे अदा करूँ? पर वहीदा भाई, वहाँ जो फेंकी गई वह उलझते हुए बेख़बर दुश्मन पर ही फेंकी गई। यह बहादुरी की बात नहीं हुई। पर अगर तुम ये काम अंजाम नहीं करते तो हो सकता है आज हबीब खाँ भी नहीं बच पाता। दफादार दुर्गासिंह की सूरत मेरे दिल पर नक्श हो गई है। जिन्दगी में उस बहादुर को नहीं भूल पाऊँगा। और हाँ, तुम्हारा अहसान भी मैं कभी नहीं भूल पाऊँगा।'

वहीदा सर झुका कर बोला, 'सरदार, आप सही कहते हैं। काफिर बहादुर को जिस तरीके को अख्तियार करके मैंने मारा वह एक शर्मनाक वाकया ही कहा जाएगा क्योंकि वह उस वक्त आमने सामने दो-दो हाथ कर रहा था। पर सरदार की जिन्दगी को बचाना मेरा भी फर्ज़ अव्वल था। और लड़ाई और मुहब्बत में कुछ भी जायज और नाजायज नहीं होता।'

हबीबा ने सर हिलाकर कहा, 'तुम सजा कह रहे हो,वहीदा, मैं तुम्हारा हमेशा कर्जदार रहूँगा।'

वहीदा ने बढ़कर हबीबा का हाथ चूम लिया। तुर्रे खाँ ने जब अपने बेटे को खून से लथपथ देखा तो वह एक क्षण को स्तब्ध रह गया। फिर उसने पूरा वाकया सुना। हबीबा के पास आकर वह बड़े स्नेह से बोला, 'मुझे तुम पर नाज़ है हबीबा जो तुमने बहादुर दुश्मन की इज्जत अफ़ज़ाई की। तुम्हारा जो ये खून निकला है वह रंग लाएगा बेटे। खून बहादुर का जेवर होता है। मुझे ऐसा लग रहा है जैसे मेरा बेटा हबीब खाँ कुदरत का जेवर पहन कर मेरे रूबरू आया हो।'

तुर्रे खाँ ने हबीबा का माथा चूम लिया था। और फिर हकीम को बुलवाया गया और मरहम-पट्टी शुरु कर दी गई।

हबीबा के घायल होने की कहानी गुगुफ़ज़ई कबीले में भी पहुँच गई। सरदार गुलाब खाँ ने आँगन में हुक्का पीते वक्त गुलफाम से कहा, 'बेटे गुलफाम, सुनते हैं तुर्रे खाँ का बेटा हबीब खाँ सरकारी रिसाले की झड़प में घायल हो गया है। मेरा मंशा है तुम उसे देख आओ।'

महजबीं ने जब यह सुना तो सीना धक् कर के रह गया। उसकी आँखों के कटोरे भर गए पर छलक नहीं पाए। वह अपने आँसू पी गई पर दिल में उठ रही बगावत को नहीं दबा सकी। हबीबा को देखने को वह स्वयं छटप-

पटाने लगी पर हया की बंदिश की हथकड़ी को वह नहीं तोड़ सकी।

जब गुलफ़ाम चलने को तैयार हुआ था तब महजबीं ने धीमे स्वर में कहा था, 'भाई जान, उन्हें मेरा सलाम भी कह दीजिएगा और साथ ये भी कि मैं उनकी खैरियत की नमाज़ आज से पाँचों वक्त अदा करूँगी।' गुलफ़ाम ने अपनी बहन के थरथराते ओठों पर खामोश मुहब्बत की फरियाद मचलते देखी। गुलफ़ाम भी सीने में दिल रखता था। उसने महजबीं के कंधे पर हाथ रख कर कहा, 'हौसला रखो महजबीं, अगर तुम्हारी हमदर्दी सच्ची होगी तो हबीब खाँ की ज़िन्दगी पर वह एक ढाल की तरह छाई रहेगी।'

महजबीं की आँखों से दो मोती जैसे आँसू टपके जो ज़मीन पर गिर कर बिखर गए।

गुलफ़ाम बोला, 'मैं हबीबा को यह भी बतलाऊँगा महजबीं कि तुमने उसकी खैरियत के लिए दो अनमोल आँसू भी नज्र किए हैं।'

फिर गुलफ़ाम घोड़े पर बैठकर चल दिया।

हबीबा कंधे पर पट्टी बाँधे पेड़ के नीचे बैठा था। गुलफ़ाम को देखकर वह मुस्करा कर बोला, 'सलाम वालेकुम, गुलफ़ाम भाई। खैरियत तो है?'

गुलफ़ाम घोड़े से उतरता हुआ बोला, 'वालेकुम अस्सलाम सरदार, आपने मेरा सवाल चुरा लिया।'

हबीबा हँसा और उसने उठकर गुलफ़ाम से हाथ मिलाया।

'ज्यादा चोट तो नहीं आई?' गुलफ़ाम ने कहा।

'ये चोट नहीं है गुलफ़ाम', हबीबा बोला, 'यह एक बहादुर दुश्मन की निशानी है जो मरते दम तक मेरे पास रहेगी। उसकी सूरत और कारनामे मुझे बचपन की तरह याद रहेंगे। हार-जीत तो ज़िन्दगी के दो अनमोल मौसम है गुलफ़ाम। असल चीज़ तो ये है कि हार हुई या जीत पर वो आई किस अदा के साथ। दफ़ादार दुर्गासिंह मरकर भी मुझसे जीता। मैं जिन्दा रह कर भी उससे हारा। उसकी हिम्मत और पानी के पाँच साथी हों तो वह पचास के मुकाबिले में काफी होंगे।'

गुलफ़ाम ने ग़ौर से हबीबा की ओर देखा और कहा, 'सरदार हबीब खाँ, मुझे नाज़ है कि मैं एक ऐसे दोस्त के सामने खड़ा हूँ जिसके दामन में बहादुरी के अलावा आला क़िरदार भी भरा हुआ है। दुश्मन की बहादुरी

की परख करने वाले बहुत कम जौहरी रह गए हैं आज ।' और गुलफ़ाम ने हबीबा का दाहिना हाथ अपने सर से लगा लिया। पास बैठे मुबारिक खां से हबीबा ने कहा, 'मुबारिक, अम्मी से अन्दर जाकर कह दो कि हमारे दोस्त गुलफाम खां आए हैं। कुछ खाने-पीने का इन्तजाम कर दो।'

मुबारिक के उठते ही गुलफ़ाम ने सर झुकाकर धीमे से कहा, 'तुम्हारे घायल होने की खबर अब्बाजान ने सुनाई और ताकीद भी की जाकर खैरियत पूछी जाए। इसके अलावा चलते वक्त महजबीं भी बहुत परेशान थी। उसकी अस्मत तुमने बचाई थी हबीबा खां। मेरी जिन्दगी भी तुम्हारे पास रेहन रखी है।'

हबीबा बोला, 'ऐसा मत बोलो गुलफ़ाम, वर्ना ये दुनिया वाले इन्सानियत और अहसान को भी बेचना शुरू कर देंगे। फर्ज को अहसान का जामा पहनाना फक़त शराफत का तक़ाज़ा है। हक़ीक़त ये है कि फर्ज इन्सान की एक फितरत के अलावा और कुछ भी नहीं है।'

गुलफ़ाम बोला, 'अहसान को इन्सानी फर्ज मानने वाले बन्दे अब बहुत कम रह गए हैं। तुम जैसे बन्दे जो दो-चार नज़र आते हैं वे कुदरत के गरूर के मानिंद हैं।'

हबीबा ने गुलफ़ाम को गले से लगा लिया। गुलफाम बोला, 'महजबीं ने चलते वक्त दो आंसू ज़मीन पर टपकाए थे हबीब खां। हमदर्दी की औलाद मुहब्बत होती है ऐसा हमारे बुजुर्ग कहते आए हैं। महजबीं की इस खोराजे अक़ीदत को मैं तहे दिल से कबूल करता हूं।'

हबीबा बोला, 'मेरा सलाम उसे कहना गुलफाम। ये भी कहना कि मैं ठीक हूं और बिल्कुल ठीक होने पर एक दिन अपने अब्बाजान सरदार गुलाब खां को आदाब अर्ज करने भी आऊंगा।'

मुबारिक लौटकर दोनों को बुलाकर अंदर ले गया। कबाब और बाकरखानी रोटी सामने रखे थे। गुलाब के शरबत की सुराही बगल में रखी थी।

गुलफ़ाम खाकर ही चुका था कि हबीबा के अब्बा सरदार तुर्रे खां गंखारते हुए अंदर आ गए। सलाम दुआ के बाद तुर्रे खां ने गुलफ़ाम के

पटाने लगी पर हया की बंदिश की हथकड़ी को वह नहीं तोड़ सकी।

जब गुलफ़ाम चलने को तैयार हुआ था तब महजवीं ने धीमे स्वर में कहा था, 'भाई जान, उन्हें मेरा सलाम भी कह दीजिएगा और साथ ये भी कि मैं उनकी खैरियत की नमाज़ आज से पाँचों वक्त अदा करूँगी।' गुलफ़ाम ने अपनी बहन के थरथराते ओठों पर खामोश मुहब्बत की फरियाद मचलते देखी। गुलफ़ाम भी सीने में दिल रखता था। उसने महजवीं के कंधे पर हाथ रख कर कहा, 'हौसला रखो महजवीं, अगर तुम्हारी हमदर्दी सच्ची होगी तो हबीब खाँ की ज़िन्दगी पर वह एक ढाल की तरह छाई रहेगी।'

महज़वीं की आँखों से दो मोती जैसे आँसू टपके जो ज़मीन पर गिर कर बिखर गए।

गुलफ़ाम बोला, 'मैं हबीबा को यह भी बतलाऊँगा महजवीं कि तुमने उसकी खैरियत के लिए दो अनमोल आँसू भी नज्र किए हैं।'

फिर गुलफ़ाम घोड़े पर बैठकर चल दिया।

हबीबा कंधे पर पट्टी बाँधे पेड़ के नीचे बैठा था। गुलफ़ाम को देखकर वह मुस्करा कर बोला, 'सलाम वालेकुम, गुलफ़ाम भाई। खैरियत तो है?'

गुलफ़ाम घोड़े से उतरता हुआ बोला, 'वालेकुम अस्सलाम सरदार, आपने मेरा सवाल चुरा लिया।'

हबीबा हँसा और उसने उठकर गुलफ़ाम से हाथ मिलाया।

'ज्यादा चोट तो नहीं आई?' गुलफ़ाम ने कहा।

'ये चोट नहीं है गुलफ़ाम', हबीबा बोला, 'यह एक बहादुर दुश्मन की निशानी है जो मरते दम तक मेरे पास रहेगी। उसकी सूरत और कारनामे मुझे बचपन की तरह याद रहेंगे। हार-जीत तो ज़िन्दगी के दो अनमोल मौसम है गुलफ़ाम। असल चीज़ तो ये है कि हार हुई या जीत पर वो आई किस अदा के साथ। दफ़ादार दुर्गासिंह मरकर भी मुझसे जीता। मैं जिन्दा रह कर भी उससे हारा। उसकी हिम्मत और पानी के पाँच साथी हों तो वह पचास के मुकाबिले में काफी होंगे।'

गुलफ़ाम ने ग़ौर से हबीबा की ओर देखा और कहा, 'सरदार हबीब खाँ, मुझे नाज़ है कि मैं एक ऐसे दोस्त के सामने खड़ा हूँ जिसके दामन में बहादुरी के अलावा आला क़िरदार भी भरा हुआ है। दुश्मन की बहादुरी

की परख करने वाले बहुत कम जौहरी रह गए हैं आज ।' और गुलफ़ाम ने हबीबा का दाहिना हाथ अपने सर से लगा लिया। पास बैठे मुबारिक खाँ ने हबीबा ने कहा, 'मुबारिक, अम्मी से अन्दर जाकर कह दो कि हमारे दोस्त गुलफ़ाम खाँ आए हैं। कुछ खाने-पीने का इन्तजाम कर दो।'

मुबारिक के उठते ही गुलफ़ाम ने सर झुकाकर धीमे से कहा, 'तुम्हारे घायल होने की खबर अब्बाजान ने सुनाई और ताकीद भी की जाकर खैरियत पूछी जाए। इसके अलावा चलते वक्त महजबी भी बहुत परेशान थी। उसकी अस्मत तुमने बचाई थी हबीबा खाँ। मेरी जिन्दगी भी तुम्हारे पास रेहन रखी है।'

हबीबा बोला, 'ऐसा मत बोलो गुलफ़ाम, वर्ना ये दुनिया वाले इन्सानियत और अहसान को भी बेचना शुरू कर देंगे। फर्ज को अहसान का जामा पहनाना फकत शराफत का तकाजा है। हकीकत ये है कि फर्ज इन्सान की एक फितरत के अलावा और कुछ भी नहीं है।'

गुलफ़ाम बोला, 'अहसान को इन्सानी फर्ज मानने वाले बन्दे अब बहुत कम रह गए हैं। तुम जैसे बन्दे जो दो-चार नजर आते हैं वे कुदरत के गहर के मानिंद हैं।'

हबीबा ने गुलफाम को गले से लगा लिया। गुलफाम बोला, 'महजबी ने चलते वक्त दो आँसू जमीन पर टपकाए थे हबीब खाँ। हमदर्दी की औलाद मुहब्बत होती है ऐसा हमारे बुजुर्ग कहते आए हैं। महजबी की इस नौराते अकीदत को मैं तहे दिल से कबूल करता हूँ।'

हबीबा बोला, 'मेरा सलाम उन्हें कहना गुलफाम। ये भी कहना कि मैं ठीक हूँ और बिल्कुल ठीक होने पर एक दिन अपने चचाजान सरदार गुलाब खाँ को आदाब अर्ज करने भी आऊँगा।'

मुबारिक लौटकर दोनों को बुलाकर अंदर ले गया। कबाब और बाकरखानी रोटी सामने रखे थे। गुलाब के शरबत की सुराही बगल में रखी थी।

गुलफाम खाकर ही चुका था कि हबीबा के अब्बा सरदार तुर्रे खाँ खँखारते हुए अंदर आ गए। सलाम दुआ के बाद तुर्रे खाँ ने गुलफाम के

क़बीले की खैरियत पूछी और बोले, 'बेटे गुलफ़ाम, हबीबा को मैंने अपनी पगड़ी बाँध दी है ये तो तुम्हारे अब्बा को पता लग ही गया होगा। अब मैं बूढ़ा हो चला हूँ। बुढ़ापे का आना ख़ुदा का बन्दे को याद दिलाना है कि अब कुछ वक्त इबादत में भी गुजार ले।'

गुलफ़ाम बोला, 'पर चचाजान, बुजुर्गों का सर पर साया ख़ुदा के रहम का असर रखता है। हबीब खाँ अभी जिन्दगी की चौखट तक नहीं आए हैं। आपके तजुर्बे, आपकी सलाह, आपकी दुआएँ—ये सब ही तो इनकी ज़िन्दगी को सँवारेंगे।'

सरदार तुर्रे खाँ सुनकर खुश हुए, 'तुम्हारी अक़ीदत और इज्ज़त अफ़-जाई सुनकर अहसास होता है कि तुम्हारे अंदर सरदार गुलाब खाँ जैसे जाँबाज़ यूसुफज़ई का ख़ून बोल रहा है।'

इसके बाद ही सरदार तुर्रे खाँ अंदर चले गए। थोड़ी देर बैठकर गुलफ़ाम ने इजाज़त माँगी।

हबीबा उसे घर के बाहर तक छोड़ने आया और हाथ मिलाते वक्त बोला, 'चचाजान को मेरा आदाब अर्ज़ करना। महजबीं को तसल्ली दिलाना कि मैं ठीक हूँ। उन्हें ये भी बताना कि उनका ख्याल मेरे लिए हिफाजत का एक जिरह-बख़्तर है। जब तक उनका ख्याल मुझे रहेगा किसी भी दुश्मन की गोली या तलवार मेरी जान नहीं ले सकेगी।'

हबीबा ने गुलफ़ाम से विदाई ली। बड़ी देर तक वह गुलफ़ाम के भागते हुए घोड़े को देखता रहा। फिर उसने आसमान की ओर देखा। उसे महज़बीं का चाँद-सा मुखड़ा आसमान के दामन में नजर आया। वह मुस्कराया और बुदबुदाया, 'महजबीं, तुम्हारी आँखों में मेरे लिए आँसू आए थे। उन दो आँसुओं की क़ीमत मैं अदा जरूर करूँगा, महजबीं, अदा ज़रूर करूँगा।

मेजर काक्रन ने दुर्गासिंह की चिता जलते समय अपने रिवाल्वर से दो फायर किए थे। फिर दाँत पीसकर बोला था, 'दुर्गासिंह तुम वेमिसाल बहादुर थे। मुझे खुशी है कि तुम्हारी बहादुरी को दुश्मन तक ने तसलीम किया। मैं इस हबीबा से तुम्हारा बदला लूंगा।' और मेजर काक्रन ने दाँत पीसकर मुट्ठी बाँधते हुए ऊपर देखा था।

'मैं इस हबीबा को पकडूंगा, जिन्दा या मुर्दा। मैं इस हबीबा को मैदान में गिरफ्तार करूँगा।' और मेजर काक्रन ने अपने रिवाल्वर को चूम लिया। रात को अफसर मैस में मेजर काक्रन जाम पर जाम खाली करते रहा था। बार-बार वह दुर्गासिंह और हबीबा का ही नाम ले रहा था। काक्रन को नशा होने लगा था। सात-आठ पेग के बाद वह लड़खड़ाता हुआ उठा और बोला, 'मैं अपने कन्धे पर लगे इन ताज की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं हबीबा को या तो जिन्दा पकड़ूंगा या मैदान में मारूँगा।'

कुछ अफसरों ने उसे सँभाला। उन अफसरों में कैप्टिन जेम्स भी था। मेजर काक्रन के कन्धे पर हाथ रखकर वह बोला, 'मेजर काक्रन, सर, क्या आपने हबीबा को देखा है?'

चौंककर काक्रन बोला, 'नहीं! पर जल्दी ही देखूँगा।' जेम्स हँसकर बोला, 'आपका दफादार दुर्गासिंह एक बहादुर लड़ाका था ये मैं कबूल करता हूँ। हबीबा बहादुरी का मँजा हुआ जौहरी है। उसने दमो खच्चर और दफादार की लाश इसीलिए वापस की थी शायद। मैंने हबीबा को देखा है, उससे हाथ मिलाया है, बातें की हैं। यकीन मानिए, हबीबा बहादुर लड़ाकू के अलावा एक 'जेंटलमैन' भी है।' काक्रन ने नशे की झुनक में उसे घूरकर देखा। जेम्स आँखें झपककर मुस्कराया और बोला, 'यस सर, हबीबा एक बढ़िया इनसान भी है। वह तरह-तरह से वार करता है। हथियार से भी और शराफत से भी। उसकी शराफत का वार बहुत गहरा घाव करता है, ऐसा मेरा तजुर्बा है।'

काक्रन सर हिलाता हुआ बोला, 'ये भी देखूँगा जेम्स, ये भी देखूँगा।'

दूसरे दिन अफसर मैस की यह बात सारे पेशावर में फैल गई। मेजर काक्रन ने अर्जुन जैसी प्रतिज्ञा की थी जो आग की तरह फैल गई।

मैस से जबर खाँ उसी दिन छुट्टी लेकर गया था। उसी ने घायल

हबीबा को मेजर काक्रन की प्रतिज्ञा के बारे में कहा।

हबीबा बोला, 'मालूम पड़ता है कि अब की बार हिन्दुस्तान से वाक़ई बहादुरों का रिसाला आया है। जबर खाँ चचा, मुझे ठीक हो जाने पर इस साहब को कभी दिखाना। कम से कम अपने इस अजीज़ दुश्मन की शक्ल तो दिल में उतर ही जानी चाहिए।'

और बीस दिन बाद हबीबा करीब-करीब बिल्कुल ही चंगा हो गया था। उसे दो वायदे निभाने थे। एक तो महजबीं के पास जाना था और दूसरे जबर खाँ के पास जाकर मेजर काक्रन को देखना था।

सबसे पहले हबीबा ने काक्रन को देखना चाहा। और दूसरे ही दिन उसने जबर खाँ को ख़बर पहुँचवा दी। जबर खाँ हबीबा को 'मैस' के मसालची के भेष में ले गया था। जब दौर पर दौर चल रहे थे तो जबर खाँ ने मौका देखकर हबीबा को मेजर काक्रन को दूर से दिखलाया था।

मेजर काक्रन छः फुटा जवान था। बड़ी-बड़ी भूरी मूछें और गहरी नीली आँखें हबीबा को भली लगीं। उसकी पेशानी पर चोट का निशान था जिसके बारे में सब अफ़सर जानते थे कि चोट उसे नेज़े से चीते का शिकार करते वक्त लगी थी। हबीबा उसे दूर से आँखों ही आँखों में निगलता रहा।

'चे खुश, बहादुर दफ़ादार का अफ़सर भी उसी तरह सजीला लगता है।' हबीबा बोला और फिर चल दिया था।

कुछ ही दिन बाद पेशावर के नजदीक हिन्दू फ़कीर सखी सरवर की यादगार में झण्डा मेला लगता था। हिन्दू और मुसलमान दोनों ही आते थे। कुछ नये-नये आए अंग्रेज अफ़सर भी अपनी मेम को लेकर मेला देखने आते थे। चारों तरफ़ हाट की दुकानें, रहट, चक्कर, फल और मिठाइयों की दुकानें लगी थीं। हबीबा भी अपने सात-आठ साथियों के साथ सखी सरवर की समाधि पर मन्नत माँगने आया था। लौटते वक्त वह अपने साथियों के साथ मिठाई और चाट खाकर खुश हो रहा था कि सहसा उसे सामने से मेजर काक्रन और उसकी मेम आते दिखाई पड़ गए। हबीबा ने चाट का पत्ता छोड़ दिया और अपने साथियों को लेकर बड़ी तेज़ी से बढ़ा और अंग्रेज जोड़े को घेर लिया। काक्रन की कमर में उसका रिवाल्वर लटक रहा था।

हृचीवा ने चीते की फुर्ती से काफ़न का रिवाल्वर निकाल कर अपने कब्ज़े में कर लिया। मेजर काफ़न और उसकी मेम सकते में आ गए।

'सलाम साहब,' हृचीवा बोला, 'मुझे खूब पहचान लीजिए। मेरा ही नाम हृचीवा है।'

खड़ा-खड़ा हृचीवा मुस्कराने लगा। काफ़न उस वक्त सात-आठ पठानों से घिरा था। उसकी मेम की ज़ुबान गूंग गई। उसने सुन रखा था कि सरहदी पठान मेमों को पकड़ कर ले जाते हैं और फिर भारी रकम लेकर ही छोड़ते हैं।

हृचीवा ने काफ़न के रिवाल्वर से छहों कारतूस निकाल लिए और रिवाल्वर मेजर काफ़न की ओर वापस बढ़ाता हुआ बोला, 'घबराइए मत साहब, मैं बहादुरों की कद्र करता हूं। आपका मातहत वफ़ादार दुर्गासिंह भी एक ऐसा बहादुर था जिसकी सूरत मेरे दिल पर हमेशा नक्श रहेगी। सुना है आप भी बहादुर हैं। आपको हृचीवा को जिन्दा या मरा पाने की बड़ी तमन्ना है। आपको बहादुर समझ कर ही मैं आपका हथियार वापस कर रहा हूं। पर ये छः कारतूस रखे ले रहा हूं। इन्शाअल्लाह, जल्द ही मैदान में आपके इन्हीं छ: कारतूसों में से किसी एक से आपको मारूंगा। सलाम!'

और आनन-फानन हृचीवा ने मेजर काफ़न के हाथ में उसका रिवाल्वर पकड़ा दिया और छ: कारतूस मुट्ठी में बन्द करके अपने साथियों के साथ भीड़ में खो गया।

मेजर काफ़न हक्काबक्का-सा देखता रहा। उसकी पत्नी की जान में जान आई। काफ़न ने रिवाल्वर पेटी में रखा और धीरे से बुदबुदाया —

'हृचीवा ने मुझे निमन्त्रण दिया है, यूरेटा। मैं उसकी ये दावत कबूल करता हूं।'

और मन में बेचैन तूफ़ान बसाए काफ़न लौट आया। दूसरे दिन उसने अपने स्क्वाड्रन के चुनींदा सवार लिए और वह पागल प्रेमी की तरह 'हृचीवा, हृचीवा, किधर है हृचीवा!' चिल्लाता हुआ दर्रे के आस-पास गांव छानने लगा।

तीसरे दिन मुख़बिर ने ख़बर दी कि हृचीवा अपने साथियों के साथ दर्रे

के दक्षिण में ताक लगाए बैठा है। शायद पल्टन की रसद का खच्चरों का काफ़िला आ रहा है। काक्रन सुनते ही अपने तीस सवारों के साथ उधर मुड़ गया। जब वह दर्रे से उतर रहा था तभी हबीबा के निगहबान ने राइफ़ल उठाकर हबीबा को आगाह किया। हबीबा के साथ करीब बीस साथी थे। उसने फ़ौरन ही मुठभेड़ का इरादा कर लिया। हबीबा की बाँह अभी भी कसकती थी, पर वह बड़े जीवट का आदमी था। वह जमा रहा।

मेजर काक्रन की टोली पर पहला फायर अफज़ल ने किया था। गोली सवार के घोड़े की अगली टाँग पर लगी थी जिससे घोड़ा और सवार दोनों ही गिर पड़े थे। मेजर काक्रन सुलझा हुआ लड़ाकू था। उसने फौरन अपनी टोली को दो हिस्सों में बाँट दिया और घेरा बनाते हुए आगे बढ़ता रहा। कुछ ही मिनट बाद गोलियों की सनसनाहट से वादी गूंजने लगी। ऐसा लगता था मानो मौत भनभना कर अपना गीत गाने लगी हो। और फिर मेजर काक्रन के रिसाले की टुकड़ी ने धावा बोल दिया।

हबीबा के चार साथी काम आए और उसका दोस्त अफ़जल उसके सामने ही घूम कर गिरा और हमेशा को शान्त हो गया। चारों ओर पत्थर के टुकड़े उड़ रहे थे। धूल उड़ने से ठीक दिखाई भी नहीं दे रहा था। हबीबा ने जल्दी से अपने दोस्त अफ़जल की लाश को घोड़े पर डाला और लम्बी सीटी बजाई। उसके साथी इशारा समझ गए थे। उनका पलड़ा भारी नहीं था शायद। इसलिए सबको चारों दिशा में फूट कर शेख इमामदीन के मज़ार के पास वाले नाले में मिलना था। गोलियों की बौछार सावन की बारिश की तरह तेज़ हो गई और फिर घोड़ों की भाग-दौड़ चारों तरफ घबराहट फैलती हुई शुरू हो गई।

मेजर काक्रन को ऐसा महसूस हुआ कि उसकी बाँह में किसी ने बर्फ़ जैसी ठंडी कील घुसा दी हो। इसके बाद ही उसकी बाँह सुन्न पड़ने लगी। काक्रन समझ गया कि गोली ने उसकी बाँह की हड्डी को तोड़ डाला है। बाँह पर एक लाल रंग का ख़ामोश सोता-सा फूटने लगा। खून तेज़ी से बहने लगा और तभी उसका घोड़ा चमक गया। बेहाल से काक्रन को लेकर घोड़ा न जाने किस ओर भाग रहा था। काक्रन ने चिल्लाने की कोशिश की पर उसकी आवाज़ न जाने क्यों इतनी कमजोर हो गई थी कि वह ख़ुद भी

उसे नहीं सुन सका। कानन को अब चक्कर-सा आने लगा था। उसे इतना होश था कि वह पहाड़ की उतराई पर अब एक मैदान में जा रहा था। तभी घोड़े को ठोकर लगी और कानन संभल नहीं सका। वह धड़ाम से गिर पड़ा और उसका सर एक पेड़ से टकराया। कानन को एक बहुत बड़ा काला सूरज नज़र आया जो उसे मुंह फाड़े निगलने को बढ़ रहा था। इसके बाद कानन को नहीं मालूम हुआ क्या हुआ। उसका घोड़ा न जाने किस मंजिल की ओर भागा जा रहा था।

जब कानन ने आंख खोली तो उसे लगा जैसे कोई उसे पानी पिला रहा है। उसने ठीक ही सोचा था। वह किसी कबीले के पास वाले कुएं के पास गिरा था और जो उसे पानी पिलाकर उसके सर पर हाथ फेर रहा था वह कोई औरत थी। उसकी ज़बान कानन नहीं समझ पाया पर उसने पीड़ा के भार से दबी पलकों को उठाकर उसे देखा। कोई बूढ़ी औरत थी। उसका हाथ बड़े स्नेह से कानन के सर पर फिर रहा था। कानन को लगा जैसे पवित्र माँ मरियम उसे दुलार कर रही हो।

बुढ़िया गुगरा खानम थी। हबीबा की बूढ़ी माँ।

'तुम घायल हो मेरे बच्चे,' उसने कानन से कहा, 'चलो, मेरे यहाँ चलो। तुम्हें इम्दाद की सख्त ज़रूरत है।' और कानन को गुगरा ने आसानी से उठा लिया और कबीले में पहुँची।

सरदार तुर्रे ख़ाँ ने सबसे पहले अपनी बीवी को एक जवान आदमी को ढोते देखा। उसने फौरन उठकर दो आदमियों को भेजा। गुगरा बोली, 'इसे हिफ़ाज़त से ले चलो। ये घायल है।'

दोनों पठानों ने कानन को जब उठाया तो वे बोले, 'अम्मी जान, ये तो अंग्रेज है।'

गुगरा कड़क कर बोली, 'ये हमारे कबीले का मेहमान है समझे ?'

दोनों पठान सहम गए। कानन को उठाकर वे सरदार तुर्रे ख़ाँ के पास ले आए। गुगरा पीछे-पीछे चल रही थी। तुर्रे ख़ाँ ने भारी आवाज़ से कहा, 'कौन है यह।'

इससे पहले कि पठान बोलते गुगरा बोली, 'किसी बूढ़ी औरत की गोद की उम्मीद है। इस वक़्त मैं इस बच्चे को अपने कबीले के मेहमान की

हैसियत से लाई हूँ।'

तुर्रे खाँ मूँछों पर ताव लेकर बोला, 'बीबी, तुम्हारा मेहमान है तो हम सब का भी मेहमान है।' और फिर एक पठान से बोला, 'जल्दी से हकीम साहब को बुला लाओ। पानी गर्म कराओ बेगम, इसके गोली लगी है।'

देखते ही देखते पेड़ के नीचे एक भगौने में खौलता पानी आ गया। हकीम के साथ जर्राह भी अपनी जड़ी-बूटी का बक्सा लेकर आया था। हकीम ने एक दवा रूमाल पर लगा कर काक्रन को सुँघाई जिसके सूँघते ही उस पर तारों भरी रात के नजारे छाने लगे। थोड़ी ही देर में वह एक जिन्दा लाश भर रह गया। कोई पन्द्रह मिनट लगे थे उस जर्राह को गोली निकालने में। मलहम-पट्टी करके हाथ बाँध दिया था। हल्दी, जाफ़रान और अंगूर की दो-आतशी शराब मिला गर्म-गर्म दूध जब काक्रन को पिलाया गया तो उसकी चेतना पर छाए काले बादल छँटने लगे। उसे उम्मीद का एक जुगनू नजर आया जो सूर्य की भाँति सहसा बढ़ने लगा और आशा का प्रकाश काक्रन की आँखों के सामने फैलने लगा।

काक्रन ने देखा कि उसके चारों ओर क्रूर निगाह वाले पठान बैठे हैं। हबीबा के बूढ़े बाप ने उसका कंधा थपथपाया और मुस्करा कर बोला, 'डरो मत साहब। तुम हमारे खास मेहमान हो। इस कबीले के सरदार की माँ के मेहमान हो। इस कबीले के बुजुर्ग सरदार की बीबी के मेहमान हो।'

तुर्रे खाँ यह कह कर ही चुका था कि सामने से एक धूल का बादल दिखाई देने लगा। सबने उधर देखा। सरदार तुर्रे खाँ समझ गया कि हबीबा वापस आ रहा है। धूल का आवरण झीना हो चुका था। सबने ही देखा कि हबीबा एक लाश को अपने घोड़े पर रखे था। उसके पीछे और साथी भी थे। हबीबा की [illegible] थीं। उसके दोस्त असलम और फरीदा पहले ही मारे गए थे। [illegible] गया [illegible] को अकेलापन-सा

की चौखट पार करती हुई कड़क कर बोली, 'तुम्हें मैं लाई कबीले में। और यह मेरे घर का खास मेहमान है।'

हबीबा का मुंह आश्चर्य से खुला रह गया। उसने अपने अब्बा की तरफ आंखों से ही अपना खामोश सवाल किया। नुरे खाँ ने मुस्करा कर सर हिला दिया।

हबीबा ने आस्तीन के कोने से अपनी आंख के आंसू पोंछे। फिर साथियों से बोला —

'अफजल को दफनाने की तैयारी करो। इसके बाद रात को कबीले के मेहमान की दावत होगी। ये अंग्रेज अफसर हमारे खानदान का खास मेहमान है।'

हबीबा की मां ने हबीबा को बड़े गर्व से देखा और फिर अन्दर चली गई।

फाक्स ने जब हबीबा को देखा तो उसने देखना शुरू कर [illegible] वह अब समझ चुका था कि वह अपने खास दुश्मन हबीबा के कबीले [illegible] है। वह निराश हो चुका था पर जब हबीबा ने आकर उसके [illegible] पर हाथ रख कर कहा, 'मेजर साहब आप हमारे मेहमान [illegible] तीरि-यत हमारा फर्ज बन गया है। आप जब तक ठीक नहीं [illegible] इस कबीले में दोस्त की तरह रहेंगे। ठीक होने के बाद हम [illegible] नीचे की सरहद के पार छोड़ आएँगे। याद रखिए, सरहद [illegible] ही आप फिर हमारे खास दुश्मन बन जाएँगे।'

फाक्स आश्चर्य से देखता रहा। उसे [illegible] विश्वास नहीं हो रहा था।

अफजल को जब कब्र में उतार [illegible] आंखें डबडबा रही थीं। सब से पहले मुट्ठी भर खाक [illegible] उसके [illegible] को मिट्टी में बन्द कर दिया [illegible]

शाम को ही अपने [illegible] उसके [illegible] पास वाले मैदान [illegible] हबीबा के बगल में बैठा [illegible] हबीबा ने मेहमान [illegible]

कीजिए। एक कमी के लिए माफ़ी चाहता हूँ। आज गाना-बजाना न हो सका। मेरा बचपन का दोस्त अफ़जल आज आपके दस्ते के साथ मुठभेड़ में अल्लाह को प्यारा हो गया है।'

मेजर काक्रन हबीबा की ओर टकटकी बाँधे देखता रहा और बोला, 'सरदार हबीबा खाँ, मैंने सुना ही सुना था कि पठान मैदान में धोखेबाज दुश्मन और अपने घर पर मेहरबान दोस्त होता है। मैं आपको ही नहीं आपके पूरे कबीले को सलाम करता हूँ। आप लोग बहादुर हैं, खान। ये मैं तस्लीम करता हूँ।'

और फिर मेजर ने भुने हुए बकरे को छुरी से काटना शुरू कर दिया। उस वक्त मेजर काक्रन को ऐसा लगा जैसे वह अपने दोस्तों के साथ बैठा हो। हँसी-मजाक भी हुआ पर कुछ दबा-सा हुआ। मेजबान का जिगरी-दोस्त जो आज मारा गया था।

काक्रन जल्दी ही माफ़ी माँग कर उठ खड़ा हुआ था। वह जानता था कि माहौल के प्याले में गम और खुशी की शराब सिर्फ उसकी वजह से उसके मेजबान मिला रहे हैं।

उधर जब स्क्वाड्रन इकट्ठा हुआ तो तीन सवारों की लाशें पड़ी हुई मिली थीं पर कहीं भी न मेजर काक्रन का पता था और न ही उसके घोड़े का। रिसालदार भगवानसिंह ने बागडोर सँभाली और फिर आसपास मेजर काक्रन को ढूँढ़ते रहे। करीब दो घंटे बाद रिसाले की टुकड़ी गम्भीर सोच में डूबी हुई परेशान लौट पड़ी।

वापस आकर जब काक्रन के गुम के होने की रिपोर्ट ऊपर पहुँची तो एक गमगीन सन्नाटा छा गया था। काक्रन की बीवी यूरेटा दहाड़ मार-मार कर रो रही थी। उसका छोटा लड़का डैनियल हैरत से बिलखती हुई अपनी माँ को देख रहा था।

सरकारी तबका गहरे सोच में पड़ गया था। काक्रन मर गया या जिन्दा है, सब यही अटकल लगा रहे थे। यूरेटा को तसल्ली दिलाते हुए कैप्टिन जेम्स ने कहा था, 'मेरा दिल गवाही देता है कि मेजर काक्रन ठीक-ठाक होंगे। आप घबराइए मत। कल से चार दस्ते उनकी तलाश में निकल रहे हैं।'

पेशावर में जब कर्नल टीन ने यह सुना तो वह बौखला गया। उसी के हुक्म से लेफ्टिनेंट कर्नल वर्ड के कमान में दो सवार और चार हल्की पहाड़ी तोपों के साथ एक जबरदस्त अभियान शुरू हो गया था। मेजर काकन गालिवन हबीबा के चंगुल में ही है। ऐसा सबका अनुमान था। लिहाजा आवाज उठी, 'हबीबा का पता लगाओ। कावन वहीं मिलेगा।'

भारी इनाम के लालच में आसपास के मुखबिर फूटने लगे थे।

उधर थोड़े दिन कावन को काफी आराम महसूस हुआ। उसका दर्द कम हो गया था। हाथ की हड्डी को जर्राह ने बैठा दिया था और जड़ी-बूटी की पुलटिस बांध दी थी। हबीबा रोज ही शाम को मिलता था। उसके मुखबिर अंग्रेजों की तरफ की खबरें रोज दे रहे थे। जब करीम खां बेग यह खबर लाया था कि मेजर कावन की बीवी उसके गम में बुखार में पड़ी है और उसका पांच साल का बच्चा कुम्हला गया है तो हबीबा के दिल में एक हूक उठी। उसी शाम वह कावन के कंधे पर हाथ रखकर बोला, 'साहब, आपका घाव अभी हरा है। आपके डाक्टरों का इलाज और है हमारे जर्राह का इलाज और है। यकीन मानिए हमारी दवा से आप बिल्कुल ठीक हो जाएंगे। हां, अभी दस-बारह दिन और लगेंगे।'

फिर हबीबा ने उसकी आंखों में आंखें डालते हुए कहा, 'खबर आई है कि आपकी मेम साहब गालिबन आपको मरा हुआ समझ रही हैं। वे बीमार पड़ गई हैं। आपका मासूम बच्चा भी परेशान है। आप चाहें तो एक खत मेम साहब के नाम दे दें। खत पहुंचने से परेशानी खत्म हो जाएगी। पर याद रखिए, आप इस वक्त हमारे दोस्त और मेहमान की हैसियत से रह रहे हैं। खत में कोई बात धोखे की नहीं होगी, ऐसा मैं कयास करता हूं।'

मेजर कावन रजब यूरेटा और डेनियल के बारे में सोच कर दुखी हो रहा था। हबीबा के कहने पर मेजर कावन की आंखें नम हो गईं और वह बोला, 'खान, आप एक बहादुर कौम के चिराग हैं। मैं भी अंग्रेज कौम का हूं और यकीन मानिए आपके साथ धोखा करना अपनी कौम को बदनाम करने के बराबर होगा। अगर मेरा खत पहुंचवा सकें तो मैं आपका मशकूर हूंगा।'

मेजर कावन ने खत लिखकर दिया था। उसमें लिखा था 'लि

यूरेटा, मैं जिन्दा हूँ। सिर्फ़ घायल हूँ पर दवा-दारू ठीक होने के कारण मेरा घाव तेज़ी से भर रहा है। दोस्तों के बीच हूँ। इस ख़त को जो ला रहा है मेरा दोस्त है। कहीं जल्दबाजी से कुछ ग़लत काम मत कर बैठना वर्ना मैं फिर वापस नहीं आ सकूँगा। यकीन मानो मैं बहुत जल्द आ रहा हूँ। डैनियल को अनगित प्यार। तुम्हें बहुत-बहुत प्यार। तुम्हारा—साइमन'।

ख़त को लेकर हबीबा मुस्कराया और फिर सर हिलाकर चला गया।

हबीबा अपने चार साथियों के साथ भेड़ चराने वालों का लिबास पहने निकला था। वह सीधा अफ़सर मैस में पहुँचा और जबर ख़ाँ से मिला। जबर ख़ाँ ने ही हबीबा को काफ़्रन का फूस वाला बँगला दिखाया था। शाम तेज़ी से बीत रही थी। अंग्रेज अफ़सर और उनकी पत्नियों का तांता-सा लगा था। सब यूरेटा को ढाढ़स बँधाने आ रहे थे।

करीब नौ बजे रात को सब वापस हो गए। तीन-चार बैरा और चौकीदार ही बँगले में रह गए थे। हबीबा पीछे से घुसा था। उसके साथी और जबर ख़ाँ पास के अनार के पेड़ के पास अँधेरे में खड़े हो गए।

'अगर दो सीटी सुनाई दें तो समझना मैं ख़तरे में हूँ,' हबीबा ने अपने साथियों को कहा था।

और फिर हबीबा बिल्ली जैसी चाल से बँगले में घुसा था।

यूरेटा का चेहरा मुरझाए कमल के फूल की तरह हो गया था। उसके बेटे की शक्ल पर दुख मिश्रित कौतूहल छाया हुआ था। हबीबा एकटक देखता रहा फिर पर्दा हटा कर एकदम यूरेटा के सामने आकर उसने अपने ओठों पर अंगुली रखते हुए काफ़्रन का पत्र आगे कर दिया। यूरेटा चीखने ही वाली थी। उसने हबीबा को पहचान लिया था। हबीबा ने फुर्ती से बढ़कर उसका मुंह दबा दिया। आँखों के सामने काफ़्रन का पत्र देखकर वह अचरज से देखती हुई चुप हो गई। डैनियल डर के मारे अपनी माँ से लिपट गया था। यूरेटा ने पत्र को लेकर झटके से खोला और एक सांस में पढ़ गई। उसके चेहरे पर रंग फैलने लगा। खुशी के आंसू उसकी आँखों में भर आए। उसने हबीबा को दयनीय दृष्टि से देखा और फिर बोली, 'साइमन

ठीक हैं खान ?'

हबीबा मुस्करा कर बोला, 'बिल्कुल ठीक हैं, मेम साहब। कुछ ही दिन में उनकी बाँह का घाव भर जाएगा और वो यहाँ आ जाएँगे। मैं खुद उन्हें छोड़ने आऊँगा।'

यूरेटा के मुरझाए ओठों पर मुस्कराहट फैल गई। वह उठकर टेबिल पर गई और पैड उठाकर चिट्ठी लिखने लगी। वह बहुत कुछ लिखना चाहती थी सालमन कावन को। उसका बस चलता तो वह प्यार भरी खुशी का सागर उस कागज के टुकड़े की गागर में भर डालती।

डेनियल भी अब हबीबा को गौर से देख रहा था। हबीबा ने डेनियल की तरफ मुस्करा कर देखा। डेनियल सहम गया। यूरेटा से चिट्ठी लेकर हबीबा चलने लगा पर यूरेटा ने उसे रोका और आलमारी से आधी केक उठाकर देते हुए बोली, 'ये साहब को दे देना।'

हबीबा ने केक को अपने झोले में रख लिया और फिर सर झुकाता हुआ वापस चल दिया। बाहर उसके साथी तैयार खड़े थे। कोई भी सीटी उन्हें सुनाई नहीं दी। इतने में हबीबा बाहर आ गया। साथियों की जान में जान आई।

दूसरे दिन हबीबा ने यूरेटा कावन की चिट्ठी और केक मेजर कावन को जब दी तो कावन हबीबा की ओर प्रशंसा मिश्रित स्नेह से देखता रहा। उसने केक के दो टुकड़े किए और आधा टुकड़ा हबीबा को देते हुआ बोला, 'तुम मेरी बीवी के हाथ की केक खाने से उज्र तो नहीं करोगे ?'

हबीबा हँसकर बोला, 'केक मीठी होती है या नमकीन ?'

कावन ने कहा, 'मीठी।'

हबीबा केक लेते हुआ बोला, 'तो मैं खुशी से खा लूँगा।'

कावन ने पूछा, 'अगर नमकीन होती तो नहीं खाते ?'

हबीबा सर हिलाकर बोला, 'नहीं। तुम आजकल हमारे मेहमान हो पर दर हकीकत में तो दुश्मन ही। तुम्हारे यहाँ का नमक मैं नहीं खा सकता।'

कावन हँसा, 'और मैं जो तुम्हारे यहाँ का नमक खा रहा हूँ सो ?'

हबीबा बोला, 'अव्वल तो तुम घायल बीमार हो। दोयम मेरी माँ के हुक्म के मुताबिक हमारे कबीले के मेहमान हो। इसके अलावा, नमक की

क़ामत जो हम लगाते हैं वह अंग्रेज नहीं मानते।'

काक्रन सुनता रहा। सोचता रहा। इंगलैंड से आने से पहले उसने 'ईस्ट' के बारे में बहुत-सी कहानियाँ सुनी थी। उसे लगा जैसे 'ईस्ट' वाक़ई सपनों का देश है जहाँ भावुक विचारों के महीन तारों से सपने बुने जाते हैं। ये अपढ़ पिछड़े हुए लोग कितना कोमल हृदय रखते हैं और जब शत्रुभाव मन में आता है तो वही कोमल हृदय कितना कठोर बन जाता है ! सहसा काक्रन को भावना के उतार-चढ़ाव सुन्दर लगने लगे।

लेफ्टिनेंट कर्नल बर्ड एक सिरे से दर्रे के दूर तक अंदर के इलाकों में घुस कर कबीलों को घेरकर मेजर काक्रन को खोजता फिर रहा था।

सुबह के पाँच बजे कबीले का चौकीदार घबराता हुआ सरदार तुर्रे खाँ का दरवाज़ा खटखटा रहा था।

हबीबा आँखें मींड़ता हुआ बड़बड़ाता आया।

'क्या है, खोचे ?' हबीबा झुँझलाता हुआ बोला।

हाँफता हुआ चौकीदार बोला, 'छोटे सरदार, क़बीला घिर गया है। अंग्रेज अफ़सर के दो सौ सवार चारों ओर रैफ़ल ताने खड़े हैं। चार तोपें लगी हैं जो एक इशारे पर कबीले की धज्जियाँ उड़ा देंगी।'

हबीबा सुनकर सन्न रह गया। तब तक जगार हो चुकी थी। सरदार तुर्रे खाँ ओंठ चिपकाए सोचने लगे। तभी घुड़सवारों की टाप सुनाई देने लगी। कर्नल बर्ड करीब पचास सवारों के साथ कबीले के अंदर आ गया था। उसने कड़ककर पश्तो में कहा, 'इस कबीले का सरदार बाहर निकल आए। अगर कहीं से भी हथियार उठा तो कबीले को ख़ाक में मिला दिया जाएगा। हमारी तोपें तैयार लगी हुई हैं।'

सरदार तुर्रे खाँ ने हबीबा को रोकते हुए कहा, 'तुम यहीं रहोगे, हबीबा। कबीले का सरदार मैं हूँ। तुम छोटे सरदार हो।'

सरदार तुर्रे खाँ बाहर आ गया। कबीला जाग चुका था। सब ही सकते में आ गए थे। सब पठान बाहर मौन खड़े थे। हबीबा भी एक चादर ओढ़े बाहर भीड़ में खड़ा हो गया।

सरदार तुर्रे खाँ से कर्नल बर्ड बोला, 'ये कबीला किसका है ?'

इससे पहले कि सरदार जवाब दें मेजर काक्रन बँधे हुए कंधे को पट्टी

में लटकाए सरदार तुर्रे खाँ के मकान से बाहर निकल आया।

कर्नल बर्ड उसे देखकर खुशी से चिल्लाया, 'मेजर काक्रन ! बड़ी किस्मत है हमारी मेजर, जो तुम मिल गए और वह भी जिन्दा !'

फिर कर्नल बर्ड घोड़े से उतर कर आया और काक्रन से हाथ मिलाकर बोला, 'क्या ये कबीला हवीबा का है मेजर ? मुझे हिदायत मिली थी कि हवीबा के कबीले वालों ने ही तुम्हें कैद कर रखा है या मार डाला है।'

सरदार तुर्रे खाँ की नजर काक्रन पर टिकी हुई थी। सारा कबीला सन्नाटे में आ गया था। हवीबा अपनी चादर लपेटे साँस रोके सुन रहा था।

काक्रन बोला, 'कर्नल बर्ड, सर। ये कबीला हवीबा का नहीं है। ये दोस्तों का कबीला है। यहाँ के बहादुर सरदार की माँ ने मुझे अपने बच्चे की तरह रखा है।'

हवीबा ने झटके से साँस छोड़ी। सरदार तुर्रे खाँ की आँखों में एक रोशनी सी चमकी। कबीले वालों को अपने कानों पर विश्वास नहीं हुआ। कर्नल बर्ड ने हाथ से इशारा किया। घुड़सवारों की तनी हुई राइफल की नलियाँ झुक गईं। घुड़सवारों के आखिरी सवार ने बिगुल मुँह से लगाया और बजा दिया। बिगुल की आवाज सुनते ही तोपों का रुख बदल दिया गया।

कबीला टुकुर-टुकुर सब कुछ देखता रहा।

कर्नल बर्ड ने मेजर काक्रन के कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'ईसा मसीह का शुक्र है मेजर काक्रन कि तुम जिन्दा ही नहीं बल्कि दोस्तों के बीच रह रहे हो। चलो, अब हमें चल देना चाहिए।'

मेजर काक्रन ने मुड़कर घर की ओर देखा। हवीबा की माँ चौखट के पास खड़ी थी। मेजर काक्रन ने कर्नल बर्ड से कहा, 'सर, मेरा घाव अभी भरा नहीं है। मेरी माँ जैसी बुजुर्ग महिला वह खड़ी हैं। मेरी इल्तजा है कि आप सब वापस हो जाएँ। मैं ठीक होते ही खुद चला आऊँगा।'

कर्नल बर्ड आश्चर्य से बोला, 'ये तुम क्या कह रहे हो मेजर ? मुझे चीफ कमिश्नर का आदेश है कि तुम्हें जिन्दा पाकर फौरन वापस लाया जाए।'

मेजर काक्रन बोला, 'इसकी जवाबदेही मैं दूँगा। अगर आप कहें मैं लिखकर दे सकता हूँ कि मैं घाव के भरते ही स्वयं वापस आ जाऊँ

हबीबा की माँ को किसी ने यह सब बतला दिया। वह आगे बढ़कर आई और मेजर काकन से बोली, 'मेरे बच्चे, इस कबीले के तुम मेहमान हो। जब तब चाहो हमारे यहाँ रहो। पर एक औरत होने के नाते मैं तुम्हारी बीबी के ऊपर जो गुजर रही होगी उसका अंदाज लगा सकती हूँ। अपने मेहमान को जाने को कहना हमारे लिए एक संगीन गुनाह है। तुम बहादुर के अलावा इन्सान भी हो मेरे बच्चे। मेरी ख्वाइश है कि तुम बीबी-बच्चे के पास चले जाओ। तुम्हारे आने से उनके मन की ख़िज़ाँ फिर से बहार बन जाएगी।' काकन ने हबीबा की माँ के आगे घुटने टेक दिए और उसका दामन चूम लिया। सुग़रा ने उसके सर पर स्नेह से हाथ फेरा।

'क्या आप इजाजत देती हैं कि मैं चला जाऊँ?' काकन ने उससे पूछा।

जवाब में सुग़रा ने मुस्कराकर सर हिला दिया। मेजर काकन चलने को तैयार हो गया। उसका झोला अंदर से मँगवा लिया गया। जैसे ही वह जाने को हुआ कि हबीबा ने आगे बढ़कर कहा, 'ठहरो मेहमान! हमारा कबीला कभी मेहमान को खाली हाथ अलविदा नहीं करता। कबीला एक छोटा सा नज़राना देना चाहता है।'

हबीबा ने मेजर काकन के हाथ पर एक मखमल की थैली रख दी और फिर हाथ मिलाकर कहा, 'मेहमान के अलावा मैं तुम्हें एक दोस्त भी कबूल करता हूँ मेजर साहब!'

काकन की आँखें सील गईं। उसने मखमल की छोटी सी थैली अपनी जेब में रख ली और फिर कर्नल बर्ड के साथ वापस चल दिया। जब मेजर काकन घर पहुँचा था तो यूरेटा खुशी से पागल हो गई थी। सबके सामने काकन ने उसके फड़फड़ाते ओंठ चूमे थे। डैनियल को तो काकन ने सौ बार चूमा होगा।

सब तरफ से बधाइयाँ आ रही थीं। रात को खाने के बाद काकन ने सब कुछ यूरेटा को बतलाया और सहसा बोला, 'अरे हाँ, हबीबा का तोहफा तो मैं देखना ही भूल गया।'

मेजर काकन उठा और उसने अपनी जेब से हबीबा की दी हुई मखमल की थैली निकाल कर देखी। उसमें मेजर काकन की रिवाल्वर के छः कारतूस रखे थे!

गुलसमन सुबह की खडखड सुनकर जाग पड़ी। शायद चार बजे होंगे। नूर खां की हवेली का फाटक किसी ने धीरे से खोला था। एक लम्बी-चौड़ी छाया पोटली लेकर दबे पांव निकल रही थी। कबीले के अंदर चोरी ना-मुमकिन थी। गुलसमन सोचने लगी कि आखिर कौन इतनी सुबह उठकर पोटली ले जा रहा है और इस पोटली में हो भी क्या सकता है। उसने सिर-हाने रखा खंजर उठा लिया और अपने घर के पास खड़ी होकर देखने लगी। छाया जब नजदीक आई तो गुलसमन ने नूर खां को पहचान लिया। उसने चैन की सांस ली। फिर कौतूहल जागा कि इतनी सुबह नूर खां क्या ले जा रहा है।

गुलसमन नूर खां को अपना समझती आई है। उसकी बेवा मां नईमा उसे बचपन से यह बतलाती आ रही है। जब गुलसमन छः साल की थी तभी नूर खां के अब्बा सरदार हिलाल खां नईमा के घर आकर नूर खां के लिए बात पक्की कर गए थे। सरदार हिलाल खां बड़े ठस्से के आदमी थे। दुश्मनी और दोस्ती निभाना जानते थे। मलाकद की लड़ाई में गुलसमन के अब्बा हफीज खां ने सामने आकर सीना अड़ा दिया था। जो नेजा सरदार हिलाल खां के सीने के आर पार होना था वह हफीज खां की जान ले गया था। हफीज खां ने मरते वक्त सरदार हिलाल खां का हाथ दबाकर कहा था, 'सरदार मुझे नाज है कि मैं आपके काम आ सका। मेरे जैसे सैकडों हफीज खां कबीले की खिदमत को पैदा हो जाएँगे पर कबीले का सरदार बड़ी मुश्किल से मिलता है।'

सरदार हिलाल खां ने आँखें पोंछते हुए कहा, 'नहीं हफीज खां, तुम जैसा जांनिसार दोस्त दीदावर की तरह कामयाब है। तुमने अपनी जान मेरे खातिर ही दी है दोस्त, तुम्हारा अहसान मेरा खानदान कभी नहीं भूलेगा।'

हफीज खां की आंखों के आगे अंधेरा गहरा होता जा रहा था। उसने

जोर लगाकर कहा, 'सरदार, मैं अपनी बीवी नईमा और लख्तेजिगर गुल-समन को तुम्हें सौंपे जा रहा हूँ। खुदा हाफिज।'

सरदार हिलाल खाँ ने तभी फैसला कर डाला था और नूर खाँ के लिए वे गुलसमन का हाथ मांगने नईमा भाभी के पास आए थे। रिश्ता पक्का हो गया था। नईमा अपने दुख को पी गई। गुलसमन की तरफ से वह निश्चिन्त भी हो गई थी। कबीले के सरदार की बहू बनेगी उसकी बेटी। यह आसरा ही उसकी जिन्दगी में बहार का वादा सा बन गया था। जैसे-जैसे गुलसमन बढ़ती गई उसका रूप भी निखरता गया। वह अनार की तरह लाल थी। बचपन से ही उसने नूर खाँ को अपना समझा था और आज भी वह उसे अपना ही समझती है। गुलसमन यह नहीं जानती थी कि नूर खाँ महजबीं के लिए दीवाना हो गया है। महजबीं के लिए नूर खाँ को मुहब्बत कम थी, हविस ज्यादा थी। जब भी नूर खाँ गुलसमन के सामने पड़ता तो, सिर्फ मुस्करा भर देता। उसकी मुस्कराहट ही गुलसमन को हरा-भरा करती रहती।

नूर खाँ पीठ पर पोटली पर रखे घर से निकला था। पोटली को उसने घोड़े की पीठ पर रखा। एक बेलचा भी घोड़े की जीन के पास खुसा हुआ था। नूर खाँ घोड़े पर सवार नहीं हुआ। वह उसकी रास पकड़े-पकड़े चलने लगा। थोड़ी दूर चलकर एक बड़े दरख्त के पास आकर वह रुका और घोड़े की पीठ से बेलचा निकालकर खोदने लगा। गुलसमन पास से सब देख रही थी। गड्ढा खोदकर नूर खाँ ने माथे से पसीना पोंछा और फिर पोटली उतरा कर गड्ढे में डाल दी। इसके बाद उसने गड्ढे को पाट दिया।

दाँत पीस कर नूर खाँ बोला, 'जिस दिन हबीबा मारा जाएगा उस दिन इन दो हजार रुपयों को मैं गरीब-गुरबों को बाँट दूँगा।'

और फिर नूर खाँ लौट आया था। गुलसमन ने सब कुछ देखा पर बोली कुछ नहीं। उसने किसी को भी यह राज नहीं बतलाया। नूर खाँ को वह अपना समझती थी। उसका राज भी गुलसमन का अपना राज था।

शायद कोई दो-तीन दिन बाद नूर खाँ के साथी ईदू खाँ ने कहीं पर महजबीं वाला किस्सा बयान किया था। गुलसमन के कान में भी भनक पहुँची थी। उस दिन वह बहुत उदास रही। फिर धीरे-धीरे उसकी उदासी गायब

होने लगी और उसका हाथा खंजर पर पहुँच गया। कौन है ये महजबी ? वह महजबी को देखने को वेचैन हो गई। मौका पाकर वह ईदू खाँ के घर पहुँची और उसने ईदू खाँ से पूछा, 'ईदू भाई, क्या ये सच है कि नूर खाँ किसी महजबी से इश्क करने लगे हैं ? क्या ये आग दोनों तरफ लगी हुई है ?'

ईदू पहले तो चौंका। सारा कबीला जानता था कि जल्द ही गुलसमन नूर खाँ की बीवी बनने वाली है। सरदार हिलाल खाँ ने बारह साल पहले यह रिश्ता तय कर डाला था। नूर खाँ की टालमटोल के कारण ही शादी में ढील हो रही थी।

ईदू ने सकपका कर कहा, 'तुमसे किसने यह कहा है गुलसमन ? ये अफवाह मैंने सुनी तो है पर ये नहीं कह सकता कि आग दोनों तरफ से बराबर लगी हुई है या इकतर्फा है। हाँ ये बात सच है कि उरकजई कबीले के हबीब खाँ और नूर खाँ में रंजिश महजबी के लिए हुई है।'

'कौन है ये महजबी ?' संजीदा होकर गुलसमन ने पूछा।

'महजबी यूसफजई कबीले के सरदार गुलाब खाँ की बेटी है।' ईदू खाँ ने सर झुकाकर कहा।

गुलसमन ने टकटकी बाँधकर दुरहराया, 'महजबी।' गुलसमन की आँखों में खून उतर आया। अंदर से जैसे कोई बोली, 'जल्दबाजी खतरनाक होती है गुलसमन, पहले इस बात की तसदीक कर कि महजबी भी नूर खाँ पर झुकी है या सिर्फ नूर खाँ ही उसके ख्वाब देख रहा है।'

गुलसमन बहुत देर तक सोचती रही।

कोई दस दिन बाद शाह मुतरिब के मजार पर मेला लगना था। मेले में सभी कबीले के लोग और औरतें आती थीं। गुलसमन भी चन्द लड़कियों के साथ मेले में गई थी। सीखी कबाब की दुकान पर जोहरा ने गुलसमन के कुहनी मार कर कहा, 'देख गुलू, ये ही है हिलाल खाँ की बेटी।'

महजबी अपने भाई गुलफाम और चन्द दोस्तों के साथ कबाब खा रही थी और मिर्च की वजह से 'सी-सी' करती जा रही थी। महजबी गुलसमन को चाँद का टुकड़ा जैसी नजर आई। गुलसमन के दिल पर डाह की एक छाया-सी उतर गई।

शायद गुलफाम ने ही हबीबा के कान में यह बात किसी और के द्व

जोर लगाकर कहा, 'सरदार, मैं अपनी वीवी नईमा और लख्तेजिगर गुल-समन को तुम्हें सोंपे जा रहा हूँ। खुदा हाफिज।'

सरदार हिलाल खाँ ने तभी फैसला कर डाला था और नूर खाँ के लिए वे गुलसमन का हाथ माँगने नईमा भाभी के पास आए थे। रिश्ता पक्का हो गया था। नईमा अपने दुख को पी गई। गुलसमन की तरफ से वह निश्चित भी हो गई थी। कबीले के सरदार की वहू वनेगी उसकी वेटी। यह आसरा ही उसकी जिन्दगी में वहार का वादा सा वन गया था। जैसे-जैसे गुलसमन वढ़ती गई उसका रूप भी निखरता गया। वह अनार की तरह लाल थी। वचपन से ही उसने नूर खाँ को अपना समझा था और आज भी वह उसे अपना ही समझती है। गुलसमन यह नहीं जानती थी कि नूर खाँ महजवीं के लिए दीवाना हो गया है। महजवीं के लिए नूर खाँ को मुहव्वत कम थी, हविस ज्यादा थी। जव भी नूर खाँ गुलसमन के सामने पड़ता तो, सिर्फ मुस्करा भर देता। उसकी मुस्कराहट ही गुलसमन को हर-भरा करती रहती।

नूर खाँ पीठ पर पोटली पर रखे घर से निकला था। पोटली को उसने घोड़े की पीठ पर रखा। एक वेलचा भी घोड़े की जीन के पास खुसा हुआ था। नूर खाँ घोड़े पर सवार नहीं हुआ। वह उसकी रास पकड़े-पकड़े चलने लगा। थोड़ी दूर चलकर एक वड़े दरख्त के पास आकर वह रुका और घोड़े की पीठ से वेलचा निकालकर खोदने लगा। गुलसमन पास से सव देख रही थी। गड्ढा खोदकर नूर खाँ ने माथे से पसीना पोंछा और फिर पोटली उतरा कर गड्ढे में डाल दी। इसके वाद उसने गड्ढे को पाट दिया।

दाँत पीस कर नूर खाँ वोला, 'जिस दिन हवीवा मारा जाएगा उस दिन इन दो हजार रुपयों को मैं गरीव-गुरवों को वाँट दूंगा।'

और फिर नूर खाँ लौट आया था। गुलसमन ने सव कुछ देखा पर वोली कुछ नहीं। उसने किसी को भी यह राज़ नहीं वतलाया। नूर खाँ को वह अपना समझती थी। उसका राज़ भी गुलसमन का अपना राज़ था।

शायद कोई दो-तीन दिन वाद नूर खाँ के साथी ईदू खाँ ने कहीं पर महजवीं वाला किस्सा वयान किया था। गुलसमन के कान में भी भनक पहुँची थी। उस दिन वह वहुत उदास रही। फिर धीरे-धीरे उसकी उदासी गायव

होने लगी और उसका हाथ खंजर पर पहुँच गया। कौन है ये महजबी ?वह महजबी को देखने को बेचैन हो गई। मौका पाकर वह ईदू खां के घर पहुँची और उसने ईदू खां से पूछा, 'ईदू भाई, क्या ये सच है कि नूर खां किसी महजबी से इश्क करने लगे है ? क्या ये आग दोनों तरफ लगी हुई है ?'

ईदू पहले तो चौका। सारा कबीला जानता था कि जल्द ही गुलसमन नूर खां की बीवी बनने वाली है। सरदार हिलाल खां ने बारह साल पहले यह रिश्ता तय कर डाला था। नूर खां की टालमटोल के कारण ही शादी में ढील हो रही थी।

ईदू ने सकपका कर कहा, 'तुमसे किसने यह कहा है गुलसमन ? ये अफवाह मैंने सुनी तो है पर ये नही कह सकता कि आग दोनों तरफ से बराबर लगी हुई है या इकतर्फा है। हां ये बात सच है कि उरकजई कबीले के हबीब खां और नूर खां मे रंजिश महजबी के लिए हुई है।'

'कौन है ये महजबी ?' संजीदा होकर गुलसमन ने पूछा।

'महजबी यूसफजई कबीले के सरदार गुलाब खां की बेटी है।' ईदू खां ने सर झुकाकर कहा।

गुलसमन ने टकटकी बांधकर दुहराया, 'महजबी।' गुलसमन की आंखों में खून उतर आया। अंदर से जैसे कोई बोली, 'जल्दबाजी खतरनाक होती है गुलसमन, पहले इस बात की तसदीक कर कि महजबी भी नूर खां पर झुकी है या सिर्फ नूर खां ही उसके ख्वाब देख रहा है।'

गुलसमन बहुत देर तक सोचती रही।

कोई दस दिन बाद शाह मुतरिब के मजार पर मेला लगना था। मेले में सभी कबीले के लोग और औरतें आती थी। गुलसमन भी चन्द लड़कियों के साथ मेले में गई थी। सीखी कवाब की दुकान पर जोहरा ने गुलसमन के कुहनी मार कर कहा, 'देख गुलू, ये ही है हिलाल खां की बेटी।'

महजबी अपने भाई गुलफाम और चन्द दोस्तों के साथ कबाब खा रही थी और मिर्च की वजह से 'सी-सी' करती जा रही थी। महजबी गुलसमन को चाँद का टुकड़ा जैसी नजर आई। गुलसमन के दिल पर डाह की एक छाया-सी उतर गई।

शायद गुलफाम ने ही हबीबा के कान मे यह बात किसी और के द्वारा

भिजवाई थी कि मेले में महजबीं आएगी। हबीबा भी महजबीं से मिलने को बेक़रार था। आज मौका अच्छा था। लिहाजा चन्द साथियों को लेकर वह भी मेले में घूम रहा था। अलबत्ता नूर खाँ गालिबन पेशावर गया था। क्यों गया यह तो नहीं मालूम, पर ईदू खाँ ने इशारा जरूर फेंका था कि नूर खाँ को जक्काखेल के कबीले के कुछ लोगों ने बुलाया है। किसी सिलसिले में वह पेशावर गया था। थोड़ी देर घूमने के बाद हबीबा की निगाह महजबीं और उसकी सहेलियों पर पड़ी। पास ही की दुकान पर गुलफ़ाम चाट खा रहा था। उसकी नज़र भी हबीबा हर पड़ी और उसने आवाज़ देकर हबीबा को अपने पास बुला लिया। हबीबा असली कलाबत्तू का कुल्ला पहने आया था। लाल मखमल की वास्कट पर सोने के तार का काम था। चेहरे पर लाली छाई थी। उसने सुरमा लगा रखा था जो उसकी बड़ी-बड़ी आँखों के किनारे पर इतना महीन लगा था कि ऐसे लगता मानो किसी खंजर पर ताज़ा-ताज़ा धार धरवाई हो। दाहिनी कलाई पर हबीबा ने लाल रूमाल बाँध रखा था। यह रूमाल महजबीं का ही था।

जब महजबीं ने उसे देखा तो वह शर्म से सहम गई। खुशी और हया की गंगा-जमुनी अदा ने उसकी बड़ी-बड़ी पलकों को झुका दिया। नीची निगाह किए जब उसने तिरछी चितवन से हबीबा को देखा तो हबीबा बेचैन हो गया। तभी महजबीं की नीची नज़र हबीबा की कलाई में बँधे अपने रूमाल पर पड़ी। उसने नजर को थोड़ा उठाकर देखा। हबीबा ने उसी वक्त रूमाल अपने याकूती ओठों पर लगाया। महजबीं सिहर उठी। उसे लगा कि हबीबा ने जैसे उसके ओठों को चूम लिया हो।

गुलसमन दूर से यह सब देख रही थी। आखिर वह भी जवानी की दहलीज़ पर खड़ी एक खूबसूरत औरत थी। उसने सहसा एक लम्बी साँस ली। उसके दिल से आवाज़ उठी, 'देखा, गुलसमन। ये दुतर्फा आग लगी मालूम देती है। ये खामोश इशारे मुहब्बत के गवाह हैं। आग कितनी फैल चुकी है, यही देखना है।'

गुलफ़ाम और हबीबा थोड़ी देर साथ-साथ रहे। हबीबा ने अपने साथियों से कहा कि वे मेले में घूम लें और फिर घंटे भर बाद रहट के पास पेड़ के नीचे मिल जाएँ।

गुलफाम ने अपने साथियों को भी टहला दिया।

महजबी अपनी दो सहेलियों के साथ रह गई। गुलफाम तभी हबीबा को पास लाया।

'महजबी, क्यों नहीं हम लोग खाना पेड़ के नीचे खा लें,' गुलफाम बोला।

महजबी ने सिर्फ गरदन झुका दी। पेड़ के पास ही दरी बिछा दी गई और फिर सफेद कढ़ा हुआ दस्तरख्वान बिछा दिया गया। दस्तरख्वान बिछा हुआ था। हबीबा ने कहा, 'बड़ा खूबसूरत दस्तरख्वान है।' गुलफाम बोला, 'तुम्हें पसन्द आया हबीबा भाई? ये महजबी ने बनाया है।'

हबीबा मुस्कराकर बोला, 'ओह! तो मेरा अंदाज सही निकला।'

'क्या?' गुलफाम बोला।

'यही कि इतना खूबसूरत दस्तरख्वान और कौन बना सकता होगा।' हबीबा हँसकर बोला।

महजबी शर्म से गड़-सी गई।

गुलफाम कूंजा उठाकर बोला, 'मैं पास के झरने से पानी ले आऊँ। आओ, मईदा, आओ, निकहत झरने तक हो आएँ।'

महजबी और भी घबरा गई। अब वह और हबीबा ही अकेले रह गए थे।

थोड़ी देर दोनों चुप रहे। कौन पहल करे शायद यह पशोपेश थी। आखिर हबीबा ही बोला, 'गुलफाम भाई जब मुझे देखने आए थे तो बतलाया था कि मेरे जख्म की खबर सुनकर तुमने दो आँसू गिराए थे।'

महजबी अपने पाँव के अँगूठे से दस्तरख्वान कुरेदने लगी। फिर उसने हया के बेहिसाब बोझ से लदी पलकों को उठाया और हबीबा की तरफ देख कर कहा, 'आपको ज्यादा चोट तो नहीं लगी थी?'

हबीबा मुस्कराया, 'मैं उस दिन बच गया महजबी। मुझे उस दिन सपने में तुम दीखी थीं और तुमने कहा कि आइन्दा मैं तुम्हारा रूमाल हमेशा साथ रखूँ। इसमें तुम्हारी मुहब्बत की खुशबू बसी है और शायद तुम्हारी मुहब्बत ही ढाल बनकर मुझे बचाती रहती है।'

महजबी ने नीमबाज आँखों से हबीबा को देखा और धीरे से बोली,

'आप वनाना खूब जानते हैं।'

हवीवा हँसकर वोला, 'महजवी, मैं तुम्हें अपना वनाने की कोशिश तो वहुत कर रहा हूँ, अव देखो कव तक कामयाव हो पाता हूँ।'

फिर जेव टटोलकर हवीवा वोला, 'अरे हाँ, ये तो भूल ही गया।' उसने अपनी जेव से एक जड़ाऊ गुलूवन्द निकाला और वोला, 'क्या मैं ये देने की जुरअत कर सकता हूँ?'

महजवीं ने इधर-उधर देखा। थोड़ी दूर पर मेला हो-हुल्लड़ से चल रहा था। हाँ, यह वात दीगर थी कि पास के पेड़ की ओट में खड़ी गुलसमन सव कुछ देख रही थी। उसको यह सव अच्छा लग रहा था। उसे अहसास होता जा रहा था कि महज़वीं हवीवा की ही अमानत है, नूर खाँ की नहीं।

महजवीं ने मुस्कराकर कहा, 'इसे मुझे पहनाने की आप में जुरअत है?'

हवीवा वोला, 'हाँ, है, महजवीं।'

और उसने महजवीं के पीछे जाकर गुलूवन्द पहना दिया। महजवीं की आँखों में खुशी के आँसू छलछला उठे, 'इसका मतलव आप समझते हैं?'

'नहीं,' हवीवा शरारत से वोला, 'मतलव तुम समझाओ।'

महजवीं ने शर्म से गर्दन झुका ली फिर दुपट्टे को इस तरह ओढ़ा कि गुलूवन्द करीव-करीव छुप ही गया।

'इसे तो तुमने ऐसा छुपा लिया है जैसे मैंने तुम्हारी सूरत को अपने दिल में छुपाया है,' हवीवा हँसकर वोला। महजवीं हँसकर वोली, 'हमदर्दी और मुहव्वत छुपाने से और भी वेकरारी वढ़ा देती है।'

हवीवा ने महजवीं के हाथ अपने हाथों में लेकर चूम लिए, 'तुम ठीक कहती हो महजवीं। इस मेले में आकर हम आज एक और छुपा हुआ घाव लेकर जा रहे हैं जो ना दिन में चैन लेने देगा ना रात को।'

और तभी गुलफ़ाम पानी का कूंजा लेकर आ गया। 'अरे, तुम लोगों ने अभी तक खाना भी नहीं खोला है,' गुलफ़ाम वोला।

महजवीं ने जल्दी-जल्दी पोटली खोलनी शुरू की। खाने के वड़ी देर तक सव वैठे वातचीत करते रहे। चलते वक्त हवीवा ने सवसे सलाम किया। महजवीं ने अपनी विजली जैसी गोरी कलाई उठाई और आँखें झुकाकर

सलाम किया। उसका सलाम मीठे खंजर की तरह हबीबा के दिल में उतरता चला गया। मेले को छोड़कर जब सब चलने लगे तब गुलसमन ने मौका देखकर महजबी को पुकारा, 'महजबीं बी. क्या मैं आपसे एक लम्हा बात कर सकती हूँ।' सब चौंक पड़े। महजबी ने भी हैरत में आकर गुलसमन को देखा और बोली, 'कौन हैं आप? कहिए क्या बात है।'

गुलसमन बोली, 'अगर इजाजत दें तो आपसे अकेले में बात करना चाहती हूँ।'

हाँ, हाँ, कर लीजिए' गुलफाम बोला, 'हम हटे जाते हैं।'

गुलसमन ने महजबी से कहा, 'आप गलत मत समझना बहन। जो कुछ मैंने देखा उससे ये अहसास हुआ कि हबीबा भाई पर सिर्फ आपका ही हक़ है और शायद उनसे आपको कोई छीन भी नहीं सकता। क्या आप बतला सकेंगी कि नूर खाँ इस अफसाने में कहाँ आते हैं?'

महजबी का चेहरा तमतमा उठा, 'नूर खाँ मुहब्बत को तलवार से तराशना चाहते थे। मेरी आबरू हबीब खाँ ने बचाई और मैं उसी दिन से उनकी हो गई। शायद नूर खाँ हबीब खाँ की मार को भूले नहीं होंगे। मुझे जितनी मुहब्बत हबीब खाँ से है उतनी ही नफरत नूर खाँ से है। पर आप इस अफसाने में कहाँ आती हैं?'

गुलसमन मुस्कराई, 'अल्लाह का लाख-लाख शुक्र। आपा! मैं बद-नसीब नूर खाँ की मँगेतर हूँ।'

महजबी सुनकर अवाक् रह गई। उसने हमदर्दी से उसके कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'मुहब्बत और हविस में बहुत फर्क होता है बहन। मैं यही दुआ माँगूंगी कि नूर खाँ को अल्लाह समझने की कुव्वत दें और वे जा और बेजा के फ़र्क में इम्तियाज़ कर सकें।'

इसके बाद सलाम करके महजबी चल दी। गुलसमन के सीने पर जो बोझ लदा था वह गायब हो गया था। पर अब उसे एक और फिक्र लग गई थी। नूर खाँ वहशत के दायरे में दाखिल हो चुका था। हविस का गुलाम इन्सान, दरिन्दा बन जाता है। गुलसमन जल्दी-जल्दी वापस जाने लगी। उसे सब शर्मोहया ताक पर रखकर नूर खाँ से दो-दो बातें करनी थी।

इसी सोच में डूबी गुलसमन चल दी।

पेशावर की चमक-दमक देखकर नूर खाँ भौचक्का हो गया। जक़ाखेल कबीले का सबसे माना हुआ मुखबिर नसीर खाँ नूर खाँ को पेशावर घुमा रहा था। दूसरे दिन उसे छावनी ले जाना था जहाँ उसे पुलिस चौकी दिखलानी थी। शाम अजीब रौनक से भरी थी। कहाँ बीहड़ कबीलों के चारों ओर बेज़ुबाँ पहाड़ और थमा-थमा-सा माहौल। नसीर खाँ उसे पास के जुएखाने में ले गया। रोशनी इतनी मद्धिम थी कि नूर खाँ को ऐसा लगा जैसे एक नशीला अँधेरा छा गया हो। जगह-जगह मेजों पर जुआरी अपने-अपने जाम लिए ताशों को लिए गहरे सोच में बैठे थे। दूसरे कमरे में स्टेज पर एक रँगी-पुती बानो पश्तो में ग़ज़ल गा रही थी। लाल-नीली रोशनी की फुहार जब उस पर पड़ती तो वह जन्नत की हूर-सी लगने लगती। नसीर खाँ को देखते ही उसने हाथ हिलाकर इशारा किया। नूर खाँ यह देखकर ललचाया।

'तुम्हें ये जानती है नसीर खाँ ?' नूर खाँ बोला।

'जानती ही नहीं, मुझे मानती भी है,' नसीर खाँ आँखें मारकर बोला, 'प्रोग्राम के बाद इससे मिलवाऊँगा। चमन का अंगूर इसका आगे फीका पड़ जाता है दोस्त।' और उसने नूर खाँ का हाथ दबा दिया।

पास की मेज़ पर बैठते उसने लड़के को इशारा किया। देखते-ही-देखते गर्मागर्म कबाब और एक बोतल आ गई।

'ये क्या शराब है नसीर भाई,' नूर खाँ बोला।

'नहीं, ये अंगूर की बेटी है बिरादर,' नसीर खाँ बोला, 'इसको पीने के बाद जब स्टेज वाली ज़ेबुन्निसा से मिलोगे तो तुम्हें जिन्दगी में खुशबू का अहसास होने लगेगा।'

नूर खाँ ने पहले कभी शराब नहीं पी थी। वह कभी बोतल को देखता तो कभी स्टेज पर नाचती-गाती ज़ेबुन्निसा को। जब भी वह ज़ेबुन्निसा को

देखता तो उसके अंदर एक अजीब झन्ननाहट सी उठती। नसीर खाँ ने करीब-करीब आधा गिलास भर दिया। 'एक ही साँस में इसे मर्द खत्म करते हैं नूरा भाई,' नसीर खाँ बोला, 'सिर्फ औरतें धीरे-धीरे पीती हैं। तुम तो मर्द हो ना नूरा भाई।'

नूरा अजीब पशोपश में पड़ गया। उसने गिलास के खनकते ही एक साँस में पूरी शराब खत्म कर दी। उसे ऐसा लगा जैसे उसने पिघली हुई आग को पी लिया हो। उसकी पेशानी की नसें उभर आईं और अंग-अंग से अंगारे से फूटने लगे। फिर उसे ऐसा लगा जैसे उसके अंदर किसी ने हिम्मत कूट-कूट कर भर दी हो। वह बनावटी साहस में बोला, 'नसीर भाई, तुमने मुझे आज जन्नत दिखाई है। और ये बानो — क्या बतलाया तुमने — हाँ जेबुन्निसा! क्या बात है! इसके आगे मपजवी, गुलसमन — सब गई हैं।'

नसीर खाँ चौंका। उसने दूसरा बड़ा पेग देते हुए कहा, 'कबीलों की-जंगली औरतों का इससे क्या मुकाबिला, नूरा भाई। अभी तो एक ही जेबुन्निसा दिखलाई है। इससे भी बेहतर नग जब दिखलाऊँगा तो तुम्हारा दिल बुलबुल की तरह फुदकने लगेगा।'

नूरा नशीली आँखों को चौड़ाता हुआ मुस्कराने लगा।

नसीर खाँ बोला, 'चलो अब जेबुन्निसा का रक्स खत्म होने वाला है। तुम्हें शमा से मिलवा दें, मेरे परवाने।'

नूरा लड़खड़ाता हुआ उठा, 'हम शमा के पहलू में जाकर अपने पंख जला देंगे नसीर भाई। चलो, हमें उसके आगोश में गिरा दो।'

नसीर खाँ ने पहले से सब को पढ़ा दिया था। सरकार से उसे दो सौ रुपया महीना मिलता था। नये मुखबिर बनाने पर सौ रुपया अलग से मिलता था। नये पंछी को चुगाने में जो खर्च होता था उसका खर्च अलग किसी 'फंड' में मिलता था। नसीर चाहता था कि काबुल नदी के आस-पास कबीलों के मुट्ठ सरदारों को पकड़वा दिया जाए। खास तौर से हबीबा के लिए दो हजार नकद का नाम घोषित हो चुका था। उसे हबीबा के प्रति नूरा की घृणा का आभास हो चुका था। इसलिए उसने फुसला-फुसला कर नूरा पर रंग जमाया था।

जब नूरा और नसीर जेबुन्निसा के कमरे में पहुँचे तो नूरा चिल्ला

स। देखता रहा। कमरा बहुत अच्छा सजा था। चारों ओर नंगी और अध-नंगी औरतों की तस्वीरें लटक रही थीं। हल्की नीली रोशनी से एक नशा जैसा टपक रहा था। जेबुन्निसा ने मुस्कराकर नूरा को सलाम किया और फिर अलमारी से बोतल निकालकर तीन पेग बनाए। नूरा मुस्कराता हुआ किंकर्त्तव्यविमूढ़-सा देखता रहा। जेबुन्निसा ने एक ही साँस में गिलास खत्म कर दिया।

'चे खुश, क्या शेर का दिल पाया है, जानेमन,' नूरा बोला।

नसीर खाँ ने पेग पीकर कहा, 'नूरा भाई, तुम यहीं आराम करो। कल सुबह मैं यही मिलूंगा।'

नूरा यह सुनकर खुश हुआ। उसने झूठे से भी यह नहीं कहा कि नसीर भाई थोड़ी देर और बैठो।

'अच्छा तो नसीर भाई, वह लड़खड़ता हुआ बोला, 'कल सुबह यहीं मिलेंगे।'

रहा-सहा जादू जेबुन्निसा ने उस पर डाल दिया। नूरा चौथे पेग में निर्जीव होकर ढुलक गया। मुहब्बत के इरादे मन ही में रह गए। जेबुन्निसा ने ताली बजाई। दो नौकर आ गए।

'इस ख़ंजीर को पिछले वाले कमरे में फेंक दो!' जेबुन्निसा बोली, 'शमा का परवाना बनने की कोशिश कर रहा था, सूअर का बच्चा।'

दोनों आदमियों ने नूरा को गुड़ की बोरी की तरह उठाया और पिछले कमरे में फेंक कर हाथ झाड़े।

सुबह जब नूरा उठा तो उसके सिर में हल्का-हल्का दर्द था। वह सोचने की कोशिश कर रहा था कि वह कहाँ है। थोड़ी देर में चाय लिए एक नौकर आया। नूरा ने चाय उठाते हुए पूछा, 'मैं कहाँ हूँ ख़ोचे?'

नौकर सलीके से बोला, 'आप जेबुन्निसा बानो के दौलतखाने में हैं खान साहब।'

नूरा सोचने लगा। फिर उसे धुंधली यादों के बादल उमड़ते नज़र आए। 'हाँ, हाँ,' वह बोला, 'अब समझ में आया। नसीर खाँ लाए थे मुझे।'

'जी हाँ,' नौकर बोला, 'आप नहा-धो लें। खान साहब, आने ही वाले होंगे।'

नूरा उठ खड़ा हुआ। अभी भी चाल में बहक थी।

कोई आधे घंटे बाद नूरा नहा-धोकर तैयार हो गया। तभी नसीर खाँ और जेबुन्निसा आ गए। नूरा जेबुन्निसा को देखकर खिल उठा। उसे इतना याद था कि जेबुन्निसा ने उसके गले में बाहें डालकर चौथा पेग जबरन पिलाया था। उसके बाद क्या हुआ, नूरा को कुछ पता नहीं है।

नसीर खाँ उसे छावनी की चौकी पर ले जा रहा था। चौकी के दारोगा अब्दुल ग़नास थे। सलाम-दुआ के बाद उन्होंने नसीर खाँ और नूरा के लिए चाय और डबल रोटी मँगवाई। नूरा गरूर से फूल गया। दारोगा उसकी इतनी लल्लो-चप्पो कर रहा है, उसने सोचा। थोड़ी ही देर में उसका अँगूठा कई कागज़ों पर लगाया गया और फिर नसीर खाँ को हिदायत दी गई कि बाजार में जाकर उसकी फोटो भी खिंच वाली जाए। फोटो खिंचते वक्त नूरा बहुत खुश था। इसके पहले उसने कोई फोटो नहीं देखी थी। जब कोई पन्द्रह मिनट बाद उसे गीला प्रिंट दिखलाया तो अपनी फोटो को देख-देखकर खुशी से नाचने लगा।

नूरा को 'टेम्परेरी' मुख़बिरी के लिए रखा गया। जैसे-जैसे उसकी खबर रंग लाएगी, उसे वैसे ही पैसे मिलेंगे। नसीर खाँ ने वैसे जाल को मजबूत बनाने को उसे दारोगा जी से पच्चीस रुपये दिलवा दिए थे। फोटो सहित एक 'पास' भी उसे दे दिया गया था।

शाम को नसीर खाँ उसे दूसरे जुआघर और नाचघर में ले गया। यह पहले वाले जुआघर से कहीं बड़ा था। यहाँ हल्के लाल रंग की रोशनी हो रही थी। मेजों पर लोग डटे थे। जिस मेज पर नसीर खाँ ने नूरा को बिठाया उसकी पास वाली मेज पर बैठे तीन पठानों ने फुस-फुस करना शुरू कर दिया।

'नसीर खाँ अब की बार किसको फँसा कर लाया है, रहमत?' एक पठान जाम उठाता हुआ बोला।

'नया जमूरा है,' रहमत बोला,'नसीर हबीबा के पीछे पड़ा है। अगर कामयाब हो गया तो चार बीघे ज़मीन और डेढ़ हज़ार रुपया डकारेगा। इस पुछल्ले को पाँच सौ भी पकड़ा दे तो बहुत समझना।'

'पर हबीबा को लोग चाहते हैं', पहला वाला पठान बोला, '...

के नसीर हबीबा को पकड़वाने के लिए सही मुखबिर ढूँढ़ता रहा। इसकी जरूर कोई ज़ाती रंजिश होगी।'

अब की बार तीसरा साथी बोला, 'है। एक कबीले के सरदार की बेटी को ये जमूरा उड़ा रहा था। हबीबा ने उसे बचाया और फिर जैसा कि होता है, पहले हमदर्दी उभरी और फिर हमदर्दी मुहब्बत बन गई।'

नसीर खाँ ने शराब पिलाकर नूरा को जुआ खिलवाया। जाने-पहचाने लोगों में उसे ले गया। पहले से सब कुछ तय था। कोई घंटे भर के अन्दर नूरा दो सौ रुपये जीता। नसीर खाँ सधी हुई चाल चल रहा था। प्याले का शौक और ऊपर से जुए में जीतने का लालच—दोनों ही ख़तरनाक कदम थे। पर मुख़बिर को चाट लगाना जरूरी था। जब शराब और जुए के लिए पैसे नहीं होंगे तभी वह जान-जोखों वाली खबरें लाएगा। नसीर खाँ को आज तीसरा चस्का भी नूरा को लगाना था। स्टेज पर नाचती हुई रुख़-साना तय हो चुकी थी। नूरा जब लड़खड़ाती जुबान से पश्तो का गीत गुन-गुनाता रुख़साना के कमरे में पहुँचा तो वह कामान्ध पिशाच जैसा लग रहा था। नसीर खाँ उसे रुख़साना की बाहों में छोड़ कर बाहर आ गया था।

मेले से वापस आकर हबीबा को ऐसा महसूस होता कि उसकी जिन्दगी तरन्नुम से गुनगुना उठी है। महजबीं की हया और अदा ने हबीबा को लूट लिया था। जब भी वह अकेला बैठता तो तखैयुल में महजबीं से बातें करता रहता। सबसे पहले अनवर ने उसे टोका था, 'सरदार, तुम खोए-खोए से रहने लगे हो। मैं देख रहा हूँ कि तुम अकेले में न जाने हवा से बातें करते हो या दरख्तों से।'

हबीबा झेंप कर बोला, 'तुमने मुझे झिझोड़ कर जगा दिया, अनवर। चलो आज काले पहाड़ के इलाके की तरफ चला जाए।'

और धूल उड़ाती हुई घोड़ों की कतार उसी दम निकल पड़ी।

काले पहाड़ के दर्रे से कुछ-न-कुछ आता ही रहता था। कोई घंटे-भर बाद दो घोड़ागाड़ियाँ धूल उड़ाती नज़र आने लगीं। साथ में केवल छः सवार थे।

'मालूम पड़ता है ज्यादा माल-असबाब नहीं होगा,' हबीबा बोला।

आनन-फानन ही हबीबा के दल ने उन्हें घेर लिया। बग्घी में अंग्रेज औरतें थीं जो लंडीकोतल वापस जा रही थीं। पठानों के दल को देखकर एक-दो बूढ़ी मेमें तो वहीं बेहोश हो गई। पीछे वाली बग्घी से एक मेम हिम्मत करके उतरी। उसके ओठों पर पपड़ी पड़ी हुई थी। उतरते ही उसने हबीबा को पहचान लिया। वह मिसेज काक्रन थी।

हबीबा को देखकर उसे आस बंधी। उसने सूखे स्वर से केवल यह कहा, 'तुम हबीबा ही हो ना?'

हबीबा मुस्कराकर बोला, 'हाँ मेम साहब। और आप हमारे मेहमान और दोस्त मेजर साहब की मेम साहब ही हैं ना?'

सहमते हुए मिसेज काक्रन ने सर हिलाया और फिर बोली, 'हम ईस्टर के त्योहार की तैयारियाँ करके लौट रहे हैं।'

हबीबा हँसा, 'ठीक है मेम साहब। हम लूटने की खातिर घर से निकले हैं।'

मिसेज काक्रन के प्राण सूख गए।

हबीबा आगे बढ़ा, 'घबराओ मत, हम औरतों को नहीं लूटते। सिर्फ़ मर्दों को लूटते हैं। ये जो छः सवार तुम्हारे साथ हैं इनकी बन्दूकें हम ले सकते हैं, पर हम ये भी नहीं लेंगे क्योंकि ये आप के हाफ़िज बनकर जा रहे हैं। अब सवाल यह उठता है कि क्या किया जाए। खाली हाथ लौटना हमारे यहाँ खराब शकुन माना जाता है।'

मिसेज काक्रन की बगल में खड़ी मिसेज जेम्स ने जल्दी से अपनी कलाई से जड़ाऊ 'ब्रेसलेट' उतारना शुरू कर दिया। और मेमों ने भी ज़ेवर उतारना शुरू कर दिया। मिसेज जेम्स काँपते हुए बोली, 'ये लो, हम अपने ज़ेवर तुम्हें दे रहे हैं।'

हबीबा ने हँसकर मिसेज काक्रन से पूछा, 'आपकी तारीफ़?'

मिसेज काक्रन बोली, 'आप कैप्टिन जेम्स की मेम साहब है। इन्हीं की बच्ची को आपने दो हजार की फेरी लौटा दी थी।

हबीबा ने मुस्करा कर मिसेज जेम्स को सलाम किया, 'अपनी बच्ची को हमारा प्यार कहिएगा मेम साहब। वह गुड़िया कैसी है? उस दिन देखकर मुझे लगा जैसे वह मुरझाई हुई गुलाब की कली हो।' फिर इधर-उधर देखकर बोला, 'मुझे बड़ा अफसोस हो रहा है कि आप लोग हबीबा को इतना जलील समझते हैं। हम फिर भी खाली हाथ तो जाएँगे नहीं, यह बात भी तय है। एक मश्वरा आया है दिमाग में, आप कहें तो अर्ज करूँ'।

सब मेमों की टाँगें काँपने लगी थीं। मिसेज काक्रन ही ने हिम्मत करके कहा, 'कौन सा मश्वरा आया है आपने दिमाग में?' हबीबा दिल्लगी के मूड में था। वह मुस्करा कर बोला, 'मेजर साहब को आपने जो केक भिजवाया था उसका एक टुकड़ा उन्होंने मुझे भी पेश किया था। सचमुच आज भी जब उसका जायका याद आता है तो मैं चटखारे लेता हूँ। अगर आप के पास केक हो तो मुझे दे दीजिएगा। पर हम केक भी आपसे छीनेंगे नहीं। सिर्फ माँगेंगे।'

सब की शक्ल पर वापस खून दौड़ने लगा। उत्तेजित होकर मिसेज

जेम्स बोली, 'मेरे टिफन की टोकरी में पूरा का पूरा केक पड़ा है। आप जरूर ले लीजिए।' वह भाग कर गई और केक उठा लाई।

मिसेज काऊन बोली, 'अफसोस, मेरा वाला केक रास्ते में फुर्र हो गया पर मैं वादा करती हूँ कि अगर सुभीता हुआ तो आप को एक क्या दो केक बनवा कर भिजवा दूँगी।'

हबीबा ने केक ले लिया। फिर हँसकर बोला, 'इसकी ऐवज में हम आपको क्या दे सकते हैं।'

सब घबराहट मिली खुशी से बोली, 'हमें कुछ भी नहीं चाहिए। हमें कुछ भी नहीं चाहिए।'

हबीबा बोला, 'अच्छा तो इसकी ऐवज में हम आप को दर्रे के आखरी छोर तक हिफाजत से छोड़कर ही वापस जाएँगे।'

सब ने एक दूसरे की तरफ देखा। हबीबा का सुन्दर रूप और पत्थर जैसा तराशा शरीर उनकी आँखों में बस गया।

दर्रे के छोर पर छोड़ते हुए हबीबा बोला, 'आपको एक मशवरा और देता हूँ। सूरज ढलते वक्त कभी आइन्दा सफर मत कीजिएगा। और मेजर साहब और कप्तान साहब को मेरा सलाम कहिएगा।'

रास्ते में मिसेज काऊन से मिसेज जेम्स ने कहा, 'मेरी बड़ी तमन्ना थी कि हबीबा को देखूँ। आज वह भी पूरी हो गई हबीबा 'एडोनिस' जैसा सुन्दर है और हिरन के बच्चे जैसा कोमल दिल रखता है, यह मैंने आज देखा।'

सब की सब हबीबा के गुण गाती हुई वापस लौट आईं। घर पर आकर जब यह वाकाया सुनाया तो आफिसर्स मैस में मेजर काऊन ने शराब का जाम उठाकर कहा, 'ये पेग हम अपने दोस्त और दुश्मन हबीबा के लिए पीएँगे।'

सबने गिलास टकराते हुए कहा, 'टू हबीबा, आवर फ्रेंड एंड एनिमी!'

गुलसमन जब मेले से लौटकर आई तो उसे खुशी भी थी और रंज भी। खुशी तो इस बात की कि महजबीं की ओर से कोई शोला नहीं भड़का था बल्कि एक नफ़रत की चिनगारी उड़ी थी जिसे सुनकर गुलसमन को भी अपना सिर नीचा करना पड़ा। और दुख इस बात का हुआ कि कबीले का होने वाला सरदार इस कदर गिर रहा है कि जा-बेजा तक का इम्तयाज़ नहीं रहा। गुलसमन सीधे नूरा के घर पहुँची तो पता लगा कि वह शायद पेशावर गया हुआ है।

गुलसमन लौट कर आई और उसे सहसा पेड़ के नीचे पोटली दबाने वाली बात याद हो उठी। वह रात को करवटें बदलती रही और फिर आधी रात के बाद उठकर उस जगह को बेलचे से खोदने लगी। करीब आधा घंटे बाद वह इस काम को अंजाम दे सकी। जब पोटली उठाई तो उसमें चाँदी के टकसाली रुपये भरे थे। जल्दी से उसने गड्ढ़ा भर दिया, और पोटली घर में ले आई। दूसरे दिन जब उसकी माँ बाजार से सौदा-सुलफ लेने गई तो गुलसमन ने रुपये गिने। पूरे दो हजार रुपये थे।

गिनने के बाद वह पशोपेश में पड़ गई कि अब क्या किया जाए। उसने फ़ैसला किया कि वह रुपयों की पोटली को नूरा के घर के ऐन सामने वाले पेड़ के नीचे दाब आएगी। वहीं लकड़ी का तख्त बिछाए सरदार हिलाल खाँ बैठ कर हुक्का पिया करते थे और गाँव वालों से इधर-उधर के हालचाल सुना करते थे।

रात को गुलसमन ने रुपयों की पोटली को सरदार के तख्त के नीचे गाड़ दिया और फिर ज़मीन चौरस करके वापस आ गई।

दोपहर को वह ईदू खाँ को बेचैनी से ढूँढ़ रही थी। आखिर नूरा पेशावर किस वजह से गया है उसे यह फिक्र लगी हुई थी। ईदू खाँ नूरा का बचपन का दोस्त था।

जब नूरा पेशावर गया था तो ईदू तक को उसने यह राज़ नहीं बतलाया था। ईदू को इस बात से मलाल हुआ। बस दुबका-चोरी उसके पीछे-पीछे चल दिया था। नसीर खाँ के साथ क्या-क्या नूरा ने गुल खिलाए यह सब देख रहा था। ईदू समझ गया कि नूरा हबीबा की नफरत में अंधा हो गया है और वह कबीले का ईमान तक बेचने पर उतारू हो गया है। ईदू नूरा

का खास दोस्त था। नूरा ने ही उसे एक दुनाली भेंट की थी। ईंदू ने यह भी जमीर की तराजू में तोल कर देखा था कि हबीबा ख्वाह दुश्मन नहीं, पर है जाँबाज बहादुर। ईंदू भी बहादुरी का कद्र शनारा था। कैप्टिन जेम्स की बेटी वाला किस्सा वह भूला नहीं था। उसके दिल से हबीबा के लिए वाह-वाह निकली थी। और आज ईंदू देख रहा है कि नूरा अपने बुजुर्गों के कफन तक के सौदे कर रहा है। ईंदू ने अलग होने का तहय्या कर लिया था। नूरा के लौटते ही ईंदू ने भारी मन से उससे पूछा, 'कहाँ गए थे सरदार ?'

नूरा ने चौंककर कहा, 'पेशावर गया था ईंदू। मेरा इरादा अब फल की दुकान करने का है। लूटा-खसोटी में कुछ भी नहीं रखा है।'

ईंदू साँस भर कर बोला, 'ये तुमने नेक बात सोची सरदार। वाकई लूटा-खसोटी में क्या रखा है।' और उसने दुनाली उठाकर नूरा को वापस देते हुए कहा, 'आपकी अमानत लौटा रहा हूँ सरदार।'

नूरा चौंका, 'तो क्या तुम मेरे साथ पेशावर में हाथ बँटाओगे ?'

ईंदू ने भर्राए गले से कहा, 'नहीं सरदार, आपका हाथ बँटाने तो उकाखेल का नसीर खाँ आपको मिल ही गया है। मैं कुछ न कुछ कर लूँगा।'

नूरा ने तड़पकर ईंदू के मुँह पर तमाचा मारा। 'तो तू मुखबिरी और जासूसी भी करने लगा है !'

ईंदू ने ओठ के किनारे से खून पोंछते हुए कहा, 'मेरी ऐसी कहाँ हिम्मत कि मुखबिरी करूँ सरदार। मुखबिरी बड़े-बड़े लोग ही कर सकते हैं।' और ईंदू वापस लौटने लगा।

नूरा साँप जैसी आँखों से उसे देखता रहा।

जाते वक्त ईंदू बोला, 'सरदार, मैं कुरान शरीफ की कसम खाकर कहता हूँ कि तुम्हारे इस राज़ को किसी को भी नहीं बताऊँगा।'

ईंदू आज उदास अपने घर की देहरी पर बैठा था कि गुलसमन आ गई। गुलसमन ने उसकी तबियत उचाट देखी। 'क्यों ईंदू भाई, नूरा कहाँ गया है ?' उसने पूछा।

'नूरा पेशावर में फलों की तिजारत करने वाला है और शायद वहीं बस भी जाएगा,' ईंदू बोला।

गुलसमन पर मानो बिजली गिर पड़ी हो। कुछ देर इधर-उधर की बात करके उसने डरते हुए दो हजार रुपयों की बात छेड़ी। यह सुनकर ईदू चौंक पड़ा और बोला, 'हबीबा कितना नेक और बहादुर है गुलसमन। ये मैंने आज जाना। ऐसे बहादुर के साथ रहने में कितना गरूर होगा मुझे।'

ईदू ने दो हजार वाली बात गुलसमन को बतला दी। गुलसमन भारी मन से सब कुछ सुनती रही।

ईदू खाँ अपना घोड़ा लेकर उरकजई कबीले की ओर उड़ा जा रहा था। आज उसने तय कर लिया था कि वह हबीबा के गिरोह में मिल जाएगा। नूरा उसका बचपन का दोस्त जरूर था पर ईदू को अब अहसास होने लगा था कि नूरा सच्चाई का रास्ता छोड़कर ग़लत मंजिल की ओर बढ़ने लगा है। शराब, जुआ और बाजारू औरतों का चस्का नसीर खाँ लगा ही रहा है जिससे नूरा हमेशा-हमेशा के लिए कबीले से छिन जाएगा। ये बातें मन में निबेड़ता हुआ ईदू घोड़े पर सरपट जा रहा था। उसके पास सिर्फ एक तलवार थी जो उसके अब्बा की यादगार थी। नूरा की दुनाली बन्दूक उसने लौटा दी थी। बन्दूक दे देने से उसे लगा जैसे उसका एक हाथ कट गया हो।

उरकजई कबीले से थोड़ी ही दूर हबीबा का ख़ास मुख़बिर परचम खाँ उसे रास्ते में मिला। परचम खाँ की याददाश्त बड़ी तेज थी। राज को पचाने का हाज्मा भी बहुत अच्छा था। आसपास के क़बीलों की हरकत और उनके सरदार एवं साथी के नाम उसे रटे पड़े थे। ईदू को देखकर फ़ौरन ही परचम खाँ ने अंदाज लगाया कि हो न हो ईदू खाँ हबीबा से मिलने जा रहा है। उसने घोड़ा मोड़कर दूसरे रास्ते पर डाल दिया।

हबीबा बरगद के नीचे अपने साथियों से सलाह-मशवरा कर रहा था। परचम खाँ ने पास आकर घोड़ा रोका और बोला, 'सरदार, नूर खाँ का

ख़ास दोस्त ईदू खाँ आ रहा है। ये तो आप जानते ही होंगे कि नूर खाँ आजकल पेशावर में घुसपैठ कर रहा है।'

हबीबा ने सोचते हुए सर हिलाया।

'मुझे तो इसमें कुछ चाल नजर आती है,' अनवर बोला।

'देखेंगे, पहले ईदू को आने तो दो,' हबीबा बोला। थोड़ी ही देर में उसे घोड़े की टाप सुनाई देने लगी। सब सँभलकर बैठ गए।

ईदू खाँ घोड़े से उतर कर आया और सलाम करता हुआ बोला, 'सलाम वालेकुम, सरदार।'

'वाल कुम अस्सलाम, ईदू खाँ' मुस्कराकर हबीबा बोला।

ईदू खाँ अपना नाम हबीबा के मुँह से सुनकर चौंका, पर उसने अचरज को जाहिर नहीं होने दिया।

ईदू खाँ बोला, 'सरदार, मैं पहले नूर खाँ का ख़ास दोस्त और बचपन का साथी था। अफसोस, नूर खाँ के पाँव डगमगा गए हैं। मुझे अहसास हुआ कि मुझे उससे अब अलग हो जाना चाहिए। उसकी दी हुई बन्दूक को मैंने उसे वापस कर दिया है। मैंने ये भी तहय्या कर लिया है कि जो भी नया काम वह पेशावर में शुरू करने वाला है उसमें मैं शिरकत नहीं कर सकता।'

बीच में बात काटते हुए परचम खाँ बोल पड़ा, 'पेशावर में कौन-सा नया काम करने जा रहे हैं तुम्हारे दोस्त?'

ईदू खाँ उसकी आँखों में आँख डालता बोला, 'खान, मैंने बरसों नूर खाँ का नमक खाया है। एक दोस्त का फर्ज है कि दूसरे दोस्त की ग़लती को ढककर रखे। मैंने उसे समझाया तो नूर खाँ ने मेरे मुँह पर भरपूर तमाचा मारा। मैं तमाचे को बरदाश्त कर गया।'

परचम खाँ फिर बोला, 'पर नया काम कौन-सा है जो वह करने गया है?'

ईदू खाँ धीरे से हँसा, 'मैंने कहा ना। उसका ऐब ढकना मेरा फ़र्ज़ है। वह गलत रास्ते पर चल रहा है पर कभी न कभी उसे अकल आएगी।'

हबीबा बोला, 'मेरे पास किस मुद्दए से आए हो, खान?'

ईदू खाँ ने जवाब दिया, 'मैं बहादुरी का क़द्रदान हूँ, सरदार। मैंने

आपकी बहादुरी को परखा है। इसके अलावा आपका क़िरदार भी इस क़दर ऊँचा है कि दुश्मन तक आफ़री कहने पर मजबूर हो जाता है। क्या आप मुझे अपने गिरोह में शामिल करना गवारा समझेंगे?'

एक सन्नाटा छा गया। सबकी आँखें हबीबा की ओर लगी थीं।

'ईदू खाँ, तुम साफ़गो आदमी हो,' हबीबा बोला, 'मैं साफ़गो आदमी की इज्जत करता हूँ। मुझे तुम्हें अपने गिरोह में शामिल करने में कोई उज्र नहीं है पर एक दरख्वास्त मैं ये जरूर करूँगा कि तुम एक सच्चे दोस्त का फ़र्ज अदा करो तो ज्यादा बेहतर होगा। नूर खाँ के क़दम अगर बहक गए हैं तो उसे इस वक्त तुम्हारी मदद की सख्त जरूरत है। तुम्हारा फ़र्ज है कि हजार बातें सुनकर भी उसको सही रास्ते पर लाओ।'

ईदू सुनता रहा। हबीबा ने पास आकर उसके कंधे पर हाथ रखा और कहा, 'तुम ये मत समझना कि मैं तुम्हें बहलाकर टाल रहा हूँ। अगर तुम्हें इसी में तस्कीन है तो तुम आज से ही गिरोह में शामिल हो जाओ। पर हक बात कहने पर कोई हर्ज नहीं। तुम्हें पहचानकर ही मैंने ये बात कही है दोस्त।'

ईदू खाँ ने जवाब दिया, 'शुक्रिया सरदार, आपकी सलाह नेक है। मैं नूर खाँ को समझाने फिर जाऊँगा। इसके अलावा जो ख़बर तुम्हारे फायदे की होगी वह भी तुम्हें जरूर पहुँचवाऊँगा।'

ईदू खाँ सलाम करके वापस चलने लगा।

'ठहरो ईदू खाँ,' हबीबा बोला, 'तुमने दोस्ती का हाथ बढ़ाया है तो हमें भी तो कुछ दोस्ती का फ़र्ज अदा करने दो। नूर खाँ को ये भी समझाना कि हम दोनों के अब्बा दोस्त है, दोनों कबीले दोस्त है। नूर खाँ की हरकतों को मैं पसन्द नहीं करता। मेरी उससे कोई ज़ाती दुश्मनी नहीं है।' फिर हाल ही में अंग्रेजी चौकी से छीनी हुई एक राइफ़ल उठाकर हबीबा ने ईदू खाँ को देते हुए कहा, 'ये हबीबा की तरफ़ से एक नज़राना है दोस्त। इसे कबूल करो।'

ईदू खाँ अवाक् रह गया। उसका गला भर्राया, 'सरदार, एक पठान की इससे ज्यादा इज्ज़त और कुछ नहीं है। मैं आपकी इस राइफ़ल की क़सम खाकर कहता हूँ कि ये राइफ़ल तुम्हारी ही तरफ से गरजेगी। मैं

तुम्हारा नमक-हलाल दोस्त हूँ।'

हबीबा से हाथ मिलाकर ईदू खाँ घोडे पर बैठकर चल दिया। कंधे पर हबीबा की राइफल टँगी हुई थी।

ईदू खाँ सोचता जा रहा था, 'बहुत भारी बोझ तुमने मेरे कंधों पर रख दिया है हबीबा। खुदा करे, इस बोझ को मैं उतार पाने के काबिल बन सकूँ।'

जिस दिन से ईदू खाँ नूरा से जुदा हुआ था उसी दिन से उसके बाकी के साथी भी इधर-उधर हो गए। एक तो काबुल चला गया और दूसरे ने बन्नू में नौकरी कर ली। नूरा बिलकुल अकेला रह गया था।

उसे बस एक ही धुन सवार थी। किसी तरह से हबीबा को पकड़वाना।

वह घोडे पर बैठे-बैठे इधर-उधर खाक उड़ाता रहा। उसने हबीबा के किसी भी आदमी को तोड़ने की बहुत कोशिश की, पर नाकामयाब रहा। हबीबा के आदमी हबीबा को प्यार करते थे। उन्हें कभी यह अहसास नहीं हुआ कि वे हबीबा के नीचे मातहत साथी हैं। हबीबा ने प्यार की बेड़ियाँ उन्हें पहना रखी थीं। नूरा ने बहुत सर पटका पर किसी को फोड़ नहीं सका।

तभी सहसा उसे महजबीं का खयाल आया। हबीबा और महजबीं की मुलाकात के बारे में उसे भनक पड़ गई थी। सहसा उसके चेहरे पर खुशी की लाली छा गई। 'ये तो तूने सोचा ही नहीं, नूरे' वह स्वयं अपने से बोला, 'महजबीं का नाम लेने पर तो ये खन्जीर हबीबा जहन्नुम तक आ जाएगा।'

उसी दिन से नूरा जोड़-तोड़ बैठाने लगा, पर कामयाबी के कोई आसार नज़र नहीं आ रहे थे।

नूरा अकेला दरख्त के साये के नीचे लेटा सोच रहा था। उसे यह नहीं

मालूम था कि सौ ग़ज दूर हबीबा की राइफ़ल लटकाए ईदू खाँ भी छिपकर उसका पीछा कर रहा है। ईदू खाँ उसी दिन से उसके पीछे-पीछे साये की तरह चलने लगा था।

नूरा थोड़ी देर बाद चल दिया और पीछे-पीछे ईदू खाँ भी चल दिया। दस दिन गुज़र गए पर हबीबा की कोई भी खबर उसके हाथ नहीं लग पाई थी। नूरा को पेशावर का जुआघर याद आने लगा था। शराब के जाम, जुए की बाज़ी और फिर रुख़सांना की मरमरी बाहें। पिछली बार वह अपने अब्बा हिलाल खाँ से दो सौ रुपये ले चुका था जो पेशावर में पाँच दिन में उड़ गए थे। नूरा को रुपये चाहिए थे। कहाँ से लाए वह रुपये। इसी उधेड़-बुन में था। सहसा उसे हबीबा के दिए दो हज़ार रुपयों की याद उठ आई। उसके चेहरे पर मुस्कान फैल गई। दो हजार में तो वह एक महीने तक दिलबोर कर ऐश कर सकता है। नूरा को बड़ी तसल्ली हुई।

रात को करीब डेढ़ बजे उसकी हवेली का दरवाज़ा चरमराया। गुलसमन को उसके आने का पता चल गया था। वह लेटी हुई करवटें बदल रही थी। न जाने उसकी नींद कहाँ चली गई थी। जब उसने हवेली के दरवाज़े की चर-मराहट सुनी तो वह चौंक पड़ी। जल्दी से खिड़की से झाँककर उसने देखा। हल्की चाँदनी में उसने अंदाज लगा लिया कि नूरा बाहर निकल रहा था। गुलसमन का दिल धक्-धक् करने लगा। हो न हो नूरा अपनी पोटली निकालने जा रहा है जिसे गुलसमन ने पहले से ही निकालकर सरदार हिलाल खाँ के लकड़ी के तख्त के नीचे छुपा रखा है। काँपती हुई गुलसमन पीछे-पीछे चल दी। उनका अंदाज ठीक ही निकला। नूरा ने पोटली वाली जगह को खोदा और फिर वह भौचक्का-सा देखता रहा। बौखलाहट में वह आसपास भी खोदने लगा और जब कुछ हाथ नहीं आया तो बैठकर सोचने लगा। नूरा अपने दिमाग में पेशावर के सपने सँजोए बैठा था और इधर पोटली ही नदारद हो गई है। नूरा सहसा उठा और दाँत पीसने लगा। हल्की चाँदनी में उसका चेहरा विकृत लगने लगा।

उसने इधर-उधर देखा और फिर बाज़ार की तरफ़ चल दिया। बाज़ार पहुँचकर वह शेख़ रमजान की दुकान के पास रुका और फिर पीछे जाकर उसने सेंध लगानी शुरू कर दी। कोई आधे घंटे के अंदर उसने काफ़ी बड़ा

छेद बना लिया और फिर वह अंदर घुस पड़ा।

गुलसमन यह देखकर कांप उठी, 'नूरा, चोरी करने लगा है। कबीले के सरदार का बेटा और एक जलील चोर!' कुछ ही देर बाद नूरा बाहर आया। वह नंगे बदन था। अपने कुरते में उसने पैसे भर रखे थे। दुकान से चोरी करके वह चला गया।

गुलसमन घंटों तक बिस्तर पर पड़ी रोती रही। दूसरे दिन कबीले में हाहाकार मच गया। आज तक कबीले में कभी चोरी नहीं हुई थी। शायद यह पहला मौका था जब चोरी की वारदात हुई हो। सब तरफ चोरी के चर्चे होने लगे। स्वयं सरदार हिलाल खाँ मौके वारदात पर आए और आश्चर्य से देखते रहे। एक अनहोनी हुई थी कबीले में।

गुलसमन शाम को ईदू के घर पहुँची और उसने सारा चश्मदीद वाकया उसे सुना डाला। ईदू सुनकर उदास हो गया।

'नूरा को यह क्या होता जा रहा है, गुलसमन,' वह दुखी स्वर में बोला, जब से वह पेशावर की हवा खा आया है, बदलता जा रहा है।'

एक-दो दिन के बाद नूरा पेशावर चल दिया। शेख रमज़ान की दुकान से उसे सौ रुपये नकद और कुछ चाँदी के ज़ेवर मिले थे। नूरा खुश था। ईदू उसके पीछे-पीछे साये की तरह लगा हुआ था।

सबसे पहले नूरा ने बाज़ार में जाकर चाँदी के ज़ेवर बेच डाले, जिनके उसे चालीस रुपये मिले। इसके बाद वह गुनगुनाता हुआ नसीर खाँ के मकान पर पहुँचा। नसीर खाँ ने तपाक से उससे हाथ मिलाया, 'आओ नूर खाँ, क्या खबर लाए हो?'

नूरा ने कहा, 'हवीबा का पता अभी नहीं चल पा रहा है खान। पर मुझे एक तरकीब सूझी है, उसी के बारे में तुमसे सलाह-मशवरा करना है। बेहतर है कि हम कुछ जाम ढालने के बाद गुफ्तगू करें।'

नसीर खाँ समझा कि नूरा फिर से उसके पैसे खर्च करवाने आया है। वह कुछ अनमना-सा हुआ पर इसी बीच नूरा जेब खनखनाता हुआ बोला, पैसों की फिक्र न करो, खान। आज तुम मेरे मेहमान हो।'

नसीर खाँ ने आँखें छोटी करके उसे देखा और फिर साथ हो लिया।

'चलो आज तुम्हें एक और बढ़िया जगह ले चलूं,' नसीर खाँ [illegible]

बोला। नूरा का चेहरा खिल उठा। नसीर खाँ उसे एक बढ़िया नाचघर में ले गया। मेजों के आसपास सिगरेट का धुँआ इतना घना था कि लगता था कि आवारा बादलों की छोटी-छोटी टुकड़ियाँ हॉल में तैर रही हों। स्टेज पर एक खूबसूरत लड़की नाचते हुए गा रही थी। उसका सीना और कमर ही ढका हुआ था, बाकी हिस्सा सब नंगा था। स्टेज के किनारे से कभी उस पर नीली रोशनी पड़ती तो कभी लाल। रोशनी पड़ने से वह और भी खूबसूरत लगने लगती।

नूरा ने आज पूरी बोतल और तंदूरी मुर्गा मँगवाया था। एक मेज़ छोड़कर ईदू बैठा हुआ शरबत के घूंट भर रहा था।

'तुम कुछ तरकीब बता रहे थे नूरा भाई,' नसीर खाँ बोला।

'हाँ, पर वह तरकीब मैं बाद में बताऊँगा,' नूरा बोला, 'दीवारों के भी कान होते हैं दोस्त।'

घंटे भर बाद वे दोनों ही नशे में हो गए थे। नसीर खाँ उसे अब रुखसाना के पास ले चला था। रुखसाना को आने में देर थी इसलिए वे दोनों बैठे इन्तजार करने लगे। नसीर खाँ को बस एक ही रट लगी थी, 'तो कौन-सी तरकीब है वह नूरा भाई?'

नूरा हँसा और बोला, 'हबीबा का इश्क महजबीं से चल रहा है, ख़ान। अगर महजबीं के नाम से उसे बुलवाया जाए तो हबीबा जरूर आएगा। बाक़ी का जाल तुम बुन डालो।'

नसीर खाँ ने गम्भीर होकर 'हूँ' कहा। 'ये महजबीं है कौन नूरा भाई? उसने पूछा।

नशे की झुनक में नूरा ने सब किस्सा बतला दिया और फिर दाँत पीसकर बोला, 'उस फुलझड़ी से मुझे भी बदला लेना है ख़ान। इन्शाअल्लाह कभी न कभी तो मेरे पहलू में आएगी ही।'

नसीर खाँ पुराना जालसाज़ था। उसने बात को समझा और फिर वह कुलाबे भिड़ाने लगा। थोड़ी देर बाद नूरा को रुखसाना के पास छोड़कर वह चल दिया।

नसीर खाँ सीधा घर गया और सो गया। सुबह उठकर वह थाने पहुँचा और दारोगा से सलाह-मशवरा करने लगा। दारोगा पुराना घाघ था। सारी

दास्तान सुनकर बोला, 'अगर य बात सच है तो काम बन सकता है। पर सारी ऊँच-नीच को तोलना पड़ेगा। ज़रा-सी चूक में सारा खेल बिगड़ सकता है।'

दारोगा ने अपने दो चुने हुए मुख़बिर भेजे थे। महजबीं का पता और उसके भाई गुलफ़ाम की आदतें वे देख रहे थे। उन्होंने यह भी पता लगा लिया था कि पिछली बार हबीबा और महजबी मेले में मिले थे और उन्हें मिलवाने में महजबी के भाई गुलफाम का हाथ था। पूरा षड्यन्त्र दारोगा ने अपने हाथों में ले लिया। महजबी की चाल-ढाल, कपड़ों की पसन्द, ज़ेवर की पसन्द – सब कुछ उसने पैसा खर्च करके पता लगाया था। उसे पता चला कि महजबी लाल रंग के मख़मल का लिबास बहुत पसन्द करती है। हाल ही में शाह नज़ीर के मज़ार का मेला फिर होने वाला था। दारोगा सतर्क हो गया था। उसने महजबी के कपड़े सीने वाले दर्ज़ी तक का पता लगा लिया था। नसीर खाँ को भेजकर उसने हू-ब-हू वैसे ही कपड़े सिलवाए थे। इसके बाद वह चौकन्ना होकर मेले का इन्तज़ार करने लगा। नसीर और नूरा भी साज़िश में शामिल थे। इनके अलावा चार-पाँच सिपाही भी मुस्तैद थे।

आख़िर मेला आ ही गया। हबीबा को गुलफाम ने ही ख़बर करवाई थी कि वह शाह नज़ीर के मेले में उसके साथ खाना खाए। हबीबा ख़ुद भी महजबी से मिलने को बेकरार था। हबीबा अपने चार-पाँच साथियों के साथ चल निकला। गुलफाम के साथ लाल मख़मल में उसने महजबी को दूर से देख लिया था। हबीबा मुस्कराया। वह महजबी को तंग करके फिर मिलना चाहता था। आख़िर इन्तज़ार का मज़ा भी तो कुछ मायने रखता है। उधर दारोगा और उसके साथी गिद्ध जैसी नज़रों से सब कुछ देख रहे थे।

पहली चाल दारोगा ने यह चली कि चार आदमी और दो औरतों को गुलफाम और महजबी के पास भेजा जिन्होंने सादगी से कहा कि हबीब खाँ बड़े रहट के पीछे उनका इन्तज़ार कर रहे हैं। महजबी की आँखों में चमक आ गई। गुलफाम और महजबी अपने साथियों के साथ रहट की तरफ चल दिए। रहट पश्चिम की तरफ लगा था।

हबीबा उस वक्त चाँदी के पायज़ेब ख़रीद रहा था कि दारोगा की एक

मुखबिर औरत ने पास आकर कहा, 'सरदार हबीबा खाँ, महजबीं बानो आपका इन्तज़ार कर रही हैं।' हबीबा ने चौंककर उसे देखा। तभी उस औरत ने मेले के एक छोर पर छोटी-सी पहाड़ी पर मखमल के लिबास में महजबीं को देखा। जैसे ही हबीबा ने उधर देखा, उसे महजबीं ने हाथ उठाकर सलाम किया।

हबीबा तड़प उठा और लम्बे-लम्बे डग भरता हुआ पहाड़ी की ओर बढ़ने लगा। पहाड़ी पर पहुँचते ही उसने महजबीं को पीठ करे देखा। वह समझा कि महजबीं रुठी हुई है। पहाड़ी सुनसान थी। सिर्फ नीचे मेले की बहार फैली थी। उसने जाकर महजबीं के कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'नाराज हो न, हो महजबीं ? मैंने तो बहुत पहले तुम्हें देख लिया था। सुर्ख़ मखमल में तो तुम क़यामत ढाती हो।' और हबीबा ने महजबीं के कंधे पकड़कर उसे अपनी ओर किया।

चेहरा देखते ही हबीबा को बिजली का करेंट जैसा लगा।

वह औरत महजबीं नहीं थी !

हबीबा सिर्फ़ इतना कह पाया, 'कौन हो तुम ?' कि पीछे से दस आदमियों ने झपटकर उसे दबोच लिया। लाल मखमल की पोशाक में रुखसाना उनके साथ आई थी। आनन-फानन उन्होंने हबीबा का मुँह बाँध लिया और पहाड़ी के उस तरफ खड़ी गाड़ी में उसे डाल लिया। उसे ले जाते वक्त नूरा हँसकर बोला, 'सलाम वालेकुम सरदार हबीब खाँ साहब।'

नूरा फिर दारोगा से बोला, 'महजबीं कहाँ गई हुजूर? उसे भी साथ ले चलना है।'

दारोगा ने डपटकर कहा, 'बको मत। उससे बाद में जैसे चाहो तुम निबट लेना। मुझे हबीबा चाहिए था सो मिल गया। अब देर बिल्कुल नहीं करनी है, नसीर खाँ। भाग चलो।'

नूरा 'महजबीं महजबीं' की रट लगाए बड़बड़ाता रहा। सब जल्दी से गाड़ी में बैठकर निकल गए। सिर्फ़ ईदू खाँ छुपा हुआ सब तमाशा देख रहा था।

ईदू अकेला था। उसके दिमाग में तूफ़ान सा खड़ा हो गया। फिर वह पलट कर मुड़ा। भीड़-भाड़ में गुलफ़ाम और महजबीं को ढूंढ़ना फूस के ढेर

मे सुई ढूंढने के बराबर था। ईंदू ने वक्त खराब करना ठीक नहीं समझा। वह घोड़ा लेकर चल दिया। उसे मालूम था कि दर्रा पारकर के आखिर वे लोग हबीबा को पेशावर ही ले गए होंगे। वह सीधा पेशावर की तरफ चल दिया। सफर लम्बा था और काम जोखिम का था।

दूसरे दिन ईंदू खाँ नसीर खाँ के घर के पास मँडराता रहा। घर के सामने वाली दर्जी की दुकान पर वह बैठा रहा। रात को ग्यारह बजे के करीब नसीर खाँ और नूरा हँसते हुए वापस आए।

'तुम्हें अपना शिकार तो मिल गया, खान,' मोटी जबान से नूरा बोला, 'मेरे शिकार का भी खयाल करो ना।'

'घबराओ मत, सबके काम बनेंगे,' नसीर खाँ बोला।

ईंदू खाँ थाने हो आया था। वहाँ हवालात में हबीबा बन्द नहीं किया गया था। इसके बाद वह पल्टन के कोट गारद के आस पास मँडराता रहा। पर वहाँ घुसना मुमकिन नहीं था। उसे हबीबा का पता लगाना बहुत जरूरी था। अब वह ठीक जगह पहुँच गया था। नसीर और नूरा जरूर उगलेंगे।

करीब पन्द्रह मिनट बाद नसीर खाँ और नूरा घर से कपड़े बदल कर निकले। ईंदू खाँ ने चैन की साँस ली और पीछे-पीछे चल दिया। दोनों थाने की ओर जा रहे थे। थाने के पिछवाड़े दारोगा का क्वाटर था। दोनों वहाँ जाकर रुक गए और फिर नूरा को छोड़कर नसीर खाँ ने दरवाजे की साँकल खड़खड़ाई। दारोगा पेशदार शलवार पहने आया और नसीर खाँ को देखकर बोला, 'नसीर, हम सब कब्रिस्तान के पीछे मिलेंगे। वहीं पर बातें होंगी। हबीबा के क्या हाल चाल हैं?'

'ठीक है हुजूर,' नसीर बोला, 'चार-पाँच आदमी निगरानी भी कर रहे हैं।'

इसके बाद नसीर लौटकर नूरा के पास आ गया।

थोड़ी देर बाद दारोगा मुफ्ती कपड़ों में निकला और वे तीनों चल पड़े। अंग्रेजों के कब्रिस्तान के पास ही एक सायेदार पेड़ के नीचे वे जम गए। ईंदू सिमटता हुआ पास की कब्र की ओट में बैठ गया। नसीर ने सहमते हुए कहा, 'अब हुजूर ही आगे की स्कीम बतलाएँगे।'

दारोगा ने मूछों पर ताव देते हुए कहा, 'ये तुम्हारा जमूरा जो है ना

वह एक नम्बर का उल्लू का पट्ठा है। चलते वक्त साला अपनी लैला का रोना ले बैठा। अबे, हमें पहले असली शिकार को हासिल करना था या इस सूअर की लम्डिया को !'

दारोगा का पारा चढ़ते देख नसीर ने नूरा से कहा, 'माफ़ी माँग दरोगा जी से, नूरा।'

नूरा ने फौरन माँफ़ी माँग ली। दारोगा थोड़ा पिघला और बोला, 'सुनो, अब काम ऐसे होगा। हबीबा के गुम होते ही उसका कबीले और आसपास दोस्तों में खलबली होगी। हो सकता है कुछ वफ़ादार साथी हबीबा को ढूँढ़ने भी भेस बदल-बदल कर निकलेंगें। इसका हमें फायदा उठाना होगा सबसे पहले हबीबा के कबीले में खबर भिजवाओ कि हबीबा को जका-खेल के कुछ बदमाश उठा ले गए हैं और वे दो हज़ार फिरौती मागते हैं। मुझे पूरा भरोसा है, हबीबा का बाप फिरौती का इन्तज़ाम करेगा। दूसरे इस बेवकूफ़ की शीरीं के कबीले में भी खबर पहुँचाओ कि वह खुद एक हज़ार की फिरौती लेकर अपने भाई के साथ पोशीदा तरीके से यहाँ आए। एक हज़ार हम रखेंगे और लड़की ये ले ले, हमारी बला से। इसके बाद ही हबीबा की गिरफ्तारी का राज़ सरकार को बतलाया जाएगा। और दो हज़ार का इनाम और तमगा हमें मिलेगा और तुम्हारा मेहनताना हम देंगे।'

नसीर सर हिलाकर बोला, 'वाह हज़ूर मान गए आपके दिमाग को।'

नूरा भी बड़ा प्रभावित हुआ और सर हिला-हिलाकर बात की गहराई को सोचता रहा।

'तो इसका मतलब ये हुआ हजूर कि हबीबा कुछ दिन और उस जगह पर रखा जाएगा ?' नसीर बोला।

'बिलकुल' दारोग़ा बोला, 'और उसकी ज़िम्मेदारी तुम्हारी है मियाँ।'

'अजी हजूर फ़िकर ना करें' नसीर बोला, 'मक्खी तक बगैर मेरी रज़ा के हबीबा के पास नहीं पहुँच सकती।' इसके बाद मीटिंग खत्म हुई। ईदू समझ गया कि हबीबा के पास जाने लिए उसे नसीर का पीछा करना पड़ेगा। नसीर और नूरा छावनी के बाजार की ओर हो लिए। कुछ दूर चले होंगे कि कैप्टिन जेम्स सामने से आता दिखाई दिया। उसे देखते ही नूरा को साँप सूँघ गया। उसने आव देखा न ताव और वह भागकर पास की दुकान के

बगल में रखे सामान के ढेर में छुप गया। नमीर हक्का-बक्का सा देखता रहा। इधर ईदू कैप्टिन जेम्स को पहचान गया। यह वही साहब था जिसकी बेटी को नूरा ने उठाया था और हबीबा ने आकर फिरौती भी लौटा दी थी। ईदू को आस बंधी कि अगर कैप्टिन जेम्स को किसी तरह यह बतला दिया जाए तो कम से कम हबीबा सरकारी कैदखाने में आ जाएगा और नूरा को यहाँ जमना मुश्किल पड़ जाएगा। यह सब सोच समझ कर ईदू कैप्टिन जेम्स के पीछे-पीछे चल दिया। कैप्टिन जेम्स अफसर मैस जा रहा था। वह मैस का सेक्रेटरी था और अकसर सामान वगैरह चेक करने निकल पड़ता था। ईदू मैस के पिछवाड़े होकर घुसा और बावर्चीखाने के पास ही एक झाड़ी में बैठ गया। आबदार जबर खाँ पीछे से देगची साफ करते हुए आ रहा था। झाड़ी में खड़-खड़ सुन कर उसके कान खड़े हुए और उसने सारस-सी गर्दन लम्बी करके देखा तो ईदू मैस की तरफ देख रहा था। हाल ही में मैस का एक पतीला गायब हो चुका था और उसकी चोरी का हाल बावर्ची और आबदार छुपा गए थे। वर्ना पचास तरीके से और ज़लील होते। उन दोनों ने बेहतर यही समझा कि जेब से पैसे भर कर मामला दबा दिया जाए। जबर खाँ ईदू के ऊपर ऐसा झपटा जैसे बिल्ली कबूतर पर झपटती है। 'आज आया पकड़ में खोचे?' जबर खाँ बोला, 'सच बता पतीला भी तू ही ले गया था न?'

ईदू घबरा गया और फिर बोला, 'खान, मेरी बात सुनो। मैं आपसे इम्दाद माँगने आया हूँ।'

'हूँ, इम्दाद माँगने आया है! और बावर्चीखाने के पास बर्तन ताक रहा है।' जबर खाँ पुराना राग छेड़ता हुआ बोला, 'किस कबीले का है खान?'

ईदू सिटपिटा कर बोला, 'खान मैं कुरान शरीफ की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं इम्दाद माँगने आया हूँ। हबीबा की जान खतरे में है और मुझे उसका अहसान उतारना है।' हबीबा का नाम सुनते ही जबर खाँ की पकड़ ढीली पड़ गई।

'तुम हबीबा को कैसे जानते हो?' वह बोला, 'और उसकी जान क्यों खतरे में है, सब खुलासा बतलाओ।'

'तो क्या तुम हबीबा को जानते हो,' ईदू आश्चर्य से बोला।

'जानते हो ? अरे हम भी उरकजई कबीले का है,' जबर खाँ बोला। 'हमारे सरदार का बेटा है हबीब खाँ।' ईदू की जान में जान आई और उसने सारी कहानी सुना दी। सुनकर जबर खाँ की आँखें बाहर निकल पड़ीं।

'क्या नाम है तुम्हारा खोचे?' जबर खाँ बोला।

'मुझे ईदू खाँ कहते है और मैं महमंद हूँ।' ईदू बोला।

'तुम हमारा दोस्त है, अजीज है,' जबर खाँ बोला, 'मैं तुम्हारे साथ हूँ। चलो उधर पेड़ के नीचे बातें करते हैं। मैं तुम्हारे लिए चाय भी लाता हूँ।' ईदू को जबर खाँ पेड़ के नीचे ले आया और फिर बावर्चीखाने से गरमा गरम चाय भी ले आया।

'काम में गफ़लत नहीं होनी चाहिए खोचे,' जबर खाँ बोला, 'उस साले मुखबिर नसीर को मुझे दिखला दो।'

ईदू बोला, 'ख़ान, मेरा मश्वरा है कि तुम किसी तरह से हबीबा के घर जाकर यह सब बतला आओ। हबीबा की फिरौती माँगी जाएगी, पर फिरौती देते वक्त ही नसीर या नूरा को काबू में करा जाएगा। यूसफजई के कबीले जाकर सरदार गुलाब खाँ के बेटे गुलफ़ाम को आगाह करा जाए कि वह अपनी बहन को लेकर यहाँ कतई न आए।'

जबर खाँ सुनता रहा फिर बोला, 'मैं पहले हबीबा के घर जाऊँगा और फिर उसके बाद यूसफजई कबीले जाऊँगा। ख़ान तुम चाहो तो मैस में मेरे क्वाटर में आ जाओ। मैं तुम्हारी जान-पहचान कराए देता हूँ। पर हबीबा का नाम तक मत लेना, वर्ना बात फूट कर अगर अंग्रेज अफसरों तक पहुँच गई तो तुम भी धर लिए जाओगे।'

'पर ख़ान ये जो कैप्टिन अभी-अभी घुसा है ये वही है जिसकी छोटी बच्ची को नूरा ने उठाया था।' ईदू बोला। जबर खाँ सोचने लगा। फिर सर हिलाकर बोला, 'हाँ एक काम हो सकता है। नूरा को पकड़वाया जा सकता है। मैं जेम्स साहब को खबर दूँगा पर ये काम बाद का है। पहले तो मुझे हबीबा के यहाँ जाना होगा और फिर यूसफजई कबीले।'

ईदू की जान में जान में आई। उसके मददगार मिल गए। वह अब हबीबा की तलाश करेगा और नसीर और नूरा का पीछा करता रहेगा। तब तक हबीबा के कबीले में खबर भी पहुँच जाएगी। ईदू अपना बोरिया-

बिस्तरा उठाकर मैंस में जम गया और वहाँ से नसीर और नूरा का पीछा करने लगा।

नूरा को महजबीं की बड़ी फिक्र थी। उसने नसीर से मिलकर एक जका-सेम का मुख़बिर फ़ौरन ही महजबीं के भाई गुलफ़ाम के पास भेजना चाहा। नसीर ने बात को समझा और कहा, 'मेरे ख़याल से हमें हबीबा से उसके बाप के लिए फिरोती का ख़त लिखवाना चाहिए और फिर उस ख़त में तब्दीली कर के महजबीं के नाम कर देना चाहिए। ख़त को देखकर ये छोकरी ज़रूर आनी चाहिए, अगर उसे सच्ची मुहब्बत हुई तो।'

यह सुनकर नूरा उछल पड़ा और नसीर के दोनों हाथ अपनी पेशानी से लगाकर बोला, 'मान गए नसीर ख़ाँ तुमको, 'क्या अक्ल भरी है आपके भेजे में।'

उसी वक्त काग़ज़-कलम का इन्तज़ाम करके वे दोनों चल पड़े। ईदू उनके पीछे-पीछे बिल्ली जैसी चाल से चल रहा था। काफी चलने के बाद एक सुनसान पगडंडी पकड़े उत्तर की ओर चल दिए। थोड़ी ही देर में उन्हें एक टूटी हुई मस्जिद नज़र आई। मस्जिद का सामने का हिस्सा टूटा हुआ था। पीछे का हिस्सा रहने लायक था। उस पर एक टाट का पर्दा टँगा था। मस्जिद के पीछे दो झोंपड़ियाँ थीं। एक में चाय की दुकान थी और बग़ल वाली झोंपड़ी में छोटी-सी दुकान थी। दुकान के करीब सौ गज़ दूर पर एक छोटा-सा गाँव था जिसमें मुश्किल से सात-आठ झोंपड़ियाँ थीं। चाय की दुकान का होना यह सबूत था कि इस रास्ते से कुछ ख़ास लोग गुज़रते होंगे वर्ना गाँव वाले कहाँ से चाय का शौक करने का हौसला रख सकते हैं। बात ठीक ही थी। मलाकद की तरफ से कुछ पठान चोरी किया हुआ माल लुक-छिप कर लाते थे और चाय की दुकान पर उसके बेचने के इन्तज़ाम होते थे। चोरी की चीज़ों में पिस्तौल और बन्दूक ख़ास माल समझा जाता था।

नसीर और नूरा चाय की दुकान पर जैसे ही आए कि चाय वाला बूढ़ा जाफ़र उठकर सलाम करता हुआ बोला, 'सलाम वालेकुम, ख़ान साहब।'

नसीर मुस्कराया और बोला, 'सब ठीक-ठाक है, जाफ़र?'

'आपकी परवरिश है,' जाफ़र बोला। तब तक लड़के ने दो कुल्हड़ों में

चाय पेश कर दी। नसीर और नूरा बैठ कर चाय सुड़कने लगे।'

'और धंधा कैसा चल रहा है?,' नसीर अपनेपन से बोला।

'क्या बताएं हजूर, मलाकंद की छावनी में बड़ी चौकसी होने लगी है,' जाफ़र हाथ हिलाता हुआ बोला, 'अब तो बड़ा माल मुद्दत से नहीं आया। पिछली बार 'मिस' का एक बैरा चाँदी के दो काँटे उठा लाया था।'

'घबराओ मत जाफ़र ख़ान,' नसीर बोला, 'थोड़े दिन में हम तुम्हें मालामाल कर देंगे। हमारा एक साथी आने वाला है मन्सूर खाँ। उसने एक रैफ़ल मार दी है। जैसे ही वह आया, और हम उसे तुम्हारे पास लाए। पर अब की बार पैसे ठीक मिलने चाहिए।'

'आप फ़िक्र न करें हजूर,' जाफ़र बोला।

'अजी, पीराबाद का ख़ान राइफ़ल के दो हज़ार रुपये देने को तैयार है। कई दफ़ा कह गया है कि एक अंग्रेज राइफ़ल दिलवा दो। इंशा अल्लाह, हजूर को खूब अच्छे पैसे मिलेंगे।,

ईदू कान लगाकर सुनता रहा।

इसके बाद नसीर बोला, 'हमारा मेहमान कैसा है?'

जाफ़र पीले-पीले दाँत निपोर कर बोला, 'ठीक है हजूर। बन्दे लगा दिए हैं। बस पड़ा रहता है और सोचता रहता है। मैं भी उसकी चाय में रोज पोस्त मिला देता हूँ।'

ईदू समझ गया कि हबीबा को यहीं-कहीं छुपा रखा है। इसके बाद ही नसीर और नूरा टाट के पर्दे के पास गए और दरवाज़ा खटखटाया। दो लम्बे-तड़ंगे पठान आए और नसीर को देखकर उन्होंने सलाम किया और दरवाज़ा खोल दिया।

थोड़ी देर बाद नसीर और नूरा खुश होकर लौटते नज़र आए। उनके हाथ में एक काग़ज भी था। ईदू ने काग़ज तो देखा पर समझ कुछ भी न पाया। बहरहाल उसने हबीबा के ठिकाने का पता लगा ही लिया।

नूरा ने हबीबा के खत पर से 'अब्बा' की जगह 'महजबीं' लिखवाया और कुछ तब्दीलियाँ करा कर उसी दम जकाखेल के मुखबिर को पकडा दिया। रातों-रात वह मुखबिर घोडे पर भाग चला। युसुफजई कबीले आकर उसने गुलफाम का पता पूछा और फिर बोला, 'सरदार, आपसे बहुत जरूरी बात करनी है। मैं हबीबा का दोस्त हूँ और हबीबा आजकल बड़ी मुश्किल में है।'

गुलफाम हबीबा का नाम सुनकर उछल पड़ा।

'कहाँ है हबीब खाँ,' वह उतावला होकर बोला।

मुखबिर बोला, 'हुजूर, उसे जका खेल के कुछ लुटेरों ने अपने यहाँ क़ैद कर रखा है और उनका मंशा फिरौती कमाने का है। एक बार हबीबा ने मेरी मदद की थी और उसका वह अहसान मुझे चुकाना है। हबीबा को पहचान कर ही मैंने उसका पीछा किया और फिर मौका देखकर ये खत मैं ले आया हूँ। उन्होंने मुझे आपके पास भेजा है और ये खत बीबी महजबीं के नाम दिया है।'

गुलफाम ने फौरन ही वह खत ले लिया और एक ही साँस में पढ डाला। मुखबिर उसके चेहरे के उतार-चढाव देखता रहा और फिर बोला, 'एक बात की हिदायत उन्होंने और की थी कि जोर-जबरदस्ती मुमकिन नहीं है। बेहतर तो यही है कि फिलहाल तो एक हजार की रकम लेकर आप बीबी और कुछ वफादार लोगों के साथ चुपचाप निकल चलें।'

गुलफाम हबीबा का खत देखकर काबू में आ गया था। उसने फौरन ही जाकर महजबीं से सलाह की और मुखबिर को अपने एक साथी के यहाँ टिकाया। दूसरे दिन सुबह वह अपने अब्बा से शहर घूमने का बहाना करके महजबीं और पाँच साथियों को लेकर चल दिया। मुखबिर उनको रास्ता बतलाता गया और वे सफर तय करके मुकाम पर आ पहुँचे।

मुखबिर ने उन्हें एक सराय में ठहरा दिया और स्वयं नसीर खाँ के पास पहुँच गया। नसीर खाँ उसका काम देखकर खुश हुआ। पर गड़बड़ यह हुई कि नूरा अपने कबीले गया हुआ था। वह रातों-रात भाग कर अपने अब्बा से कुछ रकम हड़पने गया था क्योंकि उसे महजबीं को काबू करके कुछ दिन ऐशोआराम करना था।

जब नूरा वहाँ पहुँचा तो गुलसमन को खबर लग गई। उसे कुछ-कुछ आभास हो गया था। इधर ईदू भी लापता था। गुलसमन की मदद करने वाला फिलहाल ईदू का छोटा भाई करीम ही था। वह फौरन करीम के पास गई और सलाह-मशवरा करने लगी। तभी क्या देखती है कि ईदू स्वयं थका-माँदा वहाँ बैठा है।

'अल्लाह का लाख-लाख शुक्र है ईदू भाई,' गुलसमन बोली।

ईदू ने सब किस्सा सुनाया।

'मैं नूरा का पीछा कर रहा था गुलसमन। इसके अलावा मुझे अपनी राइफ़ल भी ले जानी थी। इसी राइफ़ल के लालच में शायद जाफ़र मुझे हबीबा तक पहुँचा सके। इसके अलावा और कोई चारा नहीं है। मुझे कल सुबह महजबीं के भाई के पास भी जाना है कि वे कहीं नूरा की साज़िश का शिकार न बन जाएँ। नूरा को वापस आते देख ही मैं भी चल पड़ा था।'

गुलसमन ने ईदू खाँ को हिम्मत दिलाई, 'क्यों नहीं हमें अभी चल देना चाहिए, ईदू भाई। युसुफज़ई का कबीला आख़िर है ही कितनी दूर।'

ईदू बहुत थका था पर गुलसमन की मदद पाकर वह तैयार हो गया और दोनों ही चल दिए। जाने से पहले ईदू अपने दोस्त रफ़ीक को नूरा के पीछे लगा गया।

जब ईदू यूसुफज़ई के कबीले पहुँचा तो उसे पता लगा कि चार घंटे पहले गुलफ़ाम महजबीं, और उनके पाँच साथी पेशावर की तरफ़ गए गए हैं।

ईदू के पाँव तले ज़मीन खिसक गई। गुलसमन भी सुनकर दंग रह गई। सिर्फ़ तस्कीन यह था कि नूरा अभी कबीले में ही था।

गुलसमन ने उसी दम फैसला किया कि वह भी ईदू के साथ पेशावर जाएगी और नूरा के षड्यंत्र के ख़िलाफ लड़ेगी। उसकी आँखों में क्षोभ के आँसू आते तो कभी क्रोध के। उसे कभी सपने में भी खयाल नहीं था नूरा इतना गिर सकता है। नूरा शायद फल की दुकान का चकमा देकर सौ-दो सौ रुपये और पीटने ही आया था। रुपये काबू करके वह दूसरे ही दिन चल पड़ा था। उससे थोड़ी ही दूर पर ईदू और गुलसमन भी आ रहे थे।

पेशावर पहुँचकर जबर खाँ हबीबा के कबीले से वापस आ चुका था।

कबीले में बड़ी सरगर्मी थी। सब तरफ रोष था पर बात को दबा भी रखा था। सरदार तुर्रे खाँ फिरौती देने पर रजामन्द थे। उन्हें बस एक ही फ़िक्र खाए जा रही थी कि कहीं हबीबा अंग्रेज़ों के हाथों नहीं पड़ जाए, वर्ना फिर उसे छुड़ाना मुश्किल हो जाएगा। उन्होंने चार बड़े जीवट के आदमी जबर खाँ के साथ भेज दिए थे। जबर खाँ स्वयं ईदू का इन्तज़ार कर रहा था कि आखिर इदू गया तो गया कहाँ। ईदू और गुलसमन को देखकर जबर खाँ बहुत खुश हुआ।

सबसे पहला अभियान तो हबीबा को छुड़ाना और महज़बीं को चगुल से बचाना था। ईदू दूसरे ही दिन टूटी मस्जिद के पास हबीबा के दो साथी लेकर गया। जाफर चाय की केतली आग पर रख रहा था। सलाम-दुआ के बाद ईदू बैठ गया और उसने एक चाय माँगी। उसके साथी कुछ दूरी पर खड़े थे। फिर उसने राइफल की बात छेड़ी। 'मेरा नाम मन्सूर खाँ है और मैं नसीर खाँ का दोस्त हूँ।' ईदू बोला। जाफर की आँखों में चमक आ गई। जाफर अपनापन दिखाने लगा। बातचीत में ईदू ने बतलाया कि यह राइफल उसने एक कबीले के लुटेरे से खरीदी थी जो आजकल गायब है। ये लुटेरा सोने के अण्डे देने वाली मुर्गी के बराबर है क्योंकि इसे पकड़वाकर बड़े मज़े में दो हज़ार का सरकारी इनाम और ज़मीन मिल सकती है।

जाफर ने कान खड़े किए फिर सोचने लगा कि जो आदमी नसीर खाँ ने बन्द कर रखा है वह ही तो कहीं ये सोने के अंडे देने वाली मुर्गी नहीं है? वह दाढ़ी खुजाता हुआ बोला, 'खान, तुम आदमी को पहचान लेगा?'

'क्यों नहीं मियाँ' ईदू बोला। फिर फुसफुसा कर बोला, 'सोचा मियाँ, दो हज़ार रुपये का सरकारी इनाम!'

जाफर बोला, 'एक आदमी हमने पकड़ रखा है। तुम उसे पहचानेगा खोचे?'

'क्यों नहीं,' ईदू बोला, 'खुदा करे वह यही आदमी निकल आए तो तुम्हारे डेढ़ हज़ार और मेरे पाँच सौ पक्के।'

जाफर पहले सिरे का लालची और धोखेबाज़ था। इधर-उधर देखकर बोला, 'मेरे साथ आओ।' और टाट का पर्दा उठाकर उसने तीन चार दस्तक दी। अंदर से आवाज़ आई 'कौन है?'

जाफ़र धीरे से बोला, 'फीरोज़।'

दरवाज़ा खुल गया। अंदर दो लम्बे-तड़ंगे पठान बैठे ताश खेल रहे थे। ईंदू को देखकर बोले, 'ये कौन है जाफ़र खाँ?'

जाफ़र बोला, 'ये हमारा नया नौकर है जुम्मन खाँ।' ईंदू ने सर हिलाया। पठानों ने उसे घूरकर देखा और उसे जाने दिया। सीढ़ी चढ़कर एक कमरे में हबीबा लुढ़का हुआ सो रहा था। कमरे के दरवाज़े पर साँकल पड़ी थी और ताला लटका हुआ था। जाफ़र ओठों पर अँगुली रखकर बोला, 'शी ऽऽऽ! देखो ये आदमी कौन है।'

ईंदू ने हबीबा को देखा और फिर बोला, 'ये तो कहीं का टटपूँजिया लुटेरा लगता है। उसके तो बड़ी दाढ़ी है और इससे दुगुने वज़न का होगा।'

निराश होकर जाफ़र लौट आया और ईंदू से राइफ़ल के सौदे पर बातें करने लगा।

ईंदू अंदर का राज़ लेकर चल दिया और मंसूबे बनाने लगा।

जब ईंदू लौटकर आया तो जबर खाँ ने खबर दी कि उसका आदमी अभी-अभी बतला गया है कि नूरा लौटकर अपने घर पहुँच गया है। ईंदू बेहद थका हुआ था पर नूरा पर भी नजर रखना जरूरी था। सो गुलसमन और हबीबा के कबीले के एक आदमी को लेकर चल पड़ा।

उसने नूरा के पीछे गुलसमन और शमशू को छोड़ दिया। दर्ज़ी की दुकान के पास ही वे नूरा पर नज़र रखने लगे।

शाम को एक आदमी नूरा से मिलने आया और उसके साथ नूरा बहुत खुश होकर निकला। गुलसमन उस वक्त अकेली थी। नूरा वहाँ से सराय पर पहुँचा और उस आदमी को आगे करके अलग खड़ा हो गया। कुछ देर बाद गुलसमन ने देखा कि गुलफ़ाम और महजबीं उसी आदमी से बातें कर रहे हैं। गुलसमन उन्हें देखकर दंग रह गई।

कुछ देर बात करके गुलफ़ाम और महजबीं उस आदमी के साथ हो लिए। गुलसमन हिम्मत करके पीछे-पीछे चलती रही। उसके पास उसके खंज़र के अलावा कुछ भी नहीं था। कुछ दूर चलकर वह आदमी गुलफ़ाम और महजबीं को लेकर एक मकान में घुसा। घुसते ही दरवाज़ा बन्द कर लिया। गुलसमन चक्कर में पड़ गई पर सहसा उसे तरकीब सूझी। उसने

अपने बड़े रूमाल में कंकड़ भरे और उसी दरवाजे पर दस्तक देने लगी। एक बूढ़ी औरत ने दरवाजा खोला।

'मैं बेगम की नौकरानी हूँ,' गुलसमन बोली, 'जो अभी-अभी अंदर गई हैं न, उन्हीं बीबीजी की। जल्दी में वे जेवर की थैली भूल गई हैं। ये उन्हें देनी है।' जेवर का नाम सुनकर बुढ़िया ने अपने सूखे ओठों पर जुबान फेरी और अंदर आने दिया। अंदर घुसते ही गुलसमन ने कंकड़ वाली पोटली इतनी जोर से उस बुढ़िया के सर पर मारी कि वह कटे हुए पेड़ की तरह गिर पड़ी। गुलसमन ने अंदर आकर देखा तो गुलफाम और महजबीं एक कमरे में बैठे थे और नसीर खाँ का मुखबिर बातें कर रहा था। कोई दस मिनट बाद दरवाजे पर दस्तक हुई। गुलसमन ने तब तक बुढ़िया को अंदर घसीटकर बाँध दिया था और उसका बुरका ओढ़े वहाँ तैयार खड़ी हो गई थी।

गुलसमन ने दरवाजा खोला तो नसीर खाँ और नूरा नजर आए। बुर्का ओढ़े गुलसमन ने सलाम किया और हाथ से कमरे की तरफ इशारा कर दिया। नसीर बातें करता हुआ बढ़ने लगा। फिर कमरे के पास आकर धीरे से नूरा से बोला, 'तुम यहीं रहना। समझ गए ना ?' नूरा बाहर खड़ा रहा।

नसीर खाँ अंदर पहुँचा और जाते ही उसने रुपयों की माँग की। गुलफाम ने कहा, 'पहले हबीबा से हमें मिलवाया जाए और उसे सौंप दिया जाए तब हम आपको रुपया देंगे।' नसीर खाँ बोला, 'ठीक है खान, हम रुपये सँभालें और तुम अपना हबीबा। आओ पहले हबीबा से मिल लो।'

मुखबिर, गुलफाम और महजबीं उठ पड़े। उन्हें नसीर खाँ ने आगे कर दिया और जैसे गुलफाम बाहर निकला कि बाहर खड़े नूरा ने जोर का डंडा उसके सर पर मारा। गुलफाम 'ओह' करके गिर पड़ा। महजबीं घबरा गई पर तब तक नूरा पिशाच जैसी हँसी हँसता हुआ बोला, 'कहो जानेमन, हमें पहचाना कि नहीं ?'

नसीर खाँ और मुखबिर ने गुलफाम को बाँधकर कोने में डाल दिया और थैली लेकर जाने लगे। चलते वक्त नूरा से कहा, 'तुम रात-भर ऐश कर लो नूरा। कल सुबह हम इसे लेने आएँगे।' नूरा उत्तेजित भी था,-

प्रसन्न भी था। काँपती हुई महजवीं को नूरा ने कमरे में धकेला और वाहर से कुंडी लगा दी।

नसीर खाँ वोला, 'ये वुर्के वाली वुढ़िया अपनी ही है। यहाँ मज़े से वक्त काटो। इसके भाई को दूसरे कमरे में वन्द करके डाले देते हैं। इसे भी कल हटाया जाएगा।' इतना कहकर नसीर खाँ गुलफ़ाम को नूरा के हवाले करके चल दिया। नूरा गुलफ़ाम को उठाकर दूसरे कमरे की तरफ़ ले चला।

नसीर खाँ दरवाज़े के पास आकर वोला, 'आज रात-भर नूरे के पास इस लड़की को रहने दो। इसका भी अरमान पूरा हो जाने दो। इसके वाद इस लड़की को कल हम तवाइफ़ों के मुहल्ले ले जाकर मज़े से दो हज़ार खड़े कर लेंगे।' वे दोनों हँसे। गुलसमन सुनकर काँप उठी।

नसीर खाँ उससे वोला, 'होशियार रहना वुढ़िया। किसी भी हालत में ये लड़की घर से वाहर न निकलने पाए।'

गुलसमन ने झुककर सलाम किया और धीरे से वनावटी आवाज़ में कहा, 'मुतमईन रहिए, हुज़ूर।'

नसीर खाँ वापस चल दिया।

नूरा गुलफ़ाम को कमरे में डालकर वापस आया और महजवीं से हँसकर वोला, 'आज हमारी शवे विसाल मनेगी, जानेमन। मैं ज़रा वाहर जाकर दो-चार जाम चढ़ा आऊँ। फिर तो तुम हमें जन्नत की हूर लगने लगोगी।' उसने पास आकर महजवीं को अपनी वाँहों में भर लिया। महजवीं ने छूटने की कोशिश की और वड़ी ज़ोर से उसकी अंगुली में काट खाया। नूरा तड़प उठा और उसने गुस्से में आकर महजवीं के गाल पर तमाचा मारा। महजवीं चीख उठी। फिर नूरा वोला, 'यहाँ तुम्हारी चीखें सुनने वह खन्ज़ीर का वच्चा हवीव। नहीं आ सकता। अव इन्तजार करना जानेमन। हम ज़रा शराव की मस्ती में डूवकर अभी आते हैं।' नूरा ने दरवाजा वन्द करके साँकल चढ़ा दी और जेव से ताला लगाकर जड़ दिया। चावी को उसने सामने वाले आले में रखकर कहा, 'ये चावी रखी है, पर तुम्हारा हाथ यहाँ तक नहीं पहुँच सकेगा। चावी यहीं छोड़े जाता हूँ। पिछली वार जव हम सरूर करके लौटे थे तो चावी कहीं गिर पड़ी थी। आज तो लौटते ही हमें चावी चाहिए ना।' और नूरा दैत्य की तरह हँस पड़ा। जाते वक्त

दरवाज़े के पास बुर्क़ा ओढ़े गुलसमन से बोला, 'ख्याल रखना बुढ़िया। कल सुबह हम तुमको बहुत बड़ा इनाम देंगे।'

गुलसमन ने हाथ उठाकर सलाम कर दिया।

नूरा के जाते ही गुलसमन महजबी के कमरे की तरफ़ दौड़ी। महजबी उस वक्त घुटनों में सर झुकाए रो रही थी। बुर्क़े में खड़ी गुलसमन ने ताला देखकर कहा, 'क्या वह ताला लगा गया है?'

महजबी ने चौंककर उसकी तरफ़ देखा और बोली, 'मेरी मदद करो। ये जालिम मेरी बग़ैर मर्ज़ी के मुझे बरबाद करना चाहता है। चाबी उस आले में रखी है।'

गुलसमन ने आले से चाबी निकाली और दरवाज़ा खोल दिया। महजबी भौंचक देखती रही।

सहसा गुलसमन ने बुर्क़ा पलट दिया। महजबी उसे देखकर चौंक गई।

'आप?' वह बोली।

'हाँ महजबी बहन, मैं।' गुलसमन बोली, 'ये शबे विसाल नूरा मेरे साथ ही मनाएगा बहन। जल्दी करो। अपने कपड़े उतार कर मुझे दे दो और मेरे कपड़े तुम पहन लो। तुम्हारा भाई बगल के कमरे में पड़ा है। उसे सँभालकर तुम भाग जाओ और मुझे यहीं छोड़ जाओ। मैं देखूंगी कि मुझे महजबी समझ कर नूरा मेरा क्या हाल करता है।'

महजबी की आँखों में आँसू भर आए, 'मैं तुम्हारा अहसान कैसे चुका सकूँगी, गुलसमन बहन?'

गुलसमन बोली, 'जल्दी करो महजबी बहन। नूरा थोड़ी देर में वापस आ जाएगा। वह शराब पीने गया है। और हाँ, जो अहसान उतारने की बात तुम कह रही हो न, उस अहसान की कीमत भी मैं तुमसे अभी माँग लेती हूँ।'

'क्या?' महजबी बोली।

'कल सुबह यहाँ कुछ आदमी जरूर भेज देना,' गुलसमन बोली। 'बस यही अहसान काफ़ी होगा।'

महजबी बोली, 'मैं जरूर चार पाँच आदमी भिजवा दूँगी। पर ये सब क्यों कह रही हो?'

गुलसमन हँस कर बोली, 'नूरा को ये नहीं मालूम है कि सुबह नसीर

प्रसन्न भी था। काँपती हुई महजवीं को नूरा ने कमरे में धकेला और बाहर से कुंडी लगा दी।

नसीर खाँ बोला, 'ये बुर्के वाली बुढ़िया अपनी ही है। यहाँ मजे से वक्त काटो। इसके भाई को दूसरे कमरे में बन्द करके डाले देते हैं। इसे भी कल हटाया जाएगा।' इतना कहकर नसीर खाँ गुलफ़ाम को नूरा के हवाले करके चल दिया। नूरा गुलफ़ाम को उठाकर दूसरे कमरे की तरफ़ ले चला।

नसीर खाँ दरवाज़े के पास आकर बोला, 'आज रात-भर नूरे के पास इस लड़की को रहने दो। इसका भी अरमान पूरा हो जाने दो। इसके बाद इस लड़की को कल हम तवाइफ़ों के मुहल्ले ले जाकर मज़े से दो हज़ार खड़े कर लेंगे।' वे दोनों हँसे। गुलसमन सुनकर काँप उठी।

नसीर खाँ उससे बोला, 'होशियार रहना बुढ़िया। किसी भी हालत में ये लड़की घर से बाहर न निकलने पाए।'

गुलसमन ने झुककर सलाम किया और धीरे से बनावटी आवाज़ में कहा, 'मुतमईन रहिए, हुज़ूर।'

नसीर खाँ वापस चल दिया।

नूरा गुलफ़ाम को कमरे में डालकर वापस आया और महजवीं से हँसकर बोला, 'आज हमारी शबे विसाल मनेगी, जानेमन। मैं ज़रा बाहर जाकर दो-चार जाम चढ़ा आऊँ। फिर तो तुम हमें जन्नत की हूर लगने लगोगी।' उसने पास आकर महजवीं को अपनी बाँहों में भर लिया। महजवीं ने छूटने की कोशिश की और बड़ी ज़ोर से उसकी अंगुली में काट खाया। नूरा तड़प उठा और उसने गुस्से में आकर महजवीं के गाल पर तमाचा मारा। महजवीं चीख उठी। फिर नूरा बोला, 'यहाँ तुम्हारी चीखें सुनने वह खन्ज़ीर का बच्चा हबीब नहीं आ सकता। अब इन्तजार करना जानेमन। हम ज़रा शराब की मस्ती में डूबकर अभी आते हैं।' नूरा ने दरवाज़ा बन्द करके साँकल चढ़ा दी और जेब से ताला लगाकर जड़ दिया। चाबी को उसने सामने वाले आले में रखकर कहा, 'ये चाबी रखी है, पर तुम्हारा हाथ यहाँ तक नहीं पहुँच सकेगा। चाबी यहीं छोड़े जाता हूँ। पिछली बार जब हम सरूर करके लौटे थे तो चाबी कहीं गिर पड़ी थी। आज तो लौटते ही हमें चाबी चाहिए ना।' और नूरा दैत्य की तरह हँस पड़ा। जाते वक्त

दरवाजे के पास बुर्का ओढ़े गुलसमन से बोला, 'ख्याल रखना बुढ़िया। कल सुबह हम तुमको बहुत बड़ा इनाम देंगे।'

गुलसमन ने हाथ उठाकर सलाम कर दिया।

नूरा के जाते ही गुलसमन महजबी के कमरे की तरफ दौड़ी। महजबी उस वक्त घुटनों में सर झुकाए रो रही थी। बुर्के में खड़ी गुलसमन ने ताला देखकर कहा, 'क्या वह ताला लगा गया है?'

महजबी ने चौंककर उसकी तरफ देखा और बोली, 'मेरी मदद करो। ये जालिम मेरी बगैर मर्जी के मुझे बरबाद करना चाहता है। चाबी उस आले में रखी है।'

गुलसमन ने आले से चाबी निकाली और दरवाजा खोल दिया। महजबी भौंचक देखती रही।

सहसा गुलसमन ने बुर्का पलट दिया। महजबी उसे देखकर चौंक गई।

'आप?' वह बोली।

'हाँ महजबी बहन, मैं।' गुलसमन बोली, 'ये शबे विसाल नूरा मेरे साथ ही मनाएगा बहन। जल्दी करो। अपने कपड़े उतार कर मुझे दे दो और मेरे कपड़े तुम पहन लो। तुम्हारा भाई बगल के कमरे में पड़ा है। उसे सँभालकर तुम भाग जाओ और मुझे यहाँ छोड़ जाओ। मैं देखूँगी कि मुझे महजबी समझ कर नूरा मेरा क्या हाल करता है।'

महजबी की आँखों में आँसू भर आए, 'मैं तुम्हारा अहसान कैसे चुका सकूँगी, गुलसमन बहन?'

गुलसमन बोली, 'जल्दी करो महजबी बहन। नूरा थोड़ी देर में वापस आ जाएगा। वह शराब पीने गया है। और हाँ, जो अहसान उतारने की बात तुम कह रही हो न, उस अहसान की कीमत भी मैं तुमसे अभी माँगे लेती हूँ।'

'क्या?' महजबी बोली।

'कल सुबह यहाँ कुछ आदमी जरूर भेज देना,' गुलसमन बोली। 'बस यही अहसान काफी होगा।'

महजबी बोली, 'मैं जरूर चार पाँच आदमी भिजवा दूँगी। पर ये सब क्यों कह रही हो?'

गुलसमन हँस कर बोली, 'नूरा को ये नहीं मालूम है कि सुबह नसीर

खाँ मुखबिर उससे छीनकर मुझे कल रंडियों को बेच देगा।'

महजबीं के शरीर में झन्नाटा उठा। वह आँखें बाहर करके बोली, 'ओफ़ मुझे ये नहीं मालूम था।'

गुलसमन ने कहा, 'ये तो नूरा को भी नहीं मालूम है।'

महजबीं बोली, 'मेरा कहना मानो तुम भी मेरे साथ निकल चलो।'

'नहीं।' गुलसमन दृढ़ स्वर में बोली, 'मैं नूरा की वहशत देखना चाहती हूँ। आखिर नूरा की मैं मँगेतर भी तो हुँ न। जहाँ तक बन सकेगा मैं किसी को भी नूरा का नहीं बनने दूंगी, भले ही वह हैवान है या इन्सान।'

महजबीं टकटकी बाँधकर गुलसमन को देखकर बोली, 'तुम्हारी मुहब्बत एक दावा है बहन। एक हक़ है, जिसे हरेक आबरूपसन्द औरत छीनना अपना फर्ज समझेगी। यकीन रखो बहन, सुबह तुम बाइज्जत ही यहाँ से निकलोगी। कोई भी ताकत तुम्हें और किसी रास्ते में नहीं फेंक सकती।'

महजबीं ने गुलसमन के कपड़े पहन कर कराहते हुए गुलफ़ाम को उठाया और दरवाजे से निकल कर गुलसमन से बोली, 'शबे विसाल मुबारिक हो गुलसमन बहन।'

गुलसमन की आँखों से दो आँसू जवाब में ढुलक गए। कोई घंटे भर में नूरा नशे में झूमता हुआ आया। दरवाजा उसे भिड़ा हुआ मिला। ये देख नूरा नशे में होकर भी थोड़ा बौखलाया और झटके से दरवाजा खोलता हुआ कमरे की तरफ डगमगाता हुआ आया। महजबीं के कपड़ों में गुलसमन सर झुकाए बैठी थी। एक लरजती हुई शम्मा पास झिलमिला रही थी। नूरा ने आकर आले से चाबी निकाली और दरवाजा खोला। वह आकर नाटकीय ढंग से गुलसमन की ओर बढ़ा और बोला, 'महजबीं, मेरी जान, आज तुम्हें कोई भी मुझसे नहीं छीन सकता।' उसने झपट कर गुलसमन को बाँहों में भरा। गुलसमन सिसकियाँ लेकर रोने लगी। उसने रोते हुए कहा, 'इसके बाद तुम मुझसे शादी करोगे न ख़ान?' नूरा चौंक कर हँस पड़ा। 'शादी! नहीं महजबीं, जानेमन। हम तुम से शादी नहीं कर सकते। हम तुम्हारे साथ शबे विसाल जरूर मनायेंगे। आज की रात नहीं बल्कि कई रातें। पर शादी! नहीं—नूरा की शादी होगी तो बस गुलसमन के साथ ही। अब्बा का हुक्म है, उन्होंने जुबान दे दी है।'

नूरा ने जेब से आधी बोतल निकाली और एक घूँट भर कर बोला, 'गुलसमन में क्या कमी है। पर तुमसे हमें बदला लेना है। हबीबा जब जेल में सड़ेगा तब हम उसको देखने जाया करेंगे।' गुलसमन यह सुनकर अवाक् रह गई।

और उसे महज़बी समझ नूरा उस पर टूट पड़ा।

टूटी मस्जिद के पास ईदू राइफल लिए पहुँचा था। जाफर के मुँह में पानी आ रहा था। राइफल पर ऐसे हाथ फेर रहा था मानो वह कोई साल भर का प्यारा-प्यारा बच्चा हो।

'बहुत बढ़िया माल है खान,' जाफर बोला।

'कितने का माल है खान,' ईदू बोला।

'सोचे, नई वाली रैफल है,' जाफर बोला, 'कसम से तीन हज़ार से कम क्या जाएगी। ओफ, कितना बढ़िया माल है।'

ईदू उसे देखता रहा और फिर धीरे से बोला, 'खान, इसकी एवज में हमारा काम करेगा।'

जाफ़र को जैसे बिजली का करेंट लगा हो।

'क्या?' वह भयभीत आँखों से देखता हुआ बोला।

'वह कैदी हमें दे दो खान,' ईदू उसकी आँखों में आँखें डालकर बोला, 'और रैफल तुम रखो। बोलो सौदा मंजूर है?'

जाफर की साँस रुक गई। कभी वह राइफल की तरफ देखता तो कभी ईदू की तरफ। फिर बड़ी देर चुप रह कर बोला, 'खान, नसीर खाँ और दरोगा हम को जिन्दा नहीं छोड़ेगा।'

ईदू बोला, 'उसकी परवाह मत करो जाफर खान। मेरे पास भी आदमी लगे हुए हैं।'

यह सुनकर जाफ़र चौंका और फिर बोला, 'हाँ, एक बात हो सकती है।

ी जगह एक आदमी छोड़ दो तव हम कह सकता है कि न हमने को उस रोज देखा और न ही उसे हम आज पहचानता है। फिर सब त नसीर खाँ के साथ आने वाले उस आदमी पर लग सकता है। क्योंकि कई वार आया है और कैदी को दो-चार तमाचे और गाली सुनाकर ता जाता है।'

ईंदू समझ गया कि जाफ़र नूरा के वारे में कह रहा है। ईंदू सोचता रहा और बोला, 'ठीक है ख़ान, हमें सौदा मंजूर है। कल हम आएगा औ कैदी के एवज आदमी का भी इन्तजाम करेगा। कल कैदी वाहर होगा और ये राइफ़ल तुम्हारी होगी।'

जाफ़र ख़ान ईंदू के चलते वक्त वोला, 'ये राज़ सिर्फ हमारे और तुम्हारे वीच है ख़ान।'

'हाँ जाफ़र ख़ान। कुरान शरीफ़ की कसम खाकर मैं ये कहता हूँ।'

ईंदू वहाँ से लौटकर सीधा मेरा आया था। उसने जवर ख़ान को सव वतलाया और कहा, 'ख़ान, तुम हमारे साथ कल चलोगे। मैं ख़ुद हवीवा की जगह कैदी वन कर रुक जाऊँगा। तुम हवीवा को लेकर पायल वाली गली के नुक्कड़ पर हुसैनी दर्जी की दुकान पर जाना। वहाँ गुलसमन मिलेगी। उससे मिलकर महजवीं को नूरा के चंगुल से वचाने कोशिश करना। हवीवा की दी हुई राइफ़ल जाफ़र ख़ाँ को देनी पड़ेगी। अगर वचा तो कहीं न कहीं से हवीवा को एक राइफ़ल लाकर दूँगा।'

जवर खाँ उसे टकटकी वाँधकर देखता रहा।

'तुम पठान के वच्चे हो, ईंदू खाँ,' जवर खाँ वोला, 'तुम्हारी अकीद की उरकजई हमेशा इज्जत करेगा।'

और दूसरे दिन हवीवा की जगह ईंदू उस कमरे में कैद हो गय हवीवा निकलते वक्त पोस्त की झुनक में कुछ समझ नहीं पाया कि हो रहा है। मुरझाये हुए हवीवा को जवर खाँ और उसके साथी व ले आए। ईंदू के मुख पर एक तेज चमक रहा था। उसने चलते जवर खाँ से कहा था, 'हवीवा से कहना, सव महमंद खराव नहीं सिर्फ हालात उन्हें खराव कर देते हैं।'

नूरा सुबह जब उठा तो उसके सर में शराब की खुमारी ने हल्का-हल्का दर्द उठा रखा था। उसने कोने में अस्त-व्यस्त पड़ी गुलसमन को देखा। नूरा मुस्करा कर पास गया और उसे पलटता हुआ बोला 'महजबी—'

बस इतना ही कह पाया था नूरा। उसने सहमा अपनी आँखें जोर-सी मींची और फिर सर को झटक कर फिर से गुलसमन को गौर से देखा।

फिर उसकी आँखें फट सी गईं।

'गुलसमन, तुम?' वह बोला।

गुलसमन मुस्कराकर बोली, 'हाँ नूरा मैं। अभी नसीर खाँ आता होगा और अब वह मुझे महजबी समझ कर तुमसे छीनेगा और मुझे रंडियों के यहाँ बेच देगा। ये तस्कीन रहेगा कि जिसकी मैं अमानत हूँ उसकी पहले पहल बनकर ही रही। इसके बाद जो कुछ भी कोठे पर गुजरेगी, भुगतूँगी।'

नूरा तड़प कर खड़ा हो गया।

'नहीं, ये नहीं हो सकता। कोई भी तुम्हें मुझसे नहीं छीन सकता गुलसमन! तुम सिर्फ मेरी ही नहीं पूरे कबीले की अमानत हो। तुम महमदों की इज्जत हो। उनके सरदार हिलाल खाँ के घर की रौनक हो।'

गुलसमन हँसी।

'तुम्हें अपने कबीले की इज्जत की इतनी फिक्र है नूरा! क्या दूसरे कबीलों की इज्जत नहीं होती? क्या उनकी अमानत नहीं होती?' वह बोली।

'होती है,' नूरा दाँत पीसकर बोला, 'पर दुश्मन पर हर वार जायज है।'

तभी नसीर खाँ दो साथियों के साथ अन्दर आ पहुँचा। 'कहो नूर खाँ, वह हँसकर बोला, 'अब कैसी गुजरी?'

नूरा उसे देखता रहा। 'अब क्या रहा जिक्र नसीर खाँ! ये तो अब

हमारी जिंदगी की हरेक शब को चांद तारों से सजाया करेगी।'

नसीर खां बोला, 'नहीं खान, सिर्फ एक शब की बात हुई थी। तुम्हारे अरमान निकल गए। अब इसके पैसे खड़े होंगे और हम आपस में बांटेंगे।'

नसीर खां के यह कहते ही नूरा ने एक ज़ोर का तमाचा उसके मुंह पर मारा। नसीर खां भौंचक्का रह गया। और तभी उसके दोनों आदमी नूरा की तरफ़ झपटे। गुत्थम-गुत्था शुरू हो गई। उसी वक्त एक आवाज़ आई, 'ठहरो!' सब भौंचक होकर रुक गए।

गुलफ़ाम हाथ में दुनाली लिए खड़ा था। साथ में उसके चार साथी नंगी तलवार लिए खड़े थे। उन्होंने बढ़कर गुलसमन को उठाया।

'चलो बहन,' गुलफ़ाम बोला, 'नूर खां अपने दोस्तों से निपट कर खुद आ जाएंगे।'

गुलसमन ने कहा, 'नहीं, नूरा साथ चलेगा।'

नूरा बोला, 'तुम जाओ गुलसमन। मैं अपने दोस्त नसीर खां की आंखें खोलकर फिर मिलूंगा।'

गुलफ़ाम हंसा, 'नूर खां, नसीर खां हमारे साथ हमारे कबीले जा रहे हैं। एक हजार रुपया भिजवा देना और इन्हें छुड़वा लेना।'

यह कहकर उन्होंने नसीर खां को दबोच लिया और उसे बांधकर चल दिए। गुलसमन को भी गुलफ़ाम रजामन्दी बगैर ले चला।

बाहर गाड़ी में डालकर गाड़ी चल दी।

'सीधे सराय चलो, हलीम,' गुलफ़ाम बोला, 'शहजादी को लेकर हम सीधे कबीले पर ही दम लेंगे। हबीब खां पिंजड़े से बाहर आ गए हैं। शेर की परवाह अब नहीं रही। हम हबीब खां के दमखम जानते हैं। उन्हें अब कोई नहीं पकड़ सकेगा।'

जबर खाँ हबीबा को 'जैन' के [illegible] [illegible] तक हबीबा दोस्त के खुमार में खोया-खोया सा इधर-उधर देखता [illegible]। जबर खाँ ने 'जैन' से बढ़िया बोड़ी लाकर गर्म-गर्म दूध के [illegible] बार पिलाई और घी में भून कर मुर्गे खिलाए। हबीबा को [illegible] लगी, और जैसे बीते हुए स्वप्न को याद कर रहा हो वैसे [illegible] लगा। हबीबा अँगड़ाई लेकर खड़ा हो गया। जबर खाँ [illegible] हुआ और बोला, 'अब कैसे हो छोटे सरदार?' हबीबा जवाब [illegible]।

जबर खाँ ने हबीबा को सारा किस्सा आदि से अंत तक [illegible]। महजबी जाते वक्त किंकर्तव्यविमूढ़ हबीबा [illegible] हबीबा उस समय खोया-खोया उसे देख रहा था। [illegible] बँधाया कि हबीबा को जमीरी चीज खिलाई गई है [illegible] रहा है। जबर खाँ और [illegible] गुलफाम चल दिया था। [illegible] फिर महजबी के अलावा उसके [illegible]।

हबीबा ने पूरी दास्तान सुनकर [illegible] का साथ-साथ शुरू [illegible]। [illegible] बाद हबीबा जबर खाँ से बोला, [illegible] मस्जिद तुम्हें मालूम है कहाँ है? [illegible] नहीं जैन दे रहा है। [illegible] [illegible] टूटी मस्जिद के [illegible] [illegible] [illegible] रहा है।

की जगह कोठरी में ईदू बन्द है और नसीर खाँ यूसुफजई के कबीले में पहुँच चुका होगा। हबीबा बिजली की तरह झुटपुटे में टूटी मस्जिद पर टूटा था।

ज़ाफर खाँ को उसने रस्सियों से बाँध दिया और ईदू की दी हुई राइफ़ल छीन ली। इसके अलावा ज़ाफर के टीन के बक्से में उसे दो चुराए हुए रिवाल्वर और मिले। टूटी मस्जिद में घुस कर उसने चारों पठानों को आनन फ़ानन में काबू कर लिया और उसके साथियों ने उनकी मुश्कें बाँध दीं। ईदू उस वक्त असहाय-सा पड़ा था। हबीबा ने दरवाज़ा खोलकर ईदू को उठाया और गले लगाकर बोला, 'ईदू खाँ, तुम्हारी वफ़ा की मिसाल हमारे कबीले में जश्नों पर गाई जाया करेगी। तुम हबीबा का ग़रूर हो, ख़ान।'

ईदू के आँसू भर आए। हबीबा ने उसकी कोठरी में ज़ाफर और चारों पठानों को बन्द कर दिया और अपने साथियों के साथ चल पड़ा।

रास्ते में ईदू ने सारी दास्तान सुनाई। हबीबा ने ईदू के हाथ बार-बार चूमे।

'अगर तुम मेले में नहीं होते तो मैं तो ख़ैर बरबाद होता ही पर फरिश्ते जैसी पाक महज़बीं भी ग़ारत हो जाती। तुमने दो कबीलों की आबरू की शमा को बुझने से बचाया है दोस्त। तुम्हारा अहसान एक खूबसूरत याद का जिब्रील जैसा बनकर हम पर छाया रहेगा।'

हबीबा की आँखों में रह-रह कर नूरा का ख्याल उठ रहा था। ज़बर खाँ ने ही तो बताया था कि महज़बीं स्वयं कह गई थी कि जो भी हो इस ज़लील नूरा की नेक परवीन मँगेतर ने ही उसकी आबरू को बचाया। अगर वह न आती तो महज़बीं नूरा के हाथों ज़लील होकर जिन्दगी भर मौत से बदतर कोठों की सड़ाँध में कोढ़ी की तरह घुल-घुल कर मर जाती। महज़बीं ने इशारा भी दिया था कि जब हबीबा के होश जाग जाएँ तो यह बतलाना मत भूलना कि हालांकि नूरा को तड़पा-तड़पाकर मारना भी कम होगा पर फिर भी वह गुलसमन का होने वाला ख़ाविन्द है। गुलसमन की मदद की क़ीमत और उसके अहसान का मोल है—नूरा की जिन्दगी। हबीबा बार-बार अपने गुस्से को पी जाता और स्वयं अपने से तर्क करता, 'इस खन्ज़ीर की बोटी-बोटी काट कर मुझे चीलों को खिलानी चाहिए पर क्या करूँ

महज़बों का हुक्म मुझे मानना ही पड़ेगा। गुलममन और ईदू दोनों ही नूरा के खास अकीदतमन्द होते हुए भी मेरी जिन्दगी पर छाए हुए हैं। उन्होंने खुद ग़म और जुल्म सहे जिससे मेरी और महज़बों की जिन्दगी झुलस न पाए। नहीं हबीबा, नूरा को सज़ा तो मिलेगी पर रहम के तकाजे मद्दे नज़र रखने पड़ेंगे।' हबीबा ने अपने मुख़बिर छोड़ दिए—जहाँ भी हो नूरा को पकड़ो।

ईदू की हिदायत के मुताबिक वैसे जब्बर खाँ ने भी कैप्टिन जेम्स के कान में डाल दिया था कि बेबी को उठाने वाला बदमाश और अपना नाम फ़रेब से हबीबा बतलाने वाला ज़लील—आजकल यहीं घूम रहा है। कैप्टिन जेम्स ने पुलिस कप्तान कैप्टिन पीटर्स को बतला दिया था। पीटर्स ने जब थानों को आगाह किया तो दारोगा चौंका। उसे यह दास्तान नसीर खाँ ने नहीं बतलाई थी।

दारोगा सहमते हुए कोतवाल के पास पहुँचा और नए मुख़बिरों का रजिस्टर उनके सामने रख दिया जिसमें नूरा की फोटो लगी थी। रजिस्टर पुलिस कप्तान के पास पहुँच गया और जब कैप्टिन जेम्स को उसे दिखाया गया तो उसने हर्ष से कहा कि यही वह शख्स है जिससे जेम्स स्वयं निपटना चाहता है। दारोगा को जब हुक्म सुनाया गया तो उसने फ़ौरन नसीर खाँ को तलब किया, पर नसीर खाँ वहाँ से कब का उठ चुका था। दारोगा अपने कुछ सिपाही लेकर टूटी मस्जिद पहुँचा तो वहाँ का समाँ देखकर उसके देवता कूच कर गए। जाफर खाँ और उसके पठानों को खोला गया। जाफर खाँ ने माहौल देखकर रो-रो कर दूसरी कहानी सुनाई कि नूरा ही बेबी को ले गया और नसीर खाँ भी गायब है। दारोगा सर पकड़ कर बैठ गया। नूरा तो गया सो गया पर हबीबा के चले जाने से उसका इनाम और तमगा हमेशा के लिए आँखों से ओझल हो गए। गुस्से में दाँत पीसता हुआ दारोगा अपने मुख़बिरों से बोला, 'सब जुआघर और नाचघर छान डालो। आख़िर जाएगा कहाँ ये हरामज़ादा।' सबको एक-एक कापी फोटो की पकड़ा दी गई और नूरा की तलाश में वे मधुमक्खी की तरह भनभनाते हुए चल पड़े।

नूरा को तीन चाहने वाले तलाश कर रहे थे। कैप्टिन जेम्स, दारोगा और हबीबा। करीब चौबीस घंटे बाद एक मुख़बिर ख़बर लाया कि नूरा

रुख़साना के घर के अन्दर छुपा हुआ है। दारोगा फ़ौरन ही दस आदमी लेकर पहुँचा। रुख़साना ने जब दस्तक सुनकर दरवाजा खोला तो दारोग़ा को देखकर वह सन्न रह गई। अन्दर जब तलाशी ली गई तो नूरा कमरे में पलंग के नीचे छुपा हुआ मिला। दारोगा ने नूरा को गिरफ्तार कर लिया। हंटर से नूरा की पीठ को नीली धारियों से भर दिया। नूरा रो-रोकर कहता रहा, 'हुज़ूर, नसीर खाँ को युसुफज़ई कबीले वाले ले गए हैं।'

'सूअर के बच्चे, ये सब तेरी वजह से हुआ। अगर उस लड़की का रोना तू नहीं रोता तो मेरी स्कीम कितनी बढ़िया चल रही थी।' दारोग़ा ने खिसिया कर अब की बार अपने पाँव से जूता उतारा और नूरा के सर पर पिल पड़ा। नूरा पिट कर बेहाल हो गया। जब पीट-पीट कर दारोग़ा थक गया तो हँसकर बोला, 'खैर जो कुछ हुआ सो हुआ। अब मैं तुम्हें तुम्हारे एक और आशिक़ के पास भेज रहा हूँ। वह तुम्हारी खातिरदारी को बेचैन बैठा हुआ है बेटे।' नूरा भय से देखता रहा और सोचने लगा कि दारोग़ा उसे हबीबा को तो सौंपने से रहा, फिर उसका यह नया क़द्रदाँ कहाँ से पैदा हो गया।

दारोगा दहाड़ कर बोला, 'दीवान गफ्फार खाँ, इस हरामज़ादे को बाँधकर गाड़ी में डाल दो और कैप्टिन जेम्स साहब के पास भेज दो। उसकी बच्ची को ये उठा ले गया था। कैप्टिन साहब उस अहसान को उतारना चाहते हैं।'

यह सुनकर नूरा की आँखों के सामने सितारे झिलमिलाने लगे। वह रोकर बोला, 'हुज़ूर, मुझे यहीं मार डालो पर वहाँ मत भेजो।'

जवाब में दारोगा ने कस कर एक लात जमाई और उसे बोरी की तरह उठाकर गाड़ी में फेंक दिया गया।

कैप्टिन जेम्स नूरा का बेसब्री से इन्तज़ार कर रहा था। जैसे ही गाड़ी बँगले में घुसी, जेम्स उठकर खड़ा हो गया। उसकी मेम और बेटी बरामदे में खड़े थे। गाड़ी से अधमरे नूरे को उतारा गया। जेम्स ने अपनी पत्नी को पास बुलाकर उसे दिखाया।

'ये शक्ल से ही शैतान जैसा लगता है' वह बोली।

जब छोटी डैफनी को जेम्स ने बुलाया तो पास आकर वह डर गई

और बोली, 'ये ही है वह 'डैविल,' पापा !'

जेम्स ने अपना बेंत डैफनी को दिया और कहा कि नूरा को जी भर कर मारे। डैफनी का एक बेंत नूरा की पीठ पर पड़ा। नूरा भयभीत और आंसू भरी आंखों से देख रहा था। डैफनी ने हाथ रोक लिया और तुतला कर बोली, 'ये रहम की भीख मांग रहा है मम्मी। तुमने कहा था ना कि ईसा मसीह दया, रहम और प्रेम का पाठ पढ़ाने यहां आए थे। इसको मैंने माफ कर दिया।'

जेम्स और उसकी पत्नी सुनकर अवाक् रह गए।

जेम्स ने नूरा के बाल पकड़कर उसका सर उठाया और कहा, 'तुमने सुना, कुत्ते, मेरी बच्ची क्या कह रही है ! वह कहती है कि तुम पर रहम करके उसने माफ किया।'

नूरा हाथ जोड़ कर रोता हुआ बोला, 'हुजुर, आप यकीन करें। मुझे यह सजा दी है मिसी बाबा ने जिससे मैं जिन्दगी भर तड़पता रहूँगा।'

जेम्स ने सिपाहियों को हुक्म दिया, 'इसे क्वार्टर गार्ड में बन्द कर दो। इसे चीफ कमिश्नर के पास पेश किया जाएगा।'

वे लोग नूरा को उठा ले गए और फौज के क्वार्टर गार्ड में बन्द कर दिया। जब मैस में यह चर्चा शाम को अफसरों के बीच छिड़ी तो जबर खाँ ने कान खड़े किए। उसने ही दूसरे दिन हुबीवा को बतलाया कि नूरा पल्टन के 'कोट गारद' में बन्द है।

क्वार्टर गार्ड पर हमला करना जोखिम का काम था। पहरे पर सतर्क गोरों का दल था। दो मशीन गन हमेशा तैयार रहती थीं। क्वार्टर गार्ड के चारों तरफ दोहरे कांटेदार तारों का परकोटा खिंचा था। हुबीवा बड़े सोच में पड़ गया। रात को उसने सलाह-मशवरे किए। वह स्वयं भी क्वार्टर गार्ड को दूर से देखकर आया था। वहाँ हमला नामुमकिन था।

यकायक हुबीवा के चेहरे पर मुस्कान फैल गई। 'एक तरकीब है,' वह हँसकर बोला। और उसने सब साथियों और जबर खाँ को वह बात बतलाई। स्कीम जोखों की थी पर बिल्कुल नामुमकिन भी नहीं थी।

'कल शाम को सब तैयार रहना। काम होते ही हमें चल देना होगा,' हुबीवा बोला।

एक वहुत वड़े संतरे की तरह कवीले पर टँगा हुआ था।

'ख़ुदा का शुक्र है कि हम सूरज के डूवने से पहले वापस आ गए,'
फ़ाम वोला।

सव कवीले के अंदर पहुँच गए थे। नसीर खाँ वँधा हुआ एक कोने में
ास वैठा था। गुलसमन को महजवीं ने अपनी वग़ल में वैठा रखा था।
व उतर कर हाथ-पाँव सीधे करने लगे।

'मामूँ खाँ', गुलफ़ाम वोला, 'इस कमीने को हवेली के तहख़ाने में वन्द
र दो। इसको खाना-पानी देना है जिससे ये मर नहीं जाए। वन्द करने से
हले देख लेना कि कोई हथियार वग़ैरह तो इसके पास नहीं है।'

नसीर मियाँ नीचे वन्द कर दिए गए। गुलफ़ाम के सर पर पट्टी देख
कर सरदार गुलाव खाँ चौंके।

'ये क्या हुआ वेटे ?' उन्होंने पूछा।

गुलफ़ाम ने ख़ास-ख़ास वाकया सुना डाला, सिर्फ़ महजवीं वाली वात
दवा गया। गुलाव खाँ सुनता रहा और फिर धीरे से वुदवुदाया 'शायद
महजवीं का झुकाव तुर्रे खाँ के लड़के हवीवा की तरफ है। अल्लाह को ये
मंजूर लगता है कि ये दोनों कवीले अपनी पुरानी रंजिश को दफ़न कर दें।
फिर भी रिश्ता पहले तुर्रे खाँ की तरफ़ से आना चाहिए।'

महजवीं गुलसमन को अपने साथ अंदर ले गई। रात को उसे अपने
कमरे में ही सुलाया। सोने से पहले गुलसमन ने उदास स्वर में कहा,
'ना जाने नूरा पर क्या वीत रही होगी ?'

महजवीं उसकी पीठ पर हाथ रखकर वोली, 'नूरा के गुनाह उसकी
जिन्दगी के हर पहलू से उभर आए हैं वहन। क़ौम के साथ गद्दारी, कवीलों
के पुराने रिश्तों में जहर घोलना, दूसरे की लड़की की आवरू लूटने की
साजिशें, क्या नहीं किया उसने ! पर वहन, तुम्हारी हक़पसन्दी ने मेरे गुस्से

को काफूर कर दिया है। तुम्हारा अहसान नूरा की जिन्दगी पर एक खुदाई रहम की तरह साया डालता रहेगा। मैं भी ये नहीं चाहती कि तुम्हारी जिन्दगी की खुशी में अपनी इज्जत के बढ़ने की आड़ में बरबाद करूँ। यकीन रखो बहन, हबीब खाँ बहादुर के अलावा मोम जैसा दिल भी रखते है। नूरा का बाल भी बाँका नहीं होगा।'

गुलसमन नूरा के कारनामों का ख्याल करके महजबीं से आँखें मिलाने कतराती, पर आखिर जैसा भी है नूरा उसकी समा-ए-जिन्दगी की लरजती हुई लौ ही तो है। महजबीं की तसल्ली उसे सच्ची लगती।

महजबीं ने गुलसमन को अपना खास मेहमान जैसे रखा और दूसरे दिन गुलफाम और उसके साथी गुलसमन को उसके कबीले में छोड़ आए।

गुलसमन अपनी माँ से लिपट कर बहुत रोई थी और उसने सिर्फ यह बतलाया कि नूरा मुश्किल में है। वह उसे बचाने गई थी और किसी हद तक वह उसकी खैरियत का इन्तजाम भी कर आई है।

शाम को गुलसमन नहा-धोकर सरदार हिलाल खाँ के पास पहुँची। सलाम करके वह बोली, 'अब्बा जान, मैं आपसे कुछ जरूरी बातें करने आई हूँ।'

सरदार हिलाल खाँ चौंके, 'कौन-सी बातें करने आई हो बेटी गुलसमन?'

गुलसमन ने कहा, 'आपके खानदान की मैं होने वाली इज्जत हूँ, अब्बा जान। आपके खानदान की बेहतरी के लिए अगर मुझे जहर-आलूदा सच भी बोलना पड़ेगा तो मैं बोलूँगी क्योंकि बुजुर्गों से गलतियाँ छुपाना एक सगीन गुनाह है।' हिलाल खाँ अचरज से देखते रहे।

'अब्बा जान, मैं आपको पेड़ के नीचे अकेले में सब बातें बताऊँगी। गलती भी इनसान से ही होती है। दामन के दागों को बुजुर्ग अपने तजुर्बे से धोकर मिटा सकते हैं। उनका इतना तजुर्बा है कि दाग दामन से मिट जाए पर दामन फट कर बरबाद भी न हो।'

हिलाल खाँ विस्मित-चिन्तित से उसके पीछे-पीछे चल दिए। गुलसमन ने नूरा के बारे में कुछ भी नहीं छुपाया। महजबीं से पहली जबरदस्ती, हबीबा का आकर बचाना, जेम्स की बच्ची को उड़ाना और फिरौती का हबीबा को कबूल न करके भी अपने पास से दो हजार सरदार हिलाल खाँ को देना। गुलसमन ने सब कुछ उगल दिया और आँखें नीची करके बोली, 'अब्बा

जान, मेरे गुनाह की सजा देना भी न भूलिएगा। महजवीं की आवरू मैंने नहीं बचाई वलिक अपने वहके हुए खाविन्द के ऊपर अपने हक़ को मैंने धोखे से हासिल किया। निकाह से पहले ही मैं आपके कवीले के चिराग़ की रोशनी वन चुकी हूँ। ये चलन के खिलाफ़ मेरी मुहव्वत की वग़ावत के सिवा और कुछ नहीं है, अव्वा जान। पर मैं मजवूर थी। एक औरत होने के नाते मैं कमज़ोर हूँ। अपनी मुहव्वत की तौहीन मैं वरदाश्त नहीं कर पाई। मुझे ये गवारा नहीं हुआ कि मेरी जानकारी में होते हुए कोई ग़ैर लड़की नूरा के पहलू में मचल कर मेरे हकूक़ छीन ले।'

हिलाल खाँ की आँखों में खून के आँसू उतर आए। वह गुलसमन की पीठ पर हाथ रखते हुए वोले, 'तुम अव घर जाओ वेटी। मैं तुम्हें शुक्रिया अदा करता हूँ कि तुमने मेरे घर में छाए अँधेरे से मुझे वाक़िफ कराया। मुझे नाज है कि तुम मेरे वफ़ादार दोस्त की वेटी हो। मुझे ग़रूर है कि तुम मेरे खानदान के सहन में पाक चाँदनी फैला कर हरेक अँधेरे पर ग़ालिव होती रहोगी। मैं तुम्हें अपनी वहू कवूल करता हूँ। नूरा ने जो मेरे कवीले की शान पर कालोंछ पोती है उसकी क़ीमत मैं खुद उससे वसूल करूँगा। जाओ वेटी, अपनी माँ को वतला देना कि कल से तुम मेरे खानदान की वहू-वेटियों के वीच रहा करोगी।'

गुलसमन ने आँसू भरी आँखों से हिलाल खाँ को देखा और कहा, 'अव्वा जान, चलते वक्त एक भीख मैं आपसे माँगूँगी?'

'कौन-सी, वेटी गुलसमन?' हिलाल खाँ वोले।

'नूरा की ज़िन्दगी की हिफ़ाजत,' गुलसमन काँपते ओठों से वोली।

हिलाल खाँ गहरी साँस छोड़कर वोले, 'ये भीख तुम रोज नमाज़ पढ़ते वक्त खुदा से माँगना मेरी वच्ची। ये भी मिन्नत करती रहना कि मैं एक कवीले के सरदार का हक़ अदा कर सकूँ और एक वेटे के वाप का भी।'

यह कहकर हिलाल खाँ भरे हुए तूफ़ान की तरह उठ खड़े हुए।

उन्होंने फ़ौरन अपने सलाहकार को वुलवाया और फिर देखते ही देखते पचास सवार इकट्ठा हो गए। पीठ पर वन्दूक टाँगे हिलाल खाँ ने एक हज़ार की थैली रखी और वे साथियों को लेकर चल दिए।

गुलसमन फड़फड़ाते ओठों से कुरान की आयत पढ़ने लगी। हिलाल

खाँ सीधे यूसुफ़ज़ई क़बीले की हद पर पहुँचे और सिर्फ़ एक साथी को लेकर सरदार गुलाब खाँ के दर पर पहुँचे। सरदार गुलाब खाँ ने हिलाल खाँ का सत्कार किया।

'गुलाब खाँ, हम तुम्हारे बेटे से एक सौदा करने आए हैं।'

गुलाब खाँ हँसकर बोले, 'कमाल है, बाप से बात तक नहीं कर रहे हो और बेटे को हम पर भी तरजीह दे रहे हो हिलाल खाँ।'

अन्दर ख़बर कर दी कि खाने का इन्तज़ाम किया जाए। शरबत भी भिजवाया जाए।

जब गुलफ़ाम आया तो उसने हिलाल खाँ को सलाम किया। हिलाल खाँ बोले, 'बेटे, हम तुमसे एक सौदा करने आए हैं पर बातें तुम्हारे अब्बा से दूर होंगी।'

गुलाब खाँ उठते हुए बोले, 'लो यार, मैं ही उठा जाता हूँ।'

हिलाल खाँ गुलफ़ाम को पेड़ के नीचे ले जाकर बोले, 'बेटे, मैं बड़ी हिम्मत करके अपनी शक्ल तुम्हें दिखा रहा हूँ। मुझे सब कुछ कल गुलसमन—मेरी बहू ने बतला दिया है। मेरे लड़के ने मेरे बुज़ुर्गों की लाज से उसका कफ़न उतार-उतार कर उसे कौड़ियों के मोल बेच दिया है। मैं बहुत शर्मिंदा हूँ। नूरा को बिगाड़ने में क़ुदरत का हाथ तो ख़ैर था ही, पर इस नसीर खाँ ने रही सही कसर भी नहीं छोड़ी। मैं एक हज़ार रुपये लेकर आया हूँ। मेरा मन्शा है कि तुम ये फिरौती कबूल करके नसीर खाँ को मुझे सौंप दो। मैं इसके ख़ून से अपने क़बीले के पाक दामन पर लगे दागों को छुड़ाऊँगा।'

गुलफ़ाम संजीदगी से सुनता रहा। फिर साँस छोड़कर बोला, 'मुझे ये सौदा मंज़ूर है चचा जान।'

हिलाल खाँ धीरे से बोले, 'शुक्रिया बेटे। एक और ख़्वाहिश है। मैं अभी गुलाब खाँ से इल्तजा करता हूँ कि दो बात महजबीं बेटी से भी कर सकूँ।'

गुलफ़ाम उसे देखता रहा। गुलाब खाँ के कहते ही महजबीं सर झुकाए आ गई और सलाम करके खड़ी हो गई। हिलाल खाँ उसे देखकर बोले, 'ख़ुदा तुम्हारी हमेशा मदद करे बेटी। मैं तुम्हें देखना चाहता था। मुझे गुलसमन ने सब कुछ बतला दिया है। वह एक बहादुर पठान और मेरे वफ़ादार दोस्त की बेटी है। उसकी दास्तान सुनकर मैं उसे कल से अपनी बेटी [illegible]

अपनी बहू कबूल कर रहा हूँ। अपने बेटे नूरा से तुम्हारा बदला लेने मैं
ल चल दूँगा। मैं पठान हिलाल खाँ की हैसियत से जा रहा हूँ, एक जलील
टे के बाप की हैसियत से नहीं। मेरी बन्दूक उसे सिर्फ ये बतलाएगी कि
क पठान की लड़की पर बदनज़र उठाने की सज़ा एक पड़ोसी पठान किस
तरह देता है।'

महजबीं सुनकर काँप उठी। उसने धीरे से सर उठाकर कहा, 'चचा जान, मैंने नूरा भाई को मुआफ़ किया।'

हिलाल खाँ बोला, 'ये तुम्हारे खान्दानी खून का रंग बोल रहा है बेटी। तुमने इसे माफ़ किया पर हिलाल खाँ ने नहीं।'

गुलाब खाँ दूर से सब देख रहे थे। जब महजबीं चल दी तो हिलाल खाँ ने गुलाब खाँ के कंधे पर हाथ रखकर कहा, 'अब तुमसे भी कुछ कहना चाहता हूँ।'

गुलाब खाँ हँसकर बोले, 'भाई हिलाल खाँ तुमने मेरे पूरे खानदान से बातें कर डालीं। बस मैं और तुम्हारी भाभी जान ही बचे हैं!'

हिलाल खाँ संजीदगी से बोला, 'गुलाब खाँ, हम दोनों साथ-साथ एक ही मैदान में लड़े हैं। गोलियों की भनभनाहट के बीच एक ही दस्तरख्वान पर खाया भी है। मैं जो कुछ कह रहा हूँ गौर से सुनना। अगर बुरा लगे तो मुझे मुआफ़ कर देना।'

गुलाब ख़ाँ ग़ौर से हिलाल खाँ की ओर देखने लगे।

हिलाल खाँ आँखों में आँखें डालकर बोले, 'एक शेर की बच्ची दूसरे शेर के बच्चे के साथ ही फबती है गुलाब खाँ! मेरा मन्शा है कि मैं तुर्रे खाँ को लेकर तुम्हारे दर पर उसके बेटे हबीबा के लिए बेटी महजबीं का हाथ माँगने आऊँ।'

गुलाब खाँ ने एकटक हिलाल खाँ की तरफ़ देखा और फिर हाथ ब
दिया।

'मुझे ये रिश्ता मंजूर होगा बशर्ते कि तुम ज़ामिन बनो और तुर्रे
को यहाँ उसूल के मुताबिक ला सको।'

हिलाल खाँ ने गुलाब खाँ को गले लगा लिया।

फिर एक हज़ार की थैली गुलफ़ाम को पकड़ा कर बँधे हुए नसी
को लेकर हिलाल खाँ चल पड़े।

ईंदू का मश्विरा ही हबीबा को सबसे ज्यादा पसन्द आया। शनिवार की शाम अंग्रेज बड़ी फराखदिली से मनाते हैं। क्लब, डान्स, शराब—यह कोई कसर नहीं छोड़ते हैं शाम को रंगीन बनाने में। क्या अफसर और क्या सिपाही, सभी शनिवार की शाम को त्योहार की तरह मनाते हैं।

हबीबा ने ईंदू खाँ का मश्विरा ही बेहतर समझा। जबर खाँ मैस में सफेद वर्दियाँ धोबी के यहाँ से लायेगा। वर्दी आते ही मैस में यह नाटक होगा कि कोई धुली-धुलाई वर्दियाँ चुरा ले गया।

क्वाटर गार्ड पर दस गोरों का पहरा रहता है। बारी-बारी से शनिवार की शाम को सब को ड्यूटी देनी पड़ती है। ड्यूटी वाले गोरे अक्सर मुँह लटकाए रहते हैं पर ड्यूटी तो करनी पड़ती है।

शाम को ईंदू खाँ और शम्मू मैस की वर्दियाँ पहनकर क्वाटर गार्ड जाएँगे और एक पेटी 'शेम्पेन' शराब और धीमी आँच पर सिके हुए मुर्गों का थाल लेकर गार्ड कमांडर को बतलाएँगे कि कैप्टिन जेम्स साहब का प्रमोशन हो गया है। उसी खुशी में सब को पार्टी दी जा रही है। क्वाटर गार्ड के गोरों के लिए सामान भिजवाया जा रहा है।

जब सामान आया तो संतरी चौंका पर 'अफसर मैस' की वर्दियों में बैरा दल देखकर वह सकते में भी आ गया। 'शेम्पेन' की पेटी देखकर उसने जीभ को ओठों पर फिराया और फिर गार्ड कमांडर को आवाज दी। गार्ड कमांडर सारजेन्ट स्ट्रैंची था, जो माना हुआ शराब का पट्ठा था। उसने सब कहानी सुनी और फिर ठोड़ी खुजाकर बोला, 'पर ड्यूटी के दौरान हम शराब नहीं पी सकते। सामान रख लेते हैं पर पीना-पिलाना कल ही होगा।' नकली बैरे तो सामान उतार कर चलते बने और दूर से देखते रहे। धीरे-धीरे और भी गोरे आ गए। 'शेम्पेन' की एक बोतल उठाई तो वह बर्फ से भी ज्यादा ठंडी हो रही थी। सारी बोतलें सुबह से बर्फ में दबी थीं। बोतलों का कार्क

हुआ जो 'भूखी चील के घोंसले में मांस का होता है। धीरे-धीरे कुछ कारपरल को पटाने लगे, 'ऐसा करते हैं, जो इस वक्त ड्यूटी पर नहीं थोड़ी-थोड़ी पी लेंगे। वर्ना ये बोतलें गर्म हो जाएँगी। सोचो कारपरल, ल्र्स हीडसिक' की शेम्पेन है और ये गर्मागर्म मुर्ग ! और यहाँ ही कौन-अटैक होने वाला है !'

सब 'भूखे गिद्धों ने एक दूसरे की हाँ में हाँ मिलाना शुरू कर दिया और क्योंकि उनके कारपरल की भी लार टपकना शुरू हो गई थी, लिहाजा बोतलें पहले एक-एक करके खुलीं और फिर जैसे-जैसे सरूर छाने लगे, इकट्ठी खुलने लगीं। करीब दो घंटे बाद गोरे लड़खड़ा कर पहरा देने लगे और बाक़ी कमरे में बेसुरे सुर से गाना गाने लगे।

हबीबा ने मौका देखकर ही धावा बोल दिया। चुपचाप बिल्ली की तरह वे आए और हरेक को मज़े से दबोच लिया।

शम्सू मशीनगन और नई राइफ़लें देखकर ललचाने लगा पर हबीबा बोला, 'नहीं शम्सू भाई। हम सिर्फ़ नूरा को लेने आए हैं। अगर हम हथियार भी ले चले तो कैप्टिन जेम्स साहब की बेइज्जती हो जाएगी।' सबने बात मानी। आनन-फाननन नूरा को पकड़कर बाहर निकाल लिया गया। हबीबा को देखकर नूरा की जान सूख गई। हबीबा हँसा, 'डरो मत, अंग्रेजों से हम कम सख़्ती बरतेंगे।' बग़ैर कुछ और छूए सब चल दिए। जाते वक्त हबीबा ने एक चिट्ठी कैप्टिन जेम्स के नाम छोड़ दी जो संतरी की राइफ़ल पर बाँध दी गई।

नूरा को लेकर सब घोड़े कबीले की ओर भाग निकले।

करीब एक घंटे बाद स्कीम के मुताबिक जबर खाँ ने क्लब में कैप्टिन जेम्स को फ़ोन कर दिया।

जेम्स डान्स छोड़कर फ़ौरन भागा था। क्वाटर गार्ड आकर उसने देख कि करीब-करीब सब ही नशे में औंधे पड़े हैं। जेम्स को काठ मार गया सहसा उसकी नजर संतरी की राइफ़ल पर बँधे ख़त पर पड़ी। उसने ज से उसे खोला। लिखा था :

'कैप्टिन जेम्स साहब बहादुर, सलाम। नूरा को सज़ा देना ज़रूरी था इसीलिए उसे ले जा रहा हूँ। यक़ीन मानिए आपकी मिसी का बदला मैं पूरा-पूरा लूँगा। इसके अलावा मुझे भी नूरा से निबटन

इसीलिए मुझे 'कोट गारद' में उसे ले जाना पड़ा। यकीन मानिए साहब, सिवाय नूरा के मैंने किसी और चीज को छुआ तक नहीं है। चाहे आप चेक कर लेना। मेम साहब को सलाम कहिएगा। उनका केक बहुत पसंद आया था उस रोज। सिसी बाबा को प्यार कहिएगा।

आपका दोस्त और दुश्मन—हबीबा।'

जेम्स ने पढ़कर गहरी सांस छोड़ी।

'तुम यकीनन बहादुर हो हबीबा' वह स्वगत बोला।

तोर खामा के करीब हबीबा ने अपने दोस्त साला खाँ के यहाँ नूरा को भेज दिया था। नूरा उस वक्त अधमरा-सा हो गया था। दारोगा के बेंतों की नीली धारियाँ उसकी पीठ पर छोटे-छोटे सांप जैसी बन गई थीं। उसके सर पर भी काफी चोट थी। सर पर जूते पड़ते वक्त उसकी खाल और इक्का-दुक्का निकली कीलों ने कई जगह पर जख्म कर दिए थे। नूरा को जब कमरे में धकेला तो वह असहाय और भयभीत दृष्टि से हबीबा को देखने लगा। उसने टूटी हुई मस्जिद में बँधे हुए हबीबा के मुँह पर कई थप्पड़ मारे थे। पिछले अत्याचार को वह भूला नहीं था। अब उसे हबीबा से दया की आशा भी नहीं थी। फर्श पर गिरते ही वह काँप उठा। शायद अब हबीबा उसकी पिटाई करेगा।

हबीबा उसके पास आकर बोला, 'डरो मत नूरा। मैं घायल दुश्मन पर बहादुरी नहीं दिखलाता। अपने काबू में आए हुए दुश्मन को तो औरत तक पीट लेती है। घबराओ मत। हबीबा तुमसे लड़ेगा, पर वह हक की लड़ाई होगी। सुना है तुम तलवार बड़ी अच्छी चलाने लग गए हो। मैं तुमसे तलवार से ही लड़ूँगा नूर खाँ, पर अभी नहीं। पहले तुम्हारे सब घाव ठीक हो लें। इसके बाद तुम कुछ दिन खा-पी भी लो जिससे जिस्म में जान आ जाए। फिर हम काबुल नदी के मग़रबी किनारे पर लड़ेंगे। सिर्फ एक गवाह रहेगा। वह भी मैंने ऐसा आदमी छाँटा है जो तुम्हारा पुरा-

नमक हलाल दोस्त है और मेरा कद्रशनास। ईंदू खाँ! ठीक है ना नूरा?'

नूरा उसे साँप जैसी आँखों से देखता रहा। हवीवा लाला खाँ को हिदायत देते हुए वोला, 'इसकी दवा-दारू बढ़िया तरीके से करना लाले। इसको खूब मुर्गमुसल्लम खिलाना जिससे इसके जिस्म में फिर से लौ जल उठे। और हाँ, इस पर सख़्त निगरानी रखना, भागने न पाए।'

लाला खाँ सुनता रहा। हवीवा उठकर वोला, 'अच्छा फिर एक हफ्ते वाद मैदान में मिलेंगे नूर खाँ।'

हवीवा चला गया। नूर खाँ ज़हरीली साँसें लेकर न जाने क्या-क्या सोचता रहा। उसे वैसे कैप्टिन जेम्स की नन्ही-सी लड़की डैफ़नी की क्षमा वार-वार शूल जैसी चुभती।

लाला खाँ ने नूरा की देखरेख में कोई कोर-कसर नहीं उठा रखी थी। पाँचवें दिन ही नूरा विलकुल चंगा हो गया। उसे मन चाही गिज़ा खाने को दी जा रही थी। नूरा की वाँहों की मछलियाँ वार वार फड़क उठतीं। अपने दुश्मन हवीवा की दावत उसे याद थी। उसने लाला खाँ से अपनी तलवार माँगी जो उसे दे दी गई। नूरा रोज तलवार के हाथ भी खाँ करता रहा। हवीवा से उसे निवटना था। हवीवा की सूरत का ख़्याल आते ही उसके शरीर में नफ़रत की वाढ़ उठती और फिर महजवीं का चाँद जैसा चेहरा नजर आता। दोनों वार महजवीं उसके पहलू से निकल भागी। यह अफ़सोस नूरा को अभी तक था।

ईंदू खाँ ने हवीवा के धर्मयुद्ध की चुनौती को सराहा। उसने एक वार किसी से कहा भी था—

'हवीवा शेर दिल है। उसकी जमीर की तराज़ू इन्साफ़ के काँटे से नहीं डिगती। हवीवा सचाई की तरफ़ है और सच्चा हमेशा फ़तह हासिल करता है।' ईंदू खाँ को शाम को पता लगा कि नूरा के अब्वा सरदार हिलाल खाँ नूरा की खोज में इधर-उधर घूम रहे हैं। ईंदू ने अपने एक साथी के हाथ खवर पहुँचवाई थी। जव हिलाल खाँ ने यह सुना तो वड़े फ़ख़्र से वोले, 'उरकजई के ऊपर अल्लाह ताला की मेहर छाई हुई है शायद। तुर्रे खाँ का वेटा वहादुर के अलावा नेक तवियत भी है। हक़ की लड़ाई देखने में वड़ा मजा आएगा। मैं नूरा और हवीवा की लड़ाई अपनी आँखों

में देखूंगा।'

सातवें दिन काबुल नदी के पार कुदरत ने मखमल की कालीन बिछा रखी थी। आस-पास सिर्फ़ पहाड़ियाँ ही चश्मदीद गवाह बनी देख रही थीं। इनके अलावा ईदू खाँ भी था जो पंच गद्दी पर बैठा हुआ-सा लग रहा था। सबने अपने-अपने घोड़े बाँध दिए। ईदू खाँ ने दोनों की तलवारों को देखा फिर टटोल-टटोल कर यह भी इत्मीनान किया कि किसी ने और कोई हथियार तो नहीं छुपा रखा है। चमकती तलवारों पर धार ऐसी लगती मानो मोड़ खाती नदी पर दोपहर के सूरज की धूप पड़ रही हो।

हबीबा जोर से बोला, 'नूर खाँ, महजबी की तरफ हाथ बढ़ाने की तुमने जो जुरअत की थी इसका बदला मैं, हबीब खाँ उरकजई, तुमसे लूंगा। सँभल जाओ।' और फिर लोहे की आवाज से घाटी गूंज उठी।

दोनों तलवार की ही लड़ाई नहीं लड़ रहे थे, बल्कि वह एक पायस जज्बात की लड़ाई भी थी। हक और नाहक की ताकत का इम्तहान भी था। सुनते आए हैं कि हक परस्त की तलवार में खुदा की मदद समा जाती है। और शायद यही हो भी रहा था। हबीबा नूरा पर शुरू से ही हावी हो रहा था। उसने तीन बार नूरा की बाँह और सीने पर लाल रंग का सोता बहाया था। नूरा हाँफने लगा था पर शायद उसकी रूह की सियाही और नफ़रत ही उसे लड़ाई जारी रखने पर मजबूर कर रही थी। दोनों चील की तरह एक-दूसरे पर झपटते और फिर अलग हो जाते।

हबीबा की शक्ल पर गुस्सा-भरी मुस्कान बड़ी भली मालूम दे रही थी। वह नूरा को छिना-छिनाकर मारना चाह रहा था शायद। उधर नूरा की शक्ल पर शैतान की परछाँही नजर आती। वह दाँत पीसते हुए जी जान से लड़ रहा था। सहसा हबीबा की मुस्कान गायब हो गई और जैसे थकाए हुए हाथी पर शेर हावी होने लगता है वैसे ही हबीबा नूरा को पीछे धकेलने लगा। उसने ओंठ बन्द करके एक जनेऊ का हाथ मारा जिससे नूरा के कन्धे से लाल खून का फव्वारा छूट पड़ा।

हबीबा जोर से चिल्लाया, 'परवरदिगार, कर मदद!'

और उसने बड़ी ताकत से नूरा की तलवार पर चोट की। नूरा के हाथ से तलवार झनझनाकर दस कदम दूर जा गिरी। हबीबा ने झपटकर

एक भरपूर लात नूरा के पेट में दी जिससे वह कराहकर गिर पड़ा। हवीवा सहज भाव से आया और अपनी तलवार की नोंक उसके टेंटुए पर रखकर बोला, 'नूर खाँ, अब बोलो।' नूरा घबराया हुआ बड़ी ज़ोर से हाँफने लगा। पसीने और खून से सना उसका चेहरा और भी भयानक लग रहा था।

ईदू खाँ साँस रोके यह सब देख रहा था।

हवीवा चिल्लाया, 'ईदू खाँ, तुम गवाह हो। इस बात को याद रखना; पर किसी से कहना मत। मैं नूर खाँ महमन्द को जिन्दगी की भीख देता हूँ। इसलिए नहीं कि मेरे अंदर रहम बग़ावत कर उठा है, बल्कि इसलिए कि बीबी गुलसमन का अहसान मेरी महजबीं के ऊपर छाया हुआ है और महजबीं का इशारा मेरे लिए एक मुक़द्दस हुक्म से कम नहीं। इसके अलावा इसके अब्बा सरदार हिलाल खाँ एक माने हुए बहादुर पठान और मेरे वालिद के दोस्त हैं।'

हवीवा फिर वहाँ गया जहाँ नूरा के हाथ से छूटी तलवार पड़ी हुई थी। उसने उसे उठाया और ईदू खाँ से बोला, 'ईदू खाँ, ये बहादुर महमंद कबीले की तलवार इस गुनहगार के हाथ में रहने से ऐतराज़ करने लगी है शायद। इसे सरदार हिलाल खाँ को दे देना जिससे वह इसे अपने कबीले के किसी मजबूत हाथों को सौंप सकें।'

हबीवा ने अपनी तलवार म्यान में रख ली और मुड़कर चल दिया। नूरा साँप जैसी निगाह से उसे देखता रहा। इसके बाद नूरा झटके से उठा और अपने घोड़े के पास जल्दी भागकर आया। घोड़े की जीन से उसने पैंतालीस बोर का भारी रिवाल्वर तेज़ी से निकाला और हवीवा की पीठ का निशाना बाँधा।

तभी 'धाँय' आवाज हुई। तेज़ी से पलटकर हवीवा ने देखा। नूरा की कलाई टूट गई थी शायद। रिवाल्वर उसके हाथ से छूटकर नीचे गिर गया था। ऊपर पहाड़ी पर राइफ़ल लिए सरदार हिलाल खाँ खड़े थे। नूर खाँ के अब्बा सरदार हिलाल खाँ!

वे चिल्लाए, 'नूरा, तुमने महमंदों की आबरू को रौंद डाला, ज़लील! इस उरकज़ई के लड़के की बहादुरी और नेकनीयती मैं तस्लीम करता हूँ। एक बहादुर की पीठ का निशाना बाँधकर तुम शर्म से मर नहीं गए। पर

तुम्हारी ये जलील हरकत देखकर मैं शर्म से हज़ार मौत मर गया। महमंदों ने हमेशा सीनों पर निशाना बाँधा है। काफ़िर दुश्मन तक की पीठ पर निशाना बाँधने से पहले एक ग़ैरतदार महमंद खुदकुशी करना ज़्यादा पसन्द करता है। ओफ़, तुमने महमंदों की इज़्ज़त धूल में मिला दी।'

हिलाल ख़ाँ जल्दी-जल्दी डग भरते हुए पास आए और जेब से कुरान-शरीफ़ निकाल कर नूरा को पकड़ते हुए कहा, 'कुरान शरीफ़ की मुकद्दस आयतें पढ़ लो नूरा। मरने से पहले इससे ज़्यादा और कोई सकून इन्सान को नहीं मिल सकता।' और उन्होंने अपनी राइफ़ल की नली नूरा के सीने की तरफ़ उठा दी।

हबीबा यह देखकर हक्का-बक्का रह गया। वह तेज़ी से भागकर आया और नूरा के सामने अड़ गया। 'नहीं चचा जान, आप ऐसा नहीं कर सकते। ऐसा करने से वालिद की मुहब्बत बदनाम हो जाएगी। कुदरत का निज़ाम तड़प उठेगा। नूरा आपका चिराग़ है, आपके ख़ानदान की तबक्का है। इसके जिस्म में आपके ख़ून की रवानगी बह रही है, चचाजान। इस चिराग़ में आपका दिया हुआ तेल जल रहा है। आप अपने चिराग़ को अपने हाथों नहीं बुझा सकते।'

हिलाल ख़ाँ बोले, 'हट जाओ हबीब ख़ाँ! तुमने ज़िन्दगी अता करने वाले बाप का ग़ज़ब अभी नहीं देखा है। सूबेदार दारा ख़ाँ पठान का नाम सुना है? जिसने अपने बेटे को अपनी राइफ़ल से मैदान में मारा था।'

हबीबा बोला, 'नाम सुना है चचा जान, पर ये भी सुना है कि बेटे को मारने वाला वही बाप बाद में अपने आँसुओं के सैलाब में ख़ुद ही डूब गया। इसी बाप ने अपनी राइफ़ल, मैडिल और तलवार अपने बेटे के मज़ार पर चढ़ा दिए और हमेशा-हमेशा के लिए अल्लाह के दर पर मुआफ़ी की हसरत लिए आज भी न जाने कहाँ-कहाँ भटक रहा है।'

हिलाल ख़ाँ की राइफ़ल की नली झुक गई। 'तुम क्या चाहते हो बेटे?' वह भराए गले से बोले।

हबीबा बोला, 'नूरा को अब मैं दुश्मन होकर भी मुआफ़ करने का हौसला रखता हूँ चचा जान तब आपका इसे माफ़ करना ऊँची रहम के मानिंद होगा। इन्सान के अन्दर शैतान और ख़ुदा दोनों रहते हैं। मुझे

पूरा यक़ीन है कि नूरा भाई के अंदर का शैतान एक न एक दिन दफ़ा हो जाएगा और फिर खुदा का नूर इनके जमीर में उजाला कर देगा। चचा जान, नूर खाँ को गुलसमन वहन की जरूरत है।'

हवीवा सलाम करके जाने लगा। नूरा की खूनी आँखों में शीतल आँसू छलकने लगे।

हिलाल खाँ बुझे हुए-से वोले, 'वालेकुम अस्सलाम, हवीवा वेटे !'

कैप्टिन जेम्स क्वार्टर गार्ड से सीधा अपने कर्नल के पास पहुँचा। कर्नल स्लेटर ने ग़ौर से वाकया सुना और बोला, 'कल पेशावर में चीफ़ कमिश्नर की कान्फ्रेंस भी है जेम्स। ये वाकया वहाँ सुनाना जरूरी है। कारपरल स्ट्रैची और सारे संतरियों को चार्ज शीट आज दे देनी होगी।'

जेम्स ने सर हिलाकर तामील की।

दूसरे दिन डिवीज़नल हेडक्वाटर्स के हॉल में कान्फ्रेंस थी। कर्नल सर हैरल्ड डीन ने सब से पहले पूरे साल के वाकयात की रिपोर्ट पढ़ी थी। सरहदी पठानों का साहस दिन दूना रात चौगुना वढ़ रहा था। हाल ही में ख़ैवर की चौकियों पर हमले वढ़ रहे थे। पिछले सात साल की रिपोर्ट के मुताविक अंग्रेजी शासन के वत्तीस लोगों का खून हुआ था। उन्तीस लोग घायल हुए थे और सैंतीस को पठान उठा ले गए थे जो फिरौती मिलने पर ही छोड़े गए। वाजार घाटी के जक्का खेल के कुछ लुटेरों ने वड़े-वड़े गिरोह वना कर छुट-पुट हमले वढ़ा दिए थे। इन हमलों को दवाने के लिए युवा लेफ्टिनेन्ट वेवल (जो वाद में हिन्दुस्तान के कमांडर-इन-चीफ़ और वाइसराय वने) को भेजा गया था। उधर ये ख़वरें भी गर्म हो रही थीं कि रूस के जासूस और अफ़सर उत्तरी भाग में घुसपैंठ कर रहे हैं। कान्फ्रेंस में ही हैरल्ड डीन ने कहा, 'अभी हाल में एक साहसी लुटेरे हवीवा का नाम वहुत सुना जा रहा है। यह शख्स वहादुर है, ऐसा मैंने सुना। वाकी पठानों के देखते

हुए मैं कहूँगा कि यह किसी हद तक एक शरीफ़ बदमाश है जो बच्चों और औरतों पर हाथ नहीं उठाता। इसकी सरगर्मी अगर जारी रही तो हो सकता है यह फ्रन्टियर का 'रोबिनहुड' बन जाए और हमारे प्रशासन पर छा जाए। इसके पीछे जो दो हज़ार का इनाम रखा था उसे मैंने चार हज़ार का कर दिया है।'

मेजर काबन ने जेम्स की तरफ़ देखा और फिर मुस्कराया।

चीफ़ कमिश्नर ने एक अहम बात भी बतलाई। पेशावर की ओर से कर्नल जॉन निकल्सन को पठानों की एक पल्टन बनाने की योजना दी गई है। हज़ारा के मुसलमान किसानों को हथियार से लैस करना और उनको इस्तेमाल करना निकल्सन ने सिखलाया था। और वह किसी हद तक कामयाब भी हुआ था। यह मश्विरा सुनकर कर्नल स्लेटर बोला, 'मेरी राय है कि यह लुटेरा हबीबा अपने सशस्त्र साथियों के साथ अगर निकल्सन के 'पठान कोर' में आ जाए तो हमारी बहुत सी समस्याएँ हल हो जाएँगी। निःसंदेह चीफ़ कमिश्नर महोदय को हबीबा और उसके दल के लिए 'फ़्री पार्डन' देना पड़ेगा।'

सर हैरल्ड डीन ने सुझाव पर सोचा और फिर बोले, 'यह काम तभी शुरू किया जा सकता है जब यह बात पक्की हो जाए कि सरहदी पठानों का यह जत्था हमारे 'कोर' में शामिल होने को रज़ामन्द है कि नहीं।'

मेजर काकन उठ खड़ा हुआ।

'सर, मैंने हबीबा और उसके कबीले को बहुत नज़दीक से देखा है। यह लड़का बहादुर है और किसी हद तक देशप्रेमी भी है। मैदान में उड़ती हुई धूल और सनसनाती हुई गोलियों का इन्हें शौक़ लग गया है। हम कहाँ तक यह उम्मीद कर सकते हैं कि ये लोग हमारे मातहत अनुशासन की जंजीरें ख़ुशी से पहन लेंगे? एक अजीब समस्या है। अगर मुझे इजाज़त दी जाए तो हबीब ख़ाँ के पास मैं यह मश्विरा पेश कर सकता हूँ।'

हैरल्ड डीन मुस्करा कर बोले, 'ठीक है काकन, मैं तुम्हें इसके लिए इजाज़त देता हूँ। तुम इस पठान के मेहमान भी रह चुके हो। मुझे यह जान कर ख़ुशी हुई थी कि तुमने पठानों के किरदार का जवाब अंग्रेज़ी किरदार से दिया। बेशक, मैं और आप सब लोग ये तस्लीम भी करते हैं कि

वहादुरी और दरियादिली की हम हमेशा क़द्र करेंगे भले ही हमारे दुश्मन की ही क्यों न हो। इसके अलावा एक वात और मद्देनज़र रखना, काक्रन। अगर सरदार हमारी पेशावर की फ़ौज में आने से कतराए तो तुम इनसे ये पठान मेरी तरफ़ से ख़ासेदारी समझौते के वारे में भी वात कर सकते हो। वाइस-रायऔर गवर्नर जनरल ने ख़ासेदारों के लिए कानून कायदे अव वहुत अच्छे कर दिए हैं। हमारा मक़सद है इन सरहदी पठानों की सरगर्मियाँ दवाना, भले ही वह तलवार के सहारे हो या दोस्ती का हाथ वढ़ाकर। सरहदी अनु-शासन केलिए जो ख़र्च हम कर रहे हैं, अगर उसके आधे ख़र्च में हम इन्हें अपनाख़ासेदार वना सकें तो कोई हर्ज नहीं है। हमें इनकी तरफ़ से निश्चित होना है।'

कान्फ्रेंस ख़त्म होने के वाद चाय शुरू हुई। मौका देखकर ही सहमते हुए कर्नल स्लेटर ने नूरा वाला वाक़या सुनाया। सर हैरल्ड डीन सुनकर स्तब्ध रह गया।

'कर्नल स्लेटर, इस वात को दवा दिया जाए। इससे हमारी वहुत वद-नामी होगी। पूरी गार्ड को सजा दी जाए पर जुर्म कुछ और दिखाया जाए। जो कुछ भी हो, हवीवा दरियादिल आदमी है। अगर वह तुम्हारी मशीन-गनें और राइफ़ल भी शरावी गार्ड की नाक के नीचे ढोकर ले जाता तो शायद मैं तो गवर्नर जनरल को अपना मुंह भी नहीं दिखा पाता।'

कर्नल स्लेटर और जेम्स की गर्दनें शर्म से झुक गईं।

'जैसे भी वन सके, इस हवीवा को हमें अपना वनाना होगा। अगर हवीवा दोस्त वनने में गुरेज़ भी करे, फिर भी कोई ऐसी चाल चलनी होगी कि वह अगर दोस्त न वन सके तो दुश्मन भी न रहे। मेजर काक्रन को मेरे दफ्तर में भेज दो। मैं उसे 'ब्रीफ़' करूँगा, स्लेटर। वह वहुत जरूरी काम लेकर जा रहा है। सोचो, हमारी छावनी में और हवीवा हमारी टोपी उतार ले जाए। काश, मैं हवीवा से मिल सकता तो उसकी पीठ ठोक कर कहता कि तुम निःसंदेह वड़े जीवट के लुटेरे हो।'

मेजर काक्रन को सर हैरल्ड डीन ने घंटे भर तक अपने आफ़िस में 'ब्रीफ़' किया था। दूसरे दिन एक स्क्वाड्रन और चार पहाड़ी तोपों के साथ मेजर काक्रन दर्रे की तरफ़ चल पड़ा। उसके आगे वाले घोड़े पर उसका

सवार सफेद झंडा लहराता चल रहा था।

हबीबा के पास जब खबर आई तो वह फ़ौरन अपने साथियों को लेकर चल पड़ा। दर्रे के मोहाने के पास वह ऊँचाई पर अपने साथियों को लेकर खड़ा हो गया।

मेजर काक्स ने यह देखकर अपने बिगुलर को बिगुल बजाने का हुक्म दिया। काक्स के सवार रुक गए। सफेद झंडे वाले सवार के साथ अकेला मेजर काक्स आगे बढ़ा। कुछ पास आकर हबीबा ने उसे पहचान लिया। वह भी अपने एक साथी को लेकर आगे बढ़ा।

मेजर काक्स और हबीबा पचास गज की दूरी पर अपने-अपने घोड़ों से उतर गए। काक्स ने मुस्करा कर हाथ उठाया और हबीबा ने उसे सलाम किया।

'हबीब खाँ बहादुर,' मेजर काक्स पास आकर हाथ मिलाते हुए बोला, 'मुझे पेशावर के चीफ़ कमिश्नर कर्नल सर हैरल्ड डीन ने भेजा है। हमारे क्वार्टर गार्ड से नूर खाँ को ले जाना हिम्मत का काम था। हमारे हथियारों को ले उड़ना शराफ़त का काम था। चीफ़ कमिश्नर के अलावा हमारी कौम के सब लोगों ने तुम्हारे इस नेक इरादे की खुले दिल से तारीफ़ की है।'

हबीबा मुस्करा कर बोला, 'साहब, कोट गारद कप्तान जेम्स साहब का था। उन्हें मैं दोस्त कबूल कर चुका हूँ। हम लाख लुटेरे हैं पर दोस्त की इज़्ज़त कभी नहीं लूटते। हाँ, मैदान में जब मौत अपने नग़मे गाने लगती है तब हम उस दोस्त में भी दुश्मन की तस्वीर देखते हैं और उसे लूटने और मारने में बड़ा फ़ख़्र समझते हैं।'

मेजर काक्स ने सर हिलाया, 'हम तुम्हारी बहादुरी पर शैदा है, हबीब खाँ। हम चाहते हैं कि किसी भी तरह हम तुम्हें अपना दोस्त बना लें। हाल ही में पेशावर में बहादुर पठानों की एक बड़ी पलटन खड़ी हो रही है। उस में तुम जैसे जाँबाज सरदार अपने इन हीरों के साथ आ जाओ तो हमारी किस्मत के दरवाज़े खुल जाएँ।'

हबीबा सुनकर मुस्कराया और बोला, 'जंगल की आबोहवा की चाट जिस शेर को लग जाती है वह सोने के पिंजड़े तक को हिकारत की निगाह से देखता है। हम लोग आवारा ज़िन्दगी के आदी हो गए है, मेजर साहब।

नौकरी हमसे शायद ही हो पाएगी। हाँ, आपकी दोस्ती का हाथ बढ़ा देखकर हम सोचेंगे कि किस तरह से हम आपके बन सकेंगे। लेकिन इसके लिए हमें अपने कबीलों के बुजुर्गों से इजाज़त लेनी पड़ेगी। दर हकीकत वे लोग ही सरदार हैं। हम तो उनके बच्चे हैं। मुल्क की इज्ज़त और क़ौम की आबरु के फैसले वही करेंगे।'

मेजर काक्रन बोला, 'हबीब खाँ, अगर हमारी किस्मत में तुम और तुम्हारे बहादुरों को ख़ाकी वर्दियों में देखना नहीं बदा है तो कम से कम हम इतना तो कर सकते हैं कि जब भी आमना-सामना हो तो हम दोनों के चेहरे पर मुस्कराहट फैल सके और बन्दूकों की नलियाँ झुक जाया करें। चीफ़ कमिश्नर साहब तुम्हें ख़ासेदार का खिताब और बँधी हुई रक़म सरकारी खज़ाने से देने को रजामन्द हैं। जिन भी कबीलों की सिफारिश तुम करोगे उन्हें माकूल रक़म हर महीने मिल जाया करेगी।'

हबीबा मेजर काक्रन को घूरते हुए बोला, 'और इस ऐजाज़ के बदले में हमें क्या करना होगा?'

'आपके हाथों में दोस्ती की खुशबू की हमें उम्मीद होगी', मेजर काक्रन बोले, 'उन पर से बनावटी हमदर्दी के दस्ताने उतार देने होंगे। वज़ीरस्तान से लेकर सफेद कोह पहाड़ तक हमारे दस्तों और काफ़िलों के तुम जामिन होंगे। जरूरत पड़ने पर तुम हमारी इमदाद को आओगे और जब तुम्हें हमारी इमदाद की तवक्को होगी, तो हम हमेशा तुम्हारी बगल में खड़े नज़र आएँगे।'

हबीबा बोला, 'मैं अपने बुजुर्गों से सलाह करूँगा और उनसे इजाज़त लूँगा। मेजर साहब, एक बात याद रहे। हम और हमारे कबीलों में जैसी भी हवा बहती है, हम उसकी खुशबू से ही मस्त हैं। हम पिछड़े हुए हैं तो भी अपने पिछड़ेपन में सकून महसूस करते हैं। आप तरक्कीपसन्द लोग हैं। अगर हमें आपकी तरक्की पसन्द आएगी तो हम खुद आपसे उसका जादू सीखने आगे बढ़ेंगे। आप तरक्की की मंजिल हमें दिखाने के बहाने हमारे इलाकों में कभी घुसने की जुरअत नहीं करेंगे। तवारीख ने चीख-चीख कर हमें अगाह किया है कि आप उस पाए के मेहमान हैं जो मेजबान के घर में आकर फिर वापस नहीं जाते।'

मेजर फायन हँसा।

'हबीब खां, हम जब भी मेहमान बनकर आएँगे तो आपकी सरहद पर ही दस्तरख्वान बिछा कर आपकी मेजबानी कबूल करेंगे और वहीं से वापस चले जाएँगे। आप के घर की तो क्या, आपकी सरहद तक की दहलीज तक नहीं आयेंगे। ये हमारी जुबान रही। खामादारी हम आपको अता करेंगे, उसके ऐवज में वफादारी की उम्मीद भी करेंगे।'

हबीबा ने हाथ मिलाया।

'इन्शाअल्लाह, हम दोनों ईद के बाद वाली जुमेरात को यहीं मिलेंगे। मैं अपने बुजुर्ग रहनुमाओं से उनके फैसले और शर्तें सुनकर आप को बता सकूँगा।'

इसके बाद दोनों के लश्कर मुड़ कर चल दिए।

गुलसमन नूरा की बांह को सेंक कर पट्टी बांध रही थी। हिलाल खां ने आकर सँवारा और कहा, 'बेटी, मैं सरदार तुर्रे खां के यहां जा रहा हूँ। शाम तक वापस आऊँगा।'

हिलाल खां अपनी औलाद को दिल पर पत्थर रख कर घर पर ले तो आए थे पर ये बात सिर्फ गुलसमन से करते थे। नूरा के जमीर ने अब तक कई हिचकोले खाए। गुलसमन उसकी शरीके ह्यात के अलावा एक बेबाक दोस्त भी थी। सरदार हिलाल खां ने आठ दस सरदार इकट्ठे करके अपनी हवेली के आंगन में ही नूरा और गुलसम का निकाह पढ़वाया था। नूरा हिलाल खां से आंख नहीं मिला पा रहा था। निकाह के बाद जब हि[illegible] खां ने नूरा के हाथ से छूटी तलवार गुलसमन को पकड़ा कर कहा, '[illegible] अपने कबीले की तलवार मैं तुम्हारे हाथों में सौंप रहा हूँ। [illegible] यह मैदान में छूटकर गिर गई थी। मुझे हार-जीत का [illegible] बात की चोट मेरे दिल पर नील डाल गई बेटी कि मेरे खून[illegible]

की पीठ पर निशाना बाँधा। काश, वह उसके सीने की तरफ निशाना बाँधता।'

गुलसमन ने दोनों हाथों में तलवार लेकर सँभाली थी। नूरा यह देख कर तड़प उठा था। उसके दिल से रफ्ता-रफ्ता सियाही के दाग मिटने लगे थे वह घंटों सोचता और फिर गुलसमन उसके टूटे दिल के टुकड़े बार-बार बीनकर जोड़ने की कोशिश करती। उसकी उदास मुस्कराहटों ने नूरा के दिल पर सच्चाई का साया डालना शुरू कर दिया और नूरा को अब अहसास होने लगा था कि उसके ज़मीर में एक नूर फट कर एक अजीब सकून की किरनें बनकर उसकी जिन्दगी के कोने-कोने में बिखेर रहा है। जब अपने किए पर इन्सान को पछतावा होने लगता है तभी वह खुदा की रहमत के काबिल बन पाता है। नूरा अकेले में कभी महजबीं से खयालों में माफ़ी माँगता तो कभी हबीबा से।

उस दिन जब बहुत अफ़सुर्दा होकर उसने गुलसमन से कहा, 'गुल, क्या मुझे महजबीं माफ़ कर सकेगी? क्या मैं कभी हबीबा की आँखों में झाँक कर उसका ऐतक़द पा सकूँगा।'

गुलसमन यह सुन कर बहुत खुश हुई थी। उसे लगा जैसे नूरा के दिल पर चढ़ी मैल की परतें जल्दी ही आँखों के रास्ते बह जाएँगी। वह हमेशा नूरा को गलती कबूल करने की हिम्मत जुटाने की बातें करतीं। नूरा उदास होकर बोला, 'अब्बा की नज़र में मैं इतना ज़लील बन चुका हूँ कि मुझे मुआफ़ी की कोई उम्मीद नज़र नहीं आती।'

गुलसमन ने उसके बालों में अँगुलियोंफेरतेहुए कहा, 'जिस दिन तुम्हारी नेकी बग़ावत कर उठेगी नूरा, उस दिन तुम गरूर का झूठा लबादा उतार फेंकोगे और तुम्हारे अल्फाज़ में कुरान शरीफ़ की आयतों की मिठास घुला जाएगी। उस दिन तुम्हेंये सब मुआफ़करने केअलावा अपने गले भी लग लेंगे।'

और आज हिलाल खाँ सिर्फ गुलसमन से बातें करके जब चले तो नूरा को अहसास हुआ जैसे कि उसके अब्बा हिलाल खाँ के गुस्से के अंदर एक बेजुबान दर्द बसा हो जिसे वे बतलाने की हिम्मत नहीं कर पा रहे हों।

हिलाल खाँ अपने कुछ आदमी लेकर सरदार तुर्रे खाँ के पास पहुँचे। तुर्रे खाँ ने बाँहें फैलाकर उन्हें सीने से लगाया। कुछ देर बैठ कर हिलाल खाँ

बोले, 'तुर्रे खाँ तुम शेर के मानिन्द हो, मगर तुम्हारा बेटा हबीब खाँ शेरे-बबर है। उरकजई की रूहे-खाँ है हबीब खाँ। मैंने तुम्हारे शेरे-बबर के लिए एक शेरनी तजवीज की है। मेरा मन्शा है कि तुम मेरे साथ चल कर उसके अब्बा से उसका हाथ हबीब खाँ के लिए माँगो।'

तुर्रे खाँ चौंककर बोले, 'हिलाल खाँ, मेरे बेटे पर तुम्हारा भी तो हक है। बोलो, किसके घर की चांदनी चुराकर तुम मेरे सहन में छिटकवाना चाहते हो?'

हिलाल खाँ बोले, 'गुलाब खाँ की बेटी महजबी जब तुम्हारे यहाँ आएगी तो उरकजई कबीले की किस्मत चमक उठेगी। मैंने गुलाब खाँ से जिक्र किया था। उसने जवाब दिया कि जिस दिन तुर्रे खाँ उसके दरवाजे पर आएगा उस दिन उसके यहाँ ईद का सा माहौल छा जाएगा।'

तुर्रे खाँ ने हबीब और महजबी की कशिश के किस्से सुन रखे थे। वे बोले, 'हिलाल खाँ, आनेवाली इस ईद को ही मैं तुम्हारे साथ हबीब को लेकर गुलाब खाँ के यहाँ चलूँगा।'

हिलाल खाँ की बाँछें खिल गई। हिलाल खाँ ने घोड़े की पीठ से दो थैलियाँ उतारीं। थैलियों में दो हजार रुपये थे जो चलते वक्त गुलचमन ने हिलाल खाँ को दिए थे।

'लो तुर्रे खाँ, तुम्हारे दो हजार मैं वापस कर रहा हूँ। मेरे बेटे नूरा के लिए मुझ से एक खूबसूरत झूठ बोल कर हबीब खाँ इन्हें दे गया था। बाद में मुझे पता चला कि ये रुपये तुमने अपने पास से दिए थे। तुर्रे खाँ, तुम्हारी दोस्ती पर मैं नाज करता रहूँगा'। तुर्रे खाँ को हिलाल खाँ ने अपने गले से लगा लिया।

'ईद के रोज तैयार रहना, दोस्त।' हिलाल खाँ चलते वक्त बोले थे।

ईद के रोज हिलाल खाँ, तुर्रे खाँ, हबीब खाँ और कुछ साथी युसुफजई की हद में घुसे थे। गुलाब खाँ ने बड़े इन्तजाम किए थे। चाँदी के कटोरों में जाफरान और सूखे मेवे से भरपूर फिरनी बनवाई थी। जब दस्तरख्वान बिछवाया तो लगा मानो किसी खामोश झील पर चाँदनी ने चाँदी की परत चढ़ा दी हो।

तुर्रे खाँ और गुलाव खाँ जब गले मिले तो आँखों में ठंडे आँसू तैरने लगे थे। गुलाव खाँ ने कहा था, 'तुर्रे खाँ, मेरी उस बात को माफ़ कर देना। वह एक जज्बात का अंधड़ था। हमारे बेटे हवीवा ने पठान कौम का सर ऊँचा उठाया है। ऐसा मेहमान पाकर मैं ख़ुशी से पागल सा होने लगता हूँ।'

तूर्रे खाँ हँसकर बोले, 'गुलाव खाँ, मुझे अफ़सोस के साथ कहना पड़ रहा है कि मैं तुम्हारे आँगन के चाँद को जल्द ही चुरा कर ले जाऊँगा।'

'ये चोरी तुम्हें मुबारिक हो तुर्रे खाँ', गुलाव खाँ बोले, 'हवीवा का महजवीं पर उसी दिन हक़ हो गया था जब उसने उसके भाई की जान बचाई थी। शेरों के बच्चे जब खेलते हैं तो खेल-खेल में खून बहने ही लगता है।'

हिलाल खाँ बोले, 'अगले पीर के दिन निकाह पढ़ा जाएगा गुलाब खाँ सब इन्तजाम रखना।'

सिमई और तरह-तरह के खाने खाकर वे रुख़सत हो गए।

अगले पीर के दिन निकाह पढ़ा गया और जब हवीबा उस घर का दुल्हा बनकर हवेली के अंदर गया तो महजवीं के रिश्तेदारों ने उसे सलामी दी। गुलफ़ाम हरेक को हवीवा से मिलाता जाता और वे रुपहली थैली और गिन्नियाँ दे देकर हवीवा का सलाम कबूल करते जाते। आखिरी कोने में गर्दन झुकाए कोई बैठा था। उसके पास बड़ी-बड़ी पलकें उठाये बड़ी उम्मीद से हवीवा को कोई देख रहा था।

हवीवा गुलसमन के पास आकर खड़ा हो गया। गुलसमन के मुरझाए ओठों पर एक मुस्कान फैल गई। हबीबा को लगा जैसे गुनहगारों पर खुदा ने रहमत बिखेर दी हो। गुलसमन ने चाँदी का शमादान पेश किया जिसमें फिरोजे जड़े थे।

'हवीब खाँ भाई, जब भी इसमें शमा फिरोजा होगी उसकी लरजती लौ में तुम्हें इस बदनसीब बहन की खामोश सदा सुनाई देगी।'

'नहीं गुलसमन बहन, इसकी लौ में मुझे हमेशा अँधेरे पर गालिब होने वाली मुकद्दस रोशनी दिखेगी जो मुझे ज़िन्दगी की मंज़िलों की सही राह दिखाया करेगी।'

बगल में बैठे नूरा की गर्दन झुकी की झुकी रही। हवीवा ने आकर नूरा के हाथ पकड़ लिए। उसके हाथों पर तभी दो गरम-गरम मोती नूरा

की आँखों से टपक पड़े।

'नूरा भाई यकीन मानो, जितने भी रिश्तेदारों ने मुझे सलामी के तोहफे दिए हैं, वे सब तुम्हारे इन दो मोतियों के आगे गर्द हैं। ये मोती जमीर के सीपी में पलकर कुदरत का नायाब तोहफा बन गए हैं। मैं इन्हें कबूल करता हूँ और तुम्हें अपना सगा भाई कबूल करता हूँ।'

नूरा की आँखों से सोते बह निकले। वह हबीबा से लिपटकर जार-जार रोया। रोते हुए बोला, 'मैं अपना तआरुफ कराना भूल गया हबीबा भाई। मैं महजबी बहन का बदगुमां भाई हूँ।'

हबीबा की आँखें भर आईं। 'तुम हम दोनों के भाई हो, नूरा भाई।'

हबीबा और नूरा के मिलन से माहौल पाक हो गया।

जब महजबी डोली में बैठकर कबीला छोड़ कर जाने लगी तो नूरा ने डोली उठाने बवन कंधा दिया। यह देखकर गुलमरान के चेहरे पर नूरानी तजल्ली फैल गई। दूर खड़े हिलाल खाँ की कठोर आँखें नम हो गईं। जब उन्होंने आँखें बचाकर आँख की कोर आस्तीन से पोंछी तो गुलाब खाँ ने उनके कंधे पर हाथ रख कर कहा, 'हिलाल खाँ खुशी के वक्त ये आँसू कैसे? देख नहीं रहे हो, एक महमदजादा आज यूसुफजई को शराफत की मात देकर जा रहा है। मैं इस शिकस्त को कबूल करता हूँ। आज से नूरा और गुलफाम में कोई फर्क नहीं रहा।'

तुर्रे खाँ ने तभी कहा, 'आमीन!'

हबीबा ने अंग्रेज अफसर मेजर कावन की बात सरदार तुर्रे खाँ के कानों में डाली थी। तुर्रे खाँ ने उसी वक्त कहा, 'ये ममता पूरी कौम का है बेटे। मेरा मशविरा है कि सब कबीलों में खबर भिजवा दी जाए। एक जिरगा किया जाए और उसमें फैसला हो। जिरगा सोई डाका के पास वाले मैदान में ठीक रहेगा क्योंकि यह जगह सब कबीलों का मरकज पड़ता है।'

हबीबा स्वयं एक-एक कबीलों के सरदारों से मिला और जिरगा होना भी

तय हो गया। लोई डक्का के मैदान पर अजीब समाँ था। चारों ओर कबीलों के ख़ेमे लग गए। चारों तरफ़ पठानों का समूह था। शाम को बड़ा खाना हुआ। चारों तरफ़ समूचे बकरे सिक रहे थे। मेवे, जाफरान और घी की खुशबू से माहौल तक के मुँह में बार-बार पानी आने लगा।

खाने के बाद एक बड़ा गोला बनाकर बुजुर्ग सरदार कुल्ले और साफ़े पहने बैठे। हुक्के घूमने लगे। खुशबूदार तम्बाकू के धुएँ सुरमई रंग की बदलियों की तरह छाने लगे। मसला पेश किया गया। अंग्रेजों की ख़ासेदारी कबूल की जाए या नहीं। बड़ी देर तक बहस-मुबाहिसे होते रहे। सरदारों के बड़े लड़के भी उनके पीछे बैठे थे। हबीबा ने खड़े होकर मेजर काक्रन की बात सब को फिर से बतलाई। काफ़ी देर बाद भित्तानी के सरदार कुहन दिल खाँ, जो उम्र में सबसे बड़े थे, बोले, 'सरदार बिरादरो, पिछले जिहाद की धूल बड़ी मुश्किल से बैठ पाई है। मेरा तजुर्बा है, पठानों में बहादुरी की कमी नहीं है। कमी है तो मैदानी फ़रेब की है, मैदानी निज़ाम की है। हार-जीत की लड़ाई शायद हम जम कर नहीं लड़ पाए, पर मौत की आँख-मिचौनी हम खेलना जानते हैं। मारो, लूटो, भागो का इल्म हमें आता है। हमारे दुश्मन इस चीज़ से डरते हैं। अब सवाल ये है कि हम ख़ासेदारी कबूल करें या नहीं। मेरे ख़्याल से ख़ासेदारी की रक़म हमारे हमलों की एवज़ में महज़ एक रिश्वत है। क्या हम अपने मुल्क की आज़ादी गिरवी रख दें? नहीं!'

हबीब खाँ बीच में सलाम करके खड़ा हो गया।

सरदार कुहन दिल खाँ मुस्करा कर बोले, 'तुम कुछ कहना चाहते हो मेरे बच्चे।'

हबीबा गला खँखार कर बोला, 'अब्बा हुज़ूर, अगर ख़ासेदारी का मक़सद हमारी आज़ादी और बेबाक़ी को ख़रीदना है तो हमें इसको ठुकरा देना चाहिए। अगर अंग्रेज हमारे हमलों के ग़ज़ब से तंग आकर हमारी दोस्ती ख़रीदना चाहते हैं तो इसमें कोई हर्ज नहीं है। उन्होंने कबूल किया है कि हमारी सरहद को वे किसी भी बहाने का सहारा लेकर नहीं लाँघेंगे। जिस दिन वह अपना इक़रार तोड़ने की जुरअत करेंगे हम तूफ़ान की तरह उन पर टूट पड़ेंगे। आप बुज़ुर्ग हमें रोशनी दिखाइए कि हम मुस्तकिल

है कि बच्चों का सरदार बनना हमारे बहादुर सरदार तुर्रे खाँ का बेटा हबीब खाँ कबूल करे।'

सब तरफ़ मुबारकबाद सुनाई देने लगा।

हबीबा खड़ा होकर बोला, 'बुजुर्गवार निगहबानो सुनिए, जो कुछ मैदानी हथकंडे मैं आप लोगों के तजुर्बे सुन-सुन कर जान पाया हूँ, उन्हें मैं अपने सब भाइयों को बताऊँगा। हरेक कबीले के सरदार का लड़का सरदार माना जाएगा। अगर कभी हम सबको इकट्ठा होकर लड़ने पर मजबूर होना पड़ा, तब हम सलाह करके ही फ़ैसला करेंगे। मैं अपने भाइयों का सरदार बनने के बजाय सिर्फ़ उनका सलाहकार दोस्त बन कर रहूँगा।'

सब तरफ़ लोग बोल उठे, 'आमीन। हमें अब भरोसा है कि पठान अब आपस की रंजिशों को निबटाने में अपना वक्त जाया नहीं करेंगे।'

जिरगे की रस्म के मुताबिक रात को चंग और डफ़ लेकर सब पठान मस्त होकर पश्तों में गाने लगे।

हबीबा ने चलते वक्त सरदारों से इल्तिजा की कि जुमेरात के दिन सब कबीलों के छोटे सरदार अपने-अपने साथियों के साथ दर्रे के नज़दीक मिलें जिससे ख़ासेदारी की बाबत अंग्रेजों से बातचीत सबके सामने हो सके।

हिलाल खाँ जब नूर खाँ को लेकर जिरगे में शिरकत करने चले गए, उसी शाम को एक घुड़सवार कबीले में घुसा था। हिलाल खाँ के दरवाजे पर आकर उसने दस्तक दी। गुलसमन ने आकर दरवाज़ा खोला तो एक औरत सवार को अपने सामने देखा।

'सलाम बानो', वह बोली, 'मैं गुलसमन बानो से मिलना चाहती हूँ।'

'कहिए, मैं ही गुलसमन हूँ,' गुलसमन ने जवाब दिया।

'मुझे सहरा कहते हैं', वह सहमती हुई बोली, 'मैं नसीर खाँ की बदन-

गीब बीवी हूँ जो आजकल आपके यहाँ कैद हैं। मैं एक हजार फिरौती के लाई हूँ।'

गुलसमन ने गौर से उसे देखा, 'गालिबन आपको मालूम होगा कि मेरे खाविन्द नूर खाँ और अब्बाजान बाहर गए हैं। नसीर खाँ को अब्बाजान अपने पास से एक हजार देकर लाए थे।'

'मुझे मालूम है बानो', सहरा बोली, 'इसी वजह से मैं यहाँ आई हूँ कि अपने खाविन्द को आपसे रहम की भीख माँग कर छुड़ा लाऊँ।'

'पर इसका फ़ैसला सिर्फ़ अब्बाजान ही कर सकते हैं', गुलसमन बोली।

'मैं यह सुनकर आई हूँ बानो', सहरा बोली, 'कि गुलसमन बानो का फ़ैसला सरदार हिकाल खाँ का ही फ़ैसला माना जाता है। मैं अपने बदगुमां खाविन्द के लिए आपसे रहम की भीख माँगने आई हूँ। मैं भी कोशिश करूँगी, बानो, कि अपने खाविन्द को आपकी तरह नेकचलन बना सकूँ। आप एक औरत ही नहीं हैं, बानो, आप बहुत-सी कमजोर औरतों के लिए महफ़िल के चिराग़ के मानिन्द भी हैं।'

गुलसमन लाजवाब हो गई। उसने एक हजार की थैली ले ली और घर के अंदर जाकर अहमद और शेर खाँ को साथ लेकर लौट आई।

'जाओ नसीर खाँ को तहखाने से यहाँ ले आओ', दृढ़ शब्दों में गुलसमन ने हुक्म दिया।

थोड़ी ही देर में मुरझाया हुआ नसीर खाँ आ गया। अपनी बीवी को देखकर वह बहुत शर्मिन्दा हुआ।

'मैंने तुम्हारी बीवी सहरा बानो से फिरौती कबूल कर ली है नसीर खाँ', गुलसमन बोली,' अल्लाह करे इनकी मुराद पूरी हो और ये तुम्हें सही रास्ते पर ले आने में कामयाब हो सकें। अपने अब्बाजान की रजा बगैर मैं नसीर खाँ को छोड़ रही हूँ।'

नसीर खाँ तिलमिला गया और बोला, 'जाने से पहले मैं आपकी देहलीज पर अपनी बीवी सहरा की अकीदत की कसम खाकर कहता हूँ कि मैं आज से किसी भी पठान की मुख़बिरी नहीं करूँगा। मैं अब फलों की दुकान ही करूँगा जिसके बारे में मैंने नूर खाँ को झूठ बुलवाया था। सरदार

हलाल खाँ जब भी पेशावर आएँ मुझे छावनी की मंडी में दुकान पर आएँगे। आपके दर पर मुख़्बिर नसीर खाँ मर चुका, वानो। आपके दर से अब एक बेचारा नसीर खाँ जा रहा है।'

गुलसमन ने आसमान की तरफ देखकर कहा, 'आमीन।'

सहरा नसीर खाँ को लेकर चल दी।

लौटने पर गुलसमन ने एक हज़ार की थैली हिलाल खाँ के आगे रख दी और कहा, 'अब्बा जान, एक हज़ार की फिरौती लेकर नसीर खाँ की मासूम बीवी आई थी। मैंने फिरौती कबूल करके उसे छोड़ दिया है। नसीर खाँ अपनी बीवी की क़सम हमारी दहलीज़ पर खाकर गया है कि आज से नसीर खाँ मुख़्बिर मर गया। अलबत्ता नसीर खाँ फलफ़रोश ज़रूर पेशावर की छावनी की मंडी में मिलेगा। मैंने आपसे बग़ैर इजाज़त लिए उसे उसकी बीवी को सौंप दिया है अब्बा जान।'

हिलाल खाँ ने गुलसमन के सर पर हाथ रखकर कहा, 'तेरा फ़ैसला कभी ग़लत नहीं हो सकता बेटी। मेरे भटके हुए बेटे को तूने इन्सान बना डाला। मुझे यक़ीन है कि वह मुख़्बिर भी ज़रूर इन्सान बनकर ही गया होगा।'

रुपयों की थैली उठाकर हिलाल खाँ ने गुलसमन के हाथों पर रख दी। 'इसे अपने ही पास रख ले बेटी,' वे बोले, 'तुझ पर खुदा के करम का साया है जो बद भी तेरी नेकनीयती की परछाई पड़ते ही नेक बन जाता है।'

जुमेरात से एक दिन पहले ईदू खाँ को गुलसमन ने हबीबा के पास था। ईदू ने हबीबा को जाकर बतलाया था कि महमंदों के कबीले के उनके छोटे सरदार नूर खाँ बग़ैर तलवार के आएँगे।

'क्यों'? हबीबा ने चौंककर पूछा।

'गुलसमन भाभी ने कहलवाया है कि जो तलवार नूर खाँ के

आपने गिराई थी, उसे हिलाल खां अब्बा जान ने गुलगमन को सौंप दी और ताकीद की कि वह कबीले की हिफाजत का जिम्मा कबूल करें।' हैदू सर झुकाकर बोला।

हुबीबा ने सुनकर 'हूं' कहा फिर बोला, 'गुलगमन बहन को बताना कि मैं कल आऊंगा।'

दूसरे दिन हुबीबा सरदार हिलाल खां के सामने सलाम करके खड़ा हो गया।

'कैसे आना हुआ बेटे?' हिलाल खां बोले।

'अब्बा जान, मैं आपसे कुछ मांगने आया हूं' हुबीबा बोला।

हिलाल खां अचरज में आकर बोले, 'क्या मांगने आए हो बेटे?'

हुबीबा सर उठाकर बोला, 'अब्बा जान, गुलगमन बहन को जो तलवार आपने दी है न, उसे मैं लेकर सरदार नूर खां की कमर में बांधना चाहता हूं।'

हिलाल खां बोले, 'क्या तुम समझते हो कि नूरा इस काबिल बन गया है?'

'जी हां अब्बा जान', हुबीबा बोला, 'नूरा भाई अब एक नेकदिल और इन्साफपसन्द सरदार हैं।'

हिलाल खां सुनकर अन्दर गए और गुलगमन से तलवार ले आए। नूरा को भी उसी दम बुलाया गया। हुबीबा ने तलवार लेकर नूरा की कमर में बांध दी और उससे बोला, 'नूरा भाई, हजरत मुहम्मद साहब की भी तलवार पर लिखा था कि ये शमशीर सिर्फ जालिम के ऊपर मजलूम की हिमायती बनकर उठा करेगी। मैंने अब्बा जान को बोल दिया है कि नूरा भाई भी इस तलवार को हक के लिए ही खोलेंगे। मेरी इज्जत तुम्हारे हाथों है, नूरा भाई।'

नूरा ने तलवार पर हाथ रखकर कहा, 'मैं कसम खाकर कहता हूं, हुबीबा भाई, कि तुम्हारी अमानत को मैं जी-जान से आबरू रखूंगा।'

हिलाल खां ऊपर हाथ उठाते हुए बोले, 'अल् हम्दो लिल्लाह! दोनों कबीलों के कौलो-करार की इज्जत रखना।'

उन्होंने आकर नूरा और हुबीबा दोनों को साथ-साथ अपनी बाहों में

भरते हुए कहा, 'तुम दोनों मेरी दोनों आँखें हो।'

चलते वक्त हबीबा नूरा से बोला था, 'कल ठीक वक्त पर अपने बहादुरों के साथ पहुँच जाना सरदार नूर खाँ।'

और फिर सरदार हिलाल खाँ को सलाम करके हबीबा ने अपने घोड़े को एड़ दे दी।

सुबह की हवा में एक अजीब खुशबू बसी हुई थी। महजबीं अँगड़ाई लेकर जब उठी तब करीब साढ़े चार बजे थे। उसने हबीबा को झकझोर कर जगाया।

'आज तुम्हें ख़ासेदारी कबूल करने जाना है', धीरे से वह बोली। हबीबा ने आँखें खोलकर महजबीं की ओर देखा। महजबीं संगमरमर की मूर्ति की तरह लग रही थी, फ़र्क इतना था कि उसके जिस्म से चमेली की कलियों जैसी खुशबू आ रही थी जो कि पत्थर से नहीं आती।

महजबीं ने उसके सर पर हाथ फेरते कहा, 'तुमने नूरा को दिल से भी मुआफ़ कर दिया है या सिर्फ ऊपर ही ऊपर से किया है।'

हबीबा उठता हुआ बोला, 'नहीं महजबीं, मैंने उसे दिल से माफ़ कर दिया है। उसके अब्बा हिलाल खाँ एक पठान हैं। उन्होंने अपने बेटे की जान लेने में भी कतई हिचकिचाहट नहीं दिखलाई। अगर मैं बीच में नहीं आता तो वह उसे यकीनन मार डालते।'

महजबीं धीरे से बोली, 'मैं गुलसमन बहन के अहसान नमाज की तरह दिन में एक बार दुहरा लेती हूँ। नूरा को रोशनी दिखाने में गुलसमन बहन और उसके अब्बा जान का हाथ है।'

हबीबा ने हँसकर कहा, 'मुआफ़ करना भी किसी इबादत से कम नहीं, महजबीं। मुआफ़ी में खुदा की आवाज़ छुपी होती है।'

महजबीं ने कहा, 'अब उठो। तुम्हें तैयार भी होना है।'

महजबीं ने जाते वक्त हबीबा को अपने हाथ से पगड़ी बाँधी थी।

हबीबा पठानों का विशाल दल लेकर दर्रे पर पहुँचा था। मेजर काउन भी अपने स्क्वाड्रन के साथ आया था। दोनों ने हाथ मिलाकर कागज पर दस्तखत किए।

हबीबा बोला, 'मेरे दस्तखत के अलावा इन सरदारों के भी दस्तखत होंगे, मेजर साहब। हम में कोई छोटा नहीं है और न ही कोई बड़ा। हाँ उम्र में मैं शायद सबसे थोड़ा-बहुत बड़ा होऊँ तो कह नहीं सकता।'

मेजर काउन बोला, 'हबीब खाँ, तुम मैदान में दुश्मन से जीतना तो जानते ही हो पर दोस्तों का दिल भी जीतना जानते हो। मेरा विश्वास है कि अब की बार जो तुम लोगों से इत्तहाद हुआ है वह कभी भी नहीं बिखर सकेगा।'

जाते वक्त मेजर काउन ने पचास हजार रुपये दिए थे जिन्हें हबीबा ने सब कबीलों के सरदारों को बराबर बाँट दिया।

मेजर काउन ने सब कबीलों के सरदारों को एक नई 'ली एनफील्ड' राइफल और दो-दो सौ गोलियाँ भेंट कीं। हबीबा को राइफल के अलावा मेजर काउन ने एक पैंतालीस बोर का नया रिवाल्वर दिया जिस पर सफेद पालिश चढ़ी हुई थी।

'यह रिवाल्वर चीफ कमिश्नर ने खास तौर पर तुमको भेंट में भेजा है। उन्होंने संदेशा भेजा है कि हबीब खाँ ने कमाण्डर साहब के हथियारों को न छूकर दोस्ती का हाथ बढ़ाया था। ऐसे बहादुर का खाली हाथ जाना जेब नहीं देता। इसलिए उन्होंने उस दिन की बहादुरी और दोस्ती की एवज में ये तोहफा खास तौर से आपके लिए भिजवाया है।'

हबीबा ने उसे लेकर अपने दिल से लगाया और कहा, 'उन्हें मेरा सलाम कहिएगा मेजर साहब और बतलाइएगा कि ये हथियार कभी आपके खिलाफ नहीं उठेंगे। हाँ, अगर हमारी आजादी के साथ खिलवाड़ किया गया तो पहले हम आपके हथियार आपको वापस कर देंगे और फिर हम अपने हथियार आपके खिलाफ उठाएँगे।'

मेजर काउन सर हिलाकर बोला, 'यकीन रखो हबीब खाँ, हम कभी तुम्हें शिकायत का मौका नहीं देंगे।'

सरहद के पठान ख़ासेदारी की जिम्मेदारी कबूल करते हुए लौट पड़े। उनके इस्तक़बाल को सब बुज़ुर्ग सरदार इकट्ठे होकर काबुल नदी के मोड़ पर इन्तज़ार कर रहे थे। दूर से घोड़ों की कतार और कंधे पर लटकी बंदूकों की नलियों को देखकर सरदार गुलाब खाँ बोले, 'हमारे बच्चों ने एक शाइस्ता शिकस्त दी है अंग्रेजों को। जो हम ज़िन्दगी भर न कर पाए वह इन्होंने कर दिखाया।'

सरदार कुहन दिल खाँ बोले, 'हरेक बाप अपनी ज़िन्दगी में एक मीठी शिकस्त खाने को तरसता रहता है। वह है अपने बेटे से शिकस्त खाना। जब उसका बेटा उससे बेहतर बनकर दिखलाता है तो बाप को शिकस्त में भी एक ग़रूर का अहसास होता है। शिकस्त में भी पिनहा फ़तह झलकती है।'

सरदार हिलाल खाँ ने कहा, 'आपने सच कहा सरदार! खुदा करे सफ़ेद कोह के इस पार हमेशा हबीबा जैसा आवारा सूरज उरूज और ग़रूब होता रहे।'

ज़का खेल के सरदार ने ऊँची आवाज़ में कहा, 'आमीन।'

सरहद के धुंधले सायों में हबीबा और उसके साथियों का झुंड बढ़ा चला आ रहा था। दूर से ऐसा लगता मानो अपना तेज फैलाता सूर्य अपने सौ घोड़ों के रथ को बड़े वेग से दौड़ाता आ रहा हो।

बुज़ुर्ग सरदारों ने ग़रूर से सर उठाकर अपने मुल्क के आवारा सूरज को देखा और फिर मुस्करा कर जैसे उसे अपने से बेहतर कबूल किया हो, उनकी आँखों में प्यार के मोती घुल गए।